लक्ष्य – वेध

सत्र

2019–20

(द्वितीय संस्करण–आकलन एवं उपचारात्मक शिक्षण हेतु)

शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय

शंकर नगर रायपुर, छत्तीसगढ़

सरंक्षण

श्रीमती जे. एक्का
प्राचार्य
(संयुक्त संचालक)
शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय
रायपुर

मार्गदर्शन

उत्पल कुमार चक्रवर्ती
डॉ डी.के बोदले
डॉ.डी.एन.पाणीग्रही

समन्वय

सुनील मिश्रा
श्रीमती लता मिश्रा,श्रीमती योगेश्वरी महाडिक
शान्तनु विश्वास, सतीश तिवारी

लेखन समूह

द्रोण साहू, शेषशुभ वैष्णव, रविनारायण त्रिपाठी, मनीष मिश्रा, श्रीमती मीनाक्षी राव, आर.के.जलतारे, गंगाधर साहू, धरेन्द्र कुमार रत्नाकर, श्रीमती ज्योति चाणक्य, प्रफुल्ल वर्मा, एन.के.साहू., के.आर.नेताम, अतुला वासु, शगुफ्ता सुलताना, विनय साहू, सुमित पाण्डेय, प्राची तिवारी, सुधाकर पाण्डेय, केदारनाथ पटेल, रेवाराम साहू, अश्वनी चंद्रा, मेघा ठाकरे, बरखारानी अग्रवाल, नेमसिंह कौशिक, तारकेश्वर देवांगन, उत्तम साहू, अंजुम खान, रितेश सेमल

विशेष सहयोग

विनोद गुप्ता, जितेन्द्र राठौर, तारकेश्वर साहू, प्रदीप पाण्डेय, सुरेन्द्र पटेल, ललित बिजौरा, लवकुमार साहू, ललित टिकरिहा

प्राक्कथन

शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय बी.एड.,एम.एड. के गुणवत्तायुक्त प्रशिक्षण के साथ–साथ प्रारंभिक एवं माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में बहुमुखी कार्यक्रम को लागू करने हेतु हमेशा से प्रयासरत रहा है। इन प्रयासों में – साझा पहल, बालिका शिक्षा, तृतीय लिंग समुदाय हेतु संवेदनशीलता पर प्रशिक्षण, लर्निंग कैम्प, जनपहल सूक्ष्म नियोजन तथा शैक्षिक वातावरण का चतुर्मुखी उन्नयन, ... इत्यादि प्रमुख हैं।

उपरोक्त सभी प्रयासों का एक ही मूल लक्ष्य है शिक्षा में गुणवत्ता। शैक्षिक गुणवत्ता के इस महत्वाकांक्षी लक्ष्य की प्राप्ति के महत्वपूर्ण एवं प्रमुखतम दायित्व को भली–भांति अनुभव करते हुए महाविद्यालय ने उक्त सभी क्षेत्रों में समय–समय पर विभिन्न कार्यक्रमों को सुनियोजित किया और पूरी शक्ति से उसकी सफलता को सुनिश्चत करने का प्रयास किया। 1996 में यूनेस्को को प्रस्तुत डेलर कमीशन की रिपोर्ट में तर्क प्रस्तुत किया गया था कि जीवन भर की शिक्षा चार स्तम्भों पर आधारित है :– 1. जानने के लिए सीखना–यह सीखना कि सीखते कैसे हैं, ताकि जिन्दगी भर शिक्षा द्वारा मिलने वाले अवसरों का लाभ उठाया जा सके । 2. करने के लिए सीखना – न केवल व्यावसायिक कौशल प्राप्त करना बल्कि नई परिस्थितियों और व्यावहारिक जीवन की विभिन्न चुनौतियों से निपटने में सक्षम बनने के लिए सीखना । 3. साथ रहने के लिए सीखना – अन्य लोगों की समझ विकसित करना और अनेकतावाद के मूल्यों को समझने के लिए सीखना । 4. होने के लिए सीखना– किसी के व्यक्तित्व को विकसीत करना और स्वायत्तता तथा व्यक्तिगत जिम्मेदारी के साथ कार्य करने में सक्षम होने के लिये सीखना।

जिस तरह प्रत्येक मानव अपने जीवन में सफल होना चाहता है उसी तरह एक शिक्षक भी अपनी कक्षा के शत प्रतिशत बच्चों को सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में सम्मिलित करने हेतु निरंतर प्रयास करता रहता है। यह संदर्शिका उसी लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु तैयार की गई है । यही कारण है कि इस संदर्शिका का नाम 'लक्ष्य–वेध' रखा गया है।

संदर्शिका में कक्षा–कक्ष के भीतर सिखाने के तरीकों में व्यापक परिवर्तन हेतु 6 शैक्षिक तरीके (बिना किसी खर्च के कक्षा में किये जा सकने वाले) दिए गये है। इन 6 शैक्षिक प्रक्रियाओं को अपना कर शत प्रतिशत बच्चों को सीखने–सिखाने की प्रक्रिया से जोड़ने के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। इन 6 तरीकों पर शिक्षकों का एक दिवसीय प्रशिक्षण करने हेतु यह 'लक्ष्य–वेध' संदर्शिका तैयार की गई है।

यह 'लक्ष्य–वेध' संदर्शिका द्वितीय संस्करण उपचारात्मक शिक्षण के लिये शिक्षकों को समर्पित करते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है। मुझे पूरा विश्वास है कि हमारे शिक्षक पूरे उत्साह और विश्वास के साथ इस प्रशिक्षण में अपनी महत्वपूर्ण भागीदारी देंगे और शिक्षा के क्षेत्र में ऐतिहासिक उपलब्धि प्राप्त करने की ओर अग्रसर होंगे।

शुभकामनाओं सहित.....

श्रीमती जे.एक्का
प्राचार्य
शास शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय
रायपुर (छ.ग.)

शिक्षकों से.....

प्रिय साथियो,

यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि हम सब भविष्य के नागरिक बनाने के कार्य में लगे हुए हैं। साथ ही अपने मन–मस्तिष्क को इस वैचारिक स्तर पर पहुंचाने की कोशिश भी कर रहे हैं कि हर बच्चा सीख सकता है और प्रत्येक शिक्षक सिखा सकता है। यह भी एक सुखद अनुभूति है।

इसी परिप्रेक्ष्य में हमें इजराइल के लेखक एवं दार्शनिक यूवल नोह हरारी की बात याद आती है। उन्होंने अपनी किताब 21 Lessons for 21 Century में लिखा है कि वर्तमान में टेक्नोलॉजी में बहुत तेजी से परिवर्तन हो रहा है और इसी के कारण आने वाले 10 सालों में अभी के लगभग 40 प्रतिषत नौकरियां (जॉब) समाप्त हो जायेंगी। इस 40 प्रतिषत नौकरियों की जगह कौन सी नई नौकरियां लेंगी, इसके बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता। यहॉ मुद्दा यह है कि जब हम आने वाले 10 साल का पूर्वानुमान नही लगा पा रहे हैं तो फिर 30 सालों के बाद के बाजार की आवश्यकता को कैसे समझ सकतें हैं ? इसमें मजेदार बात यह है कि हम भविष्य की परिस्थितियों का अनुमान लगाये बगैर अपने बच्चों के भविष्य को तैयार करने में लगे हुए हैं।

यदि आप यूट्यूब पर जाकर वाबलेबाड़ी अंतरराष्ट्रीय स्कूल सर्च करेंगे तो आपको पता चलेगा कि उस सरकारी स्कूल के कक्षा पांच के बच्चे बिना किसी शिक्षक की मदद लिए रोबोट बनाते हैं, कंप्यूटर प्रोग्रामिंग करते हैं और 10 से 11 देश व विदेश की भाषाएँ सीख रहे हैं। वहां यह सब इसलिए संभव हुआ है क्योंकि वहां के शिक्षकों ने 21वीं सदी की चुनौतियों के लिए बच्चों के सीखने की क्षमता पर भरोसा जताया और सबसे बड़ी बात उन्हें ''सीखना कैसे है?'' यह सिखाया।

कुल मिलाकर निष्कर्ष यह है कि यदि हम बच्चों को ''क्या सीखना है ?'' यही बताते रहे तो बच्चा जो भी सीखेगा वह भविष्य में कुछ समय बाद कालातीत हो जाएगा। पर हम उन्हें ''सीखते कैसे हैं?'' यह सिखा देंगे तो वे भावी परिस्थितियों के समझ अनुरुप नई बातें सीखकर चुनौतियों का सामना करने के लिये तैयार होंगें। इसीलिए यह आवश्यक है कि अब हम ''शिक्षक सिखाएगा तो बच्चे सीखेंगे'' की धारणा से निकलकर बच्चों के सीखने का नेतृत्व, प्रबंधन और नियोजन में बच्चों की भूमिका सुनिश्चित करने की ओर अग्रसर हों। अपने आप को नेतृत्वकर्ता, सुविधादाता एवं कुशल नियोजक की भूमिका में देखें, तभी हमारे बच्चे 21वीं सदी के लिए एक सदुल नागरिक के रूप में तैयार हो पाएंगे।

इसी आशा एवं विश्वास के साथ.....

यू. के. चक्रवर्ती
डॉ. डी. के. बोदले
सहायक प्राध्यापक
शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय
शंकरनगर, रायपुर छ.ग.

प्राक्कथन
(द्वितीय संस्करण)

साथियों नमस्कार,

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही हम बच्चों में उनकी मूलभूत दक्षताओं को विकसित करने का प्रयास कर रहे हैं। परंतु आज पर्यंत हम अपने 100 प्रतिशत बच्चों को निश्चित गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने के लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सके हैं।

इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हमारे शिक्षक निरंतर प्रयास भी कर रहे हैं। इसी प्रयास को और गति देने के लिए इस संदर्शिका का निर्माण किया गया है। इसके लिए हमें दो–तीन मुख्य बिंदुओं पर ध्यान देने की आवश्यकता है–

1. बच्चे क्या सीखगा कैसे सीखेगा यह निर्णय तभी लिया जा सकता है जब हमें पता हो कि बच्चे को क्या आता है। यदि यह जानकारी शिक्षक के पास है, पर यदि उन्हें नहीं पता है तो इसके लिए (प्रथम संस्था) बच्चे के पठन स्तर की जानकारी हासिल करने की आवश्यकता होती है।
2. पठन स्तर की इस जानकारी हेतु प्रथम संस्था द्वारा चार स्तर बनाए गए हैं, परन्तु इस माड्यूल मे 5 स्तर प्रस्तावित किए गए है –
   I. वर्ण स्तर पर
   II. मात्रा स्तर पर
   III. शब्द स्तर पर
   IV. वाक्य स्तर पर
   V. अनुच्छेद स्तर पर
3. जब हमें बच्चों के विभिन्न स्तरों की जानकारी हो जाएगी तब हमें उनके स्तर के अनुरुप शिक्षण उपचारात्मक शिक्षक करते हुए सभी बच्चों को क्रमशः से अनुच्छेद स्तर पर लाना हमारा लक्ष्य होगा।

अब बात आती है कि इस एक माह में हम क्या करें जिससे सभी बच्चे अनुच्छेद स्तर पर आ सकें। यह संदर्शिका हमें स्तर वार शिक्षक अधिगम प्रक्रिया को समझने में मदद करेगी।

इस संदर्शिका में हमने बच्चों के स्तर के अनुरुप भाषा की अलग–अलग एवं रोचक गतिविधियों का समावेश किया है, जिससे बच्चे बिना किसी बोझ या बोझिलता महसूस किए अनुच्छेद स्तर तक पहुँच सकें। बच्चे जैसे–जैसे इन खेल गतिविधियों को करते जाएँगे तो अनजाने में ही पढ़ने में शामिल छोटे–छोटे उपकौशलों को सीख रहे होंगे।

बच्चों के पठन स्तर की जानकारी प्राप्त करते समय हमें यह ध्यान में रखना होगा कि हम उन्हें प्रत्येक गतिविधि को चुनौती के रुप में दें, काम या गतिविधि के रुप में नहीं। इससे यह होगा कि बच्चे चुनौती को स्वीकार करेंगे, वे उसे थोपे गए काम के रुप में नहीं लेंगे। इससे उनमें उत्साह व चुनौती को पूरी करने की धुन सवार रहेगी और नीरसता या बोझिलता के लिए कोई जगह नहीं होगी। (काम व चुनौती में फर्क संदर्शिका में ही दिया गया है, उसे ध्यान से पढ़ लें।)

हमें यह ध्यान रखना है कि इन गतिविधियों को बच्चों के साथ करते समय कुछ बच्चे नहीं कर पाएँगे, क्योंकि सभी बच्चों के सीखने की गति एक समान नहीं होती। यहीं पर हमें विषय मित्रों का सहयोग लेना होगा। हमें विषय–मित्रों को यह जिम्मेदारी देनी होगी कि वे अपने साथी को उक्त गतिविधि को पूरा करने में मदद करें। दूसरे शब्दों में कहें तो हमें विषय मित्रों के समक्ष यह चुनौती रखनी होगी कि वे अपने साथी से इस गतिविधि को कितने समय में पूरा करवा सकते हैं।

बच्चों के पठन स्तर की जानकारी प्राप्त करने के बाद जब हम उनके स्तर के अनुसार गतिविधियों पर काम शूरु करें, तो हमें कुछ मूलभूत बातों को ध्यान में रखना होगा–

1. इस पूरी गतिविधि में हमें अंतरराष्ट्रीय स्तर की शिक्षा के छह बिंदुओं को केन्द्र में रखना होगा।

   उदाहरण के लिए यदि कोई बच्चा वर्ण स्तर पर है, तो उसके साथ गतिविधि करते समय हमें यह ध्यान में रखना होगा कि उस बच्चे को अधिक से अधिक गतिविधि करने का अवसर मिले। निर्धारित गतिविधियों को एक चुनौती के रुप में प्रस्तुत करें। किसी गतिविधि को यदि उसे करने में कोई कठिनाई का अनुभव हो रहा हो तो उसके लिए विषय मित्र हमेशा तैयार रखें, ताकि वह बच्चा गतिविधियों के प्रति अरुचि महसूस न करे।
2. विषय मित्र ऐसे हों जो उन बच्चों के साथ शिक्षक की भांति व्यवहार न करें, बल्कि एक साथी की तरह उन गतिविधियों को उनके साथ करें एवं अपने साथी को इन्हें करने हेतु प्रोत्साहित करे।
3. उपरोक्त यही सभी बातें शब्द, वाक्य एवं अनुच्छेद स्तर के बच्चों के साथ भी लागू होंगी।
4. चूँकि हम ये सभी गतिविधियॉ सत्र के अंतिम माह (मार्च–अप्रैल) में करवाएँगे तो जाहिर है कि उनके साथ हमारे शिक्षक साथी मौखिक भाषा विकास एवं ध्वनि जागरूकता की बहुत सी गतिविधियाँ करवा चूके होगें, इसलिये यहॉ पर बच्चों की डिकोडिंग क्षमता से लेकर धारा प्रवाह पठन क्षमता संबंधी गतिविधियों मुख्यतः उपचारात्मक होगी।

हमारी यह संदर्शिका हमारे उन शिक्षक साथियों को ध्यान में रखकर तैयार की गई है, जो यह समझते हैं कि "मेरे अथक परिश्रम के बावजूद मेरे बच्चे के पठन स्तर में अपेक्षित सुधार नहीं दिख रहा है," तथा वे "जो बच्चों के पठन स्तर को सुधारने के लिए कुछ नया और अच्छा करने के लिए छटपटा रहे हैं"। ऐसे ही कर्मठ और लगनशील शिक्षकों के हाथ में यह संदर्शिका समर्पित है।

हमें विश्वास है कि हमारे सभी शिक्षक इस संदर्शिका की गतिविधियों को करवाकर एवं एंसे ही कई गतिविधियाँ बनाकर हमारे लक्ष्य को अवश्य ही प्राप्त करेंगे।

इन्हीं आशाओं एवं शुभकामनाओं के साथ

टीम–सी.टी.ई.
शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय
शंकर नगर रायपुर

अनुक्रमणिका

स.क्रं.	विषय वस्तु	पृ.क्रं.
1	अध्याय एक– मूल्यांकनः एक दृष्टिकोण	1 से 2
2	अध्याय दो – काम के चरण या प्राथमिकताएँ	3
3	अध्याय तीन – उच्च गुणवत्ता वाले विद्यालय के लिये गतिविधियॉ	4 से 5
4	अध्याय चार – उच्च स्तर की गुणवत्ता की शिक्षा के 6 नुस्खें	6 से 21
5	अध्याय पॉच – व्हॉटसएप/टेलीग्राम ग्रुप का निर्माण	22 से 23
6	अध्याय छह – चुनौती निर्माण में रुब्रिक्स	24 से 25
7	अध्याय सात – प्रशिक्षण की कार्य योजना	26 से 27
8	परिशिष्ट –1. चुनौतियों की सूची	28 से 32
9	परिशिष्ट –2. अनुभवों की श्रृंखला	33 से 43
10	पढ़ने की जाँच	44 से 47
11	परिशिष्ट–3. उपचारात्मक शिक्षण की गतिविधियाँ	48 से 80

अध्याय – एक
मूल्यांकनः एक दृष्टिकोण

हमारे देश में बच्चों की उपलब्धि को मापने हेतु दो संस्थाएँ काम करती है। प्रथम का ASER और एनसीईआरटी का NAS। ये दोनो संस्थाएँ राष्ट्रीय स्तर पर मूल्यांकन का कार्य करती है। पर क्या आपने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के मूल्याकंन के बारे में सुना है ? अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी एक मूल्याकंन किया जाता है। जिसे PISA (Programme for International Student Assesment) के नाम से जाना जाता है। आइए इसे इस तरह से समझते है ।

ASER (Annual Status of Education Report) यह एक बुनियादी अवधारणा का मूल्यांकन है, जो प्रथम नाम की संस्था द्वारा किया जाता है। जिसमें बच्चों के पढ़ने और गणित के संबंध में अंक–ज्ञान और संख्या पर बुनियादी संक्रियाएं (जोड़, घटाव, गुणा करना और भाग) करने की क्षमता देखी जाती है। आपकी कक्षा में भी छात्रों को पढ़ना, लिखना और संख्यात्मक गतिविधि करने की समस्याएँ रहती हैं। ASER रिपोर्ट के अनुसार ऐसी समस्या वाले छात्रों की संख्या बहुत बड़ी है।

मूल्यांकन का दूसरा स्तर NAS (National Achievement Survey) है। NAS मूल्यांकन में बच्चों के वर्ग–वार और विषय–वार सीखने के परिणामों को देखा जाता है। PISA एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर की मूल्यांकन प्रक्रिया है। OECD (Organization of Economic Cooperation and Development), दुनिया के विकसित देशों के एक समूह, ने मिलकर PISA (Programme for International Students Assessment) विकसित किया है। यह परीक्षा 1999 से शुरू हुई है। इसमें गणित, विज्ञान और पढ़ने में छात्रों का मूल्यांकन किया जाता है। PISA का उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किसी व्यक्ति को विकसित करना, विश्व के किसी भी देश में आरामदायक जीवन यापन करने लायक बनना, ऐसे विकसित व्यक्तियों को वैश्विक स्तर पर तैयार करना है, इसके लिए PISA 21 वीं शताब्दी के कौशल (6-C Critical Thinking, Creative Thinking, Collaboration, Communication Skill, Compassion and Confindence) की अपेक्षा करता है। PISA में 6 Cs skills का मूल्यांकन Reading, mathemetics and science knowledge & skils विषयों के माध्यम से किया जाता है।

इस प्रकार मूल्यांकन के तीन स्तर हैं। ASER, NAS और PISA। PISA 15 वर्ष उम्र के बच्चों के लिए आयोजित की जाती है। लेकिन प्रत्येक कक्षा में बच्चों को PISA या भविष्य के लिए तैयार किया जा सकता है। इसे पहली कक्षा से भी शुरू किया जा सकता है। जब PISA की बात आती है तो भारत की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। 2009 में, भारत में कुछ राज्यों के स्कूल PISA की परीक्षा में बैठे थे। कुल 74 देशों में से भारत 73 वें स्थान पर रहा। तब से हमारा देश PISA में शामिल नहीं हुआ। लेकिन विश्व बैंक की मदद से, भारत के कुछ स्कूलों को 2021 में PISA के लिए तैयार किया जाएगा। इससे हमको PISA में हमारे देश की स्थिति को समझने में मदद मिलेगी।

सत्र 2018–19 से एससीईआरटी छत्तीसगढ़ ने भी कक्षागत प्रक्रियाओं में सुधार करते हुए शिक्षकों की क्षमता का सतत् विकास करने के लिए ''एक राज्य–एक मूल्याकंन'' की तर्ज पर SLA (State Level Assesment) राज्य स्तरीय आकलन लागू किया है ।

S.L.A. (राज्य स्तरीय आकलन) की निम्नांकित विशेषताएँ हैं :–

1. S.L.A. का प्रत्येक प्रश्न एनसीईआरटी द्वारा निर्धारित लर्निंग आउटकम्स से जोडकर करके बनाया गया है ।
2. प्रश्नों में ऐसे बदलाव किए गए हैं, जिससे बच्चों में तर्क क्षमता, चिंतनशीलता तथा सृजनात्मकता जैसे उच्च स्तर के कौशलों का विकास हो सके।
3. S.L.A. के प्रश्न केवल पाठ्य पुस्तक पर आधारित न होकर पाठ से बाहर की चुनौतियों पर केन्द्रित हैं ताकि बच्चा कक्षा के बाहर अपने जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना करने योग्य बन सके।
4. मूल्यांकन का वास्तविक उद्देश्य बच्चों के स्तर का ही पता लगाना नहीं होता बल्कि उनके स्तर का पता लगाकर उन कमियों के लिए उपाय भी तलाशने होतें हैं। SCERT भी कम उपलब्धि वालें लर्निंग आउटकम्स का चिन्हांकन करके उस पर NCERT के प्रशिक्षण योजना पर काम कर रही है । इस तरह से देखा जाए तो S.L.A. राज्य स्तरीय आकलन राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की चुनौतियों की ओर बढ़ाया गया एक कदम है।

अध्याय दो
काम के चरण या प्राथमिकताएँ

जब हम किसी उच्च उपलब्धि वाले स्कूल को देखते है। तो हमारे मन में भी ऐसा ही अपने स्कूल को भी बनाने की तीव्र भावना उत्पन्न होती है, और उसी तीव्र भावना के साथ वापस आकर अपने स्कूल में हम भी काम शुरू कर देते हैं। परन्तु हमें वैसी सफलता नहीं मिलती, जैसी हमारी अपेक्षा होती है। कुछ समय बाद हम इस तरह शिकायत करने लगते है कि मेरी बहुत इच्छा है पर लोग साथ नहीं देते। उस गॉव के पालक बहुत जागरूक है पर मेंरे गॉव के पालक नहीं । इस तरह के हम कई कारण गिनाने लगतें है। इस प्रकार हमारा उत्साह भी धीरे–धीरे खत्म हो जाता है, और हम पुनः उसी स्थिति में पहुच जाते हैं। जहां से हम चले थे।

आइए सोचें, ऐसा क्यों होता है ?

ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि हमारे कार्य करने का या काम चुनने की प्राथमिकता में गलती होती है। क्योंकि किसी भी कार्य को करते समय या एक उच्च गुणवत्ता वाले विद्यालय की स्थापना करने के लिये आगे बढ़ने का निश्चित क्रम होता है। यदि आप पहले चरण से गुजरे बिना अगले चरण पर जाने की कोशिश करते हैं, तो दुर्घटना की संभावना अधिक होती है। एक बार दुर्घटना होने पर, वापस की हिम्मत नहीं होती है। ऐसे समय में एक एक चरण पार करते गये तो असंभव लगने वाले लक्ष्यों को प्राप्त करना भी संभव हो जाता है। एक उच्च उपलब्धि वाले स्कूल का दौरा करते समय या उसके बाद, कई चीजों की एक सूची है जो आप करना चाहते हैं। मान लीजिए कि उस स्कूल से आने के बाद हम उन 100 चीजों को सूची तैयार कर लेते हैं जो की जा सकती हैं, तो हमें उस सूची में से कौन से काम कब करना है और कौन सा पहले करना है यह तय करना आना चाहिए। अक्सर हम भौतिक सुविधाएँ बढ़ाने की ओर अधिक ध्यान देते हैं जिसके लिए समुदाय की भागीदारी, वित्तीय निवेश या शासन के मदद की बहुत आवश्यकता होती है। सही प्राथमिकताएँ निर्धारित करके, अपेक्षित सफलता प्राप्त की जा सकता हैं।

इसके चार चरण हैं :–

1. स्वयं – वे सभी कार्य जो आप स्वयं बिना किसी की मदद के कर सकतें है। यह किसी भी शिक्षक के द्वारा बिना किसी खर्च के किया जा सकता है । यहाँ स्वयं से तात्पर्य शिक्षक एवं बच्चों से हैं।

2. स्वयं+समुदाय – वे सभी कार्य जो आप समुदाय (समुदाय में आपका स्टाफ भी शामिल है) के साथ मिलकर कर सकतें है। (इस चरण में समुदाय से केवल शैक्षिक सहयोग की अपेक्षा करें)

3. स्वयं+समुदाय+भौतिक संसाधन – इस चरण में समुदाय स्वयं आपके कार्यो को देखकर आगे आता है और भौतिक संसाधनों की व्यवस्था करना शुरू कर देता है ।

4. स्वयं+समुदाय+भौतिक संसाधन+प्रशासन – जब स्कूल के किसी काम में समुदाय आगे आना शुरू करता है उसकी भागीदारी सुनिश्चीत होने लगती है। तब प्रशासन का ध्यान उस ओर बरबस ही जाना शुरू हो जाता है। और वह भी सहयोग करने का प्रयास करता है। उसके बाद हमारा स्कूल एक उच्च उपलब्धि वाले स्कूल बनने की ओर बढ़ने लगता है।

एक बार जब आप अपने दम पर काम करना शुरू कर देते हैं, तो सफलता मिलने लगती है। एक बार सफलता मिलने लगी तो काम की गति और उपलब्धि दोनों बढ़ जातीं हैं।

अध्याय तीन

उच्च उपलब्धि वाले विद्यालय के लिए गतिविधियाँ

अब एक उच्च उपलब्धि वाले विद्यालय तैयार करने में हमारे समक्ष दो चुनौतियां है :–

पहली चुनौती हमारी कक्षा से बच्चों को लर्निंग आउटकॅम्स के स्तर तक पहुॅचाना।

दूसरी चुनौती लर्निंग आउटकम्स के स्तर के बच्चों को 6 'सी' के अनुसार तैयार करना। इन दोनों चुनौतियों को पूरा करने के लिये इन 17 बिंदुओं पर काम करने की आवश्यकता होगी। ये 17 बिंदु निम्नानुसार हैं :–

1. बच्चों को स्वयं सीखने के लिए प्रेरित करें।
2. बच्चों को अधिक सीखने के लिए चुनौती दें।
3. कुछ बच्चे आगे निकल जाएंगे और कुछ पीछे रह जाएंगे। विषय–मित्र (साथी से सीखना) बनाकर सभी को आगे बढ़ाएं।
4. उपरोक्त प्रक्रिया से सीखने की गति बढ़ जाती है इसलिए सिलेबस एक तिहाई समय में पूरा करने की योजना बनाएं।
5. बच्चों के जिज्ञासु रवैये का सम्मान करें। उन्हे प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करें तथा उनका उत्तर भी खोजने के लिए प्रेरित करें।
6. अभिभावक के मोबाइल के उपयोग से टेक्नोलॉजी द्वारा सीखने की गति बढ़ाएं।
7. अगली कक्षा के पाठ्यक्रम को सीखने का अवसर प्रदान करें।
8. विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी कराएं।
9. अंग्रेजी सीखने हेतु वातावरण निर्मित करना।
10. सिलेबस को जल्दी पूरा करने के बाद उपलब्ध समय का उपयोग सिलेबस के बाहर की जीवन से आवश्यक बातें सीखने के लिए करें।
11. भविष्य की कौशलों के बारे में जानने के अवसर प्रदान करें।
12. जीवन जी कर' पर्यावरण के बारे में सिखाएं।
13. अन्य भाषाओं को सीखने के अवसर प्रदान करें।
14. ग्रामीण स्कूल हो तो शहरी, शहरी स्कूल हो तो ग्रामीण और अन्य देशों के स्कूलों के साथ साझेदारी करें।
15. बच्चों के लिए विविध खेल खेलने के अवसर प्रदान करें।
16. संगीत, नाटक और विभिन्न कलाओं को सीखने और व्यक्त करने के अवसर प्रदान करें।
17. अध्ययन और अध्यापन प्रक्रिया को Howard Gardner के बहु बुद्धिमत्ता के सिद्धांत के परिप्रेक्ष्य में समझें।

ध्यान देने की बात है कि इसमें यहाँ बुनियादी ढांचा में परिवर्तन की आवश्यकता नहीं है। केवल शिक्षण–अधिगम की प्रक्रिया बदलना और टेक्नोलॉजी का उपयोग काफी है।

आपके काम की शुरुआत इन 17 में से सबसे सरल शुरू के छः बिंदुओं से होने वाली है। अर्थातः

1. बच्चों को स्वयं सीखने के लिए प्रेरित करें।

2. बच्चों को अधिक सीखने के लिए चुनौती दें।

3. कुछ बच्चे आगे निकल सकते है और कुछ पीछे रह सकते हैं। इन परिस्थितियों में आवश्यकता अनुरूप शैक्षणिक हस्तक्षेप यथा साथी से सीखना (Peer Learning), समूह से सीखना, विषय–मित्र बनाकर सभी को आगे बढ़ाएँ।

4. उपरोक्त प्रक्रिया में सीखने की गति बच्चे तय करते है इसलिए सिलेबस एक तिहाई समय में पूरा करने की योजना बच्चों के साथ बनाएं।

5. बच्चों के जिज्ञासु रवैये का सम्मान करें। उन्हे प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करें तथा उनका उत्तर भी खोजने के लिए प्रेरित करें।

6. अभिभावक के मोबाइल के उपयोग से टेक्नोलॉजी द्वारा सीखने की गति बढ़ाएं।

–: बच्चों की जरुरतें :–

(1) प्यार व सुरक्षा की जरुरत

(2) नये अनुभवों की जरुरत

(3) सराहना व पहचान की जरुरत

(4) चुनौती और जिम्मेदारी की जरुरत

अध्याय चार
उच्च गुणवत्ता स्तर की शिक्षा के छह नुस्खे
कक्षा में सीखने की प्रकिया में बदलाव के लिये

नुस्खा नं. 1
बच्चों को खुद सीखने के लिए प्रेरित करें

बच्चे को खुद से सीखने के लिए प्रेरित करने की कुंजी इस सिद्धांत पर विश्वास करना है कि बच्चा खुद सीख सकता है। एक बच्चा बिना शिक्षक के सिखाये सीख सकता है यह शिक्षकों और समुदाय के लिए वर्तमान में विश्वास करना कठिन होता जा रहा है। बच्चे ने स्कूल आने से पहले कई बातें सीखी हैं। बच्चों को कई ऐसी चीजें आती हैं जो स्कूल में नहीं सिखाई जाती हैं। इसका मतलब यह है बच्चा खुद से सीखता है, शिक्षक की भूमिका बच्चे को सीखने के लिए केवल प्रेरित करना है। बच्चों को भविष्य के लिए तैयार होना है, लेकिन भविष्य कैसा होगा यह शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों को यह नहीं पता है। ऐसे समय में, बच्चों के लिए खुद सीखना अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। इसीलिए सीखने का मतलब learning to learn है।

यह स्वीकार करने के बाद कि बच्चा खुद से सीखता है, सीखना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है यह समझ में आता है, न केवल बच्चे के लिए बल्कि दूसरों के लिए भी।

बच्चों की सीखने की प्राकृतिक प्रक्रियाओं में हस्तक्षेप न होने दें, एक मार्गदर्शक के रूप में यह हमारी जिम्मेदारी है।

यदि आप अपने बच्चों से पूछते हैं कि आप खुद से कब सीखना चाहते हैं? इन सवालों के जवाब से बच्चों को जानने की कोशिश करने के साथ–साथ उन्हें खुद को सीखने के लिए प्रेरित करने में मदद करने में भी उपयोगी होगा।

मेरा अनुभव

शिक्षक – आर.के. जलतारे
शासकीय कन्या पूर्व माध्यमिक शाला नवागढ़
जिला जांजगीर चांपा छत्तीसगढ़

हम कक्षा 6 7 8 में लगातार गणित विषय में काम कर रहे हैं पहले जब हम किसी पाठ को समझाना रहता था तो पहले दो चार उदाहरण देते थे फिर प्रश्नावली को बनाने के लिए कहते थे इस प्रक्रिया में जो पहले से अपेक्षाकृत होशियार बच्चे को आगे निकलते थे पर कमजोर बच्चे छूट जाते थे और अपने आप को कमजोर मानने लगते थे परंतु अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा पद्धति का शुरुआती ज्ञान हुआ तो किसी पाठ को अब बच्चों को स्वयं से सीखने के लिए प्रेरित करते हैं बच्चा रिक्वेस्ट भी करते हैं कि पहले एक दो प्रश्न बताइए उनको फिर से हम मोटिवेट करके तैयार करते हैं कि वह स्वयं से पहले बना कर लाए इस प्रकार प्रारंभिक चुनौती देते हैं पाठ के भीतर जो विभिन्न क्रियाकलाप और प्रस्तावना के अध्ययन के बाद काफी बच्चे लगभग बना ही लेते हैं और जो बचे प्रश्न को बच्चे क्लास में आपस में चर्चा कर बनाते हैं और कुछ जो बच जाता है उसको फिर मैं भी बता देता हूं कुछ कमजोर बच्चे अपने विषय मित्र के साथ चर्चा करके उस पर अपनी समझ बनाते हैं पहले एक प्रश्नावली को बनाने में काफी समय लगता था आप पहले के अपेक्षा प्रश्नावली और पाठ जल्दी खत्म हो जाता है।

शुरुआत में तो बच्चों ने कहा कि कुछ बताइए सर पर उनको फिर से मोटिवेट कर टेक्नोलॉजी का भी उपयोग करने के हेतु मोटिवेट किया गया यूट्यूब गूगल के माध्यम से भी बच्चे प्रयास करते हैं अब काफी बच्चे सेल्फ से हल करना स्टार्ट कर दिए हैं।

बच्चों से बात करने से पता चलता है, उनको जो बातें अच्छी लगती हैं, सीखने की आवश्यकता निर्माण होती है, उसमें एक उद्देश्य होता है, इसमें नवीनता होती है, एक प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण और बच्चे के लिए इसकी उपयोगिता होती है, तो ये बच्चे इसे स्वतः तीव्र गति से सीखते हैं।

हालांकि, शिक्षक के सामने असली चुनौती बच्चे की प्रेरणा को जगाना होता है। जीवन में अंतःप्रेरणा बाहरी प्रेरणा से बहुत अधिक मूल्यवान साबित होता है। इस संबंध में हम हमेशा, भीतर की आवाज, अंदर की आग इत्यादि शब्द अक्सर सुनते हैं।

इसलिए, छात्रों का सीखना केवल पाठ्यपुस्तक और दी जाने वाली परीक्षाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि उनके व्यवहार, आचरण और संवाद द्वारा सीखने का परिणाम दिखता है।

कुछ उदाहरण

कक्षा आठवीं में मैंने प्रायिकता के प्रश्नो को स्वयं से बना कर आने को कहा लगभग अधिकांश बच्चे बना कर लाए और कुछ प्रश्नों में उनको समस्या थी जिनको सामान्य चर्चा से हल कर लिया गया।

कक्षा सातवीं में चौलेंज के रूप में दिया था कि वे सभी त्रिभुज एवं चतुर्भुज के विभिन्न प्रकार के चित्र बनाएं और उनके सभी कोण का योग ज्ञात करके बताएं बच्चे स्वयं से यह समझ गए कि त्रिभुज के तीनों कोणों का योग 180 होता है और चतुर्भुज के चारों कोणों का योग 360 अंश होता है।

बच्चों को अब काफी मजा आने लगा है वे स्वयं याद दिलाते हैं कि आज हमारा क्या चुनौती रहेगा और आज सेल्फी लेना आप भूल रहे है।

स्कूल के अभिभावकों का एक व्हाट्सएप ग्रुप बना है जिसमें उनके फोटोग्राफ भेजते हैं बच्चों का उत्साह दुगुना हो जाता है।

विद्यालय के बाकी अन्य सभी स्टाफ भी इसी पद्धति पर काम स्टार्ट कर रहे हैं सभी को सफलता मिल रही है।

यहाँ पर पाठ्यपुस्तक की सीमाओं से परे जाकर सीखने और सिखाने की प्रक्रिया होने की उम्मीद है।

जैसा कि शिक्षा शास्त्री वायगोट्स्की द्वारा ZPD (Zone of Proximal Development) में उल्लेख किया गया है कि बच्चा जो जानता है और जो नहीं जानता है उसके बीच का क्षेत्र बच्चे के लिए उपयुक्त होता है। इस क्षेत्र में मार्गदर्शक की भूमिका MKO (More Knowledgeable Other) की होती है। अतः शिक्षक की भूमिका अधिक जानकार के रूप में होती है. बच्चे को जो ज्ञात नहीं है उसे सीखने के लिए राह दिखाकर आवश्यक सुविधा मुहैया कराना और मदद करना ही मार्गदर्शक की जवाबदारी होती है।

कक्षा में सीखने–सिखाने की प्रकिया में बदलाव के लिये
नुस्खा नं. 2
बच्चों को स्वयं से अधिक सीखने के लिए चुनौती दें

यदि मानव मस्तिष्क को लगातार एक चुनौती पूर्ण कार्य सौंपा गया तो यह लगातार प्रवाह की स्थिति में रहता है। बच्चे स्वाभाविक रूप से विभिन्न चुनौतियों की तलाश में रहते हैं। क्योंकि उन्हें लगातार सीखते रहना पसंद होता है। बच्चे लगातार चुनौतियों की तलाश में रहते हैं इसका मतलब है कि उन्हें लगातार कुछ नया चाहिए रहता है। हमेशा नए की तलाश करना और उसे पूरा करना यही उनके जीवन की गति होती है। इसलिए, बच्चों को चुनौती देने का अधिक संबंध उनके मस्तिष्क के कार्य से होता है। मस्तिष्क, लगातार जागते हुए अपने कार्यों को सजगता से पूर्ण करने वाला अंग है। जिस प्रकार मस्तिष्क को आराम की आवश्यकता होती है, उसी तरह इसे प्रवाह में रखने के लिए कार्य की भी आवश्यकता होती है। इसके लिए हमें मस्तिष्क को पूरक क्रिया देने की आवश्यकता होती है। आधुनिक मस्तिष्क अनुसंधान से पता चला है कि मस्तिष्क के विभिन्न भागों के विशिष्ट कार्य होते हैं। भाषा, गणित, रचनात्मक कार्य, नए विचारों के लिए मस्तिष्क के विभिन्न क्षेत्र कार्य करते हैं। मस्तिष्क के जो क्षेत्र पूरे दिन काम करते हैं, नींद के बाद भी वही क्षेत्र उत्तेजित होते हैं। इसका मतलब यह है कि मस्तिष्क के सभी क्षेत्रों को हावर्ड गार्डनर के बहु–बुद्धिमत्ता के सिद्धांत के अनुसार काम में लाया जाना चाहिए। मस्तिष्क को काम देने का अर्थ है मस्तिष्क को वह भोजन देना जो उसकी आवश्यकता है। बच्चों को चुनौती देते समय, आपको निम्नलिखित बातों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है:

चुनौती स्वीकार करने के लिए तैयारी और रवैया: पहले बच्चों के व्यवहार और उनकी आदतों का विश्लेषण करना महत्वपूर्ण है, साथ ही चुनौती को स्वीकार करने के लिए बच्चों की आदत और दृष्टिकोण को विकसित करना है।

मेरा अनुभव

शिक्षक – द्रोण साहू
शासकीय प्राथमिक शाला बिजेमाल
जिला – महासमुंद

सभी साथियों को नमस्कार।

मेरी आदरणीय श्री सुनील मिश्रा सर से व्हाटसएप ग्रुप पर चर्चा होती रहती थी। उनके मार्गदर्शन एवं ग्रुप के अन्य शिक्षक साथियों के अनुभवों को पढ़कर मेरी जो भी थोड़ी बहुत समझ बनी थी, उसी के आधार पर मैने कक्षा 2 के 21 बच्चों को चुनौती देने का निश्चय किया।

उस दिन मेरी दूसरी कक्षा में 21 में से 19 बच्चे उपस्थित थे। 21 बच्चों में से किसी को भी 10 तक पहाड़ा नही आता था। मुझे यू ट्यूब से एक बच्चे का वीडियो प्राप्त हुआ था जिसमें वह धारा प्रवाह ढंग से 10 तक का पहाड़ा बोल रहा था। मैने यह वीडियो अपने बच्चों को दिखाया, उनमे से कुछ बच्चों ने कहा– ''ये काय हे सर– एखर ले जादा त हमन जानथन'' मुझे लगा यही सही समय है, इन्हे चुनौती देने का। अगले दिन से 3 दिन की छुटटी थी। मैने उनसे कहा कि फिर तुममे से कौन छुटटी के दौरान 10 तक का पहाड़ा याद करके सुना सकता है। सबने जोर से हां कहा। यदि तुम ऐसा कर लेते हो तो मैं तुम्हारे साथ सेल्फी लेकर उसे हर ग्रुप में सेंड करुंगा।

अब बारी थी विषय मित्रों की, मैनें उनसे फिर पूछा कि तुम लोगो को तो 2, 3, 4 या 5 तक के पहाड़े याद है। फिर तुम पहाड़े याद कैसे करोगे और फिर तुम लोगो के पास पहाड़े की किताब भी नही है। कुछ देर तक कक्षा में चुप्पी छाई रही फिर अचानक जयप्रकाश नाम के बच्चे ने कहा – सर हमन अपन दोस्त के घर मा जाके याद कर लेबो। बस फिर क्या था सबने अपनी–अपनी जोड़िया बना ली ।

तीन दिन की छुटिटयां बीत गई। उस दिन की कक्षा में बड़ा उत्साह नजर आ रहा था। कक्षा में हाजिरी लेने के पहले ही बच्चे चिल्लाने लगे। पहाड़ा सुनाना हे, पहाड़ा सुनाना हे। फिर मैने हाजिरी लेने का कार्य रोक कर उनका पहाड़ा सुना। 19 मे से 4 बच्चे दस तक का पहाड़ा सुना दिये, बाकि बचे 15 बच्चों ने भी कोशिश की पर वे दस तक पहाड़ा पूरा नही सुना पाये। उनमे से कुछ बच्चो ने एक–दो बार गलती भी की, पर उनका आत्मविश्वास ऐसा जबरदस्त था कि मैने उन्हे वहां नही टोका।

स्वयं–प्रयास की खुशीः सीखने की प्रक्रिया में बच्चे का स्वयं प्रेरणा से सीखना उन्हें सबसे ज्यादा आनंद प्रदान करता है। वे विभिन्न चुनौतियों में ऐसा आनंद खोजने लगते हैं। वे समय के साथ छोटी छोटी चुनौतियों का आनंद लेते बड़ी से बड़ी चुनौतियों को भी आसानी से पूरा कर सकते हैं।

स्नेह और अपनेपन का अनुभव बच्चे स्नेह और साहचर्य से प्यार करते हैं क्योंकि उनकी भावना से निकट का संबंध होता है। जहां भी प्यार की नमी होती है वहाँ आप बच्चों की भीड़ देखेंगे। सीखने की प्रक्रिया में भावनात्मक पक्षों को अधिक महत्व दिए जाने पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता विकसित होती है।

खेल और व्यायामः हमारे शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा का लगभग 20 प्रतिशत अकेले मस्तिष्क में जाता है। इसलिए, बच्चों को खेलों से सीखने के साथ–साथ व्यायाम का भी अवसर देना जरूरी है। खेल और व्यायाम को चुनौती में बदलना और उसे पूरा करने के लिए लगातार मदद करना आपका काम है।

नई चीजेः बच्चों को लगातार नया करना पसंद होता है। यही वजह है कि छोटे बच्चे इस तरह की चीजें जल्दी सीखते हैं। इसलिए नई नई चुनौतियां देते रहना महत्वपूर्ण है।

विविधता : चुनौतियों में विविधता लाकर मस्तिष्क के विभिन्न क्षेत्रों को क्रियाशील करने से बच्चों का समग्र विकास होता है। न केवल अध्ययन बल्कि कला, खेल, संगीत का आनंद , साहित्य का मनोरंजन, पठन आदि कई शौक का पालन किया जा सकता है।

रोजमर्रा तोड़ना : बच्चों को रोज रोज एक जैसी बातें , एक जैसा काम अच्छा नहीं लगता। नतीजतन, उनकी नकारात्मकता बढ़ती है। उदाहरण के लिए, पाठ्यपुस्तक से कॉपी करना, बार बार परीक्षा देना, पाठ को दोहराना उन्हें पसंद नहीं है। क्योंकि इनमें चुनौती शून्य है।

मैने उन चारों बच्चों के साथ सेल्फी ली। उनके चेहरों पर खुशी और आत्मविश्वास देखते हीं बनता था।

इस पूरी प्रक्रिया में मुझे जो अनुभव हुआ, मैं यहां उसे भी शेयर करना चाहूंगा।

- बच्चों को काम देने और चुनौती देने मे फर्क होता है। काम हम उन पर थोपते है, जबकि चुनौती वे स्वयं लेते है।
- काम देने के लिये किसी तैयारी की आवश्यकता नही होती, पर चुनौती देने के पहले पृष्ठभूमि और माहौन बनाने की जरुरत होती है।
- बच्चों को उन्हे जो जानते है और उन्हे जो जानना चाहिये इन दोनो के बीच में ही कही चुनौती देनी चाहिये, क्योंकि यदि हम उसके स्तर से नीचे की चुनौती देते है तो वह उसमें रुचि नही लेगा और यदि उसके स्तर से ऊपर की चुनौती देगें तो भी वह उसमें रुचि नही दिखायेगा, क्योंकि दोनो ही स्थितियां उसे उत्साहित नही कर पायेंगी। (शायद मैने उनके स्तर के हिसाब से पहाड़ा याद करने के लिये चुनौती दी होती तो परिणाम और बेहतर हो सकता था। संभवतः यही बात महान शिक्षा शास्त्री Vygotsky ने अपने ZPD (Zone of Proximal Devlopment) के रुप में कही है।)
- बच्चों को केवल याद करने जैसे स्मरण रखने वाली चुनौतियों से आगे बढ़कर कुछ रुचिकर और सृजनात्मक चुनौतियां देने की भी आवश्यकता है।
- मुझे यह भी लगा कि हमे बच्चों को चुनौती पहले देनी चाहिये, उसके बाद हीं उन्हे विषय मित्र चुनने की स्वतंत्रता देनी चाहिये। (भले हीं हमनें विषय मित्रों का चिन्हांकन पहले से ही क्यों न किया हो, ताकि वे बच्चे उनकी मदद करने वाले विषय मित्रों की महत्ता को समझ सके और उद्देश्य पूर्ण ढंग से उनकी मदद ले सके।)
- हो सकता है किसी को मेरी कक्षा कि यह कोई बड़ी सफलता न लगे पर मुझे बच्चों में जो आत्मविश्वास दिखा वैसा आत्मविश्वास मैने पहले कभी बच्चों में महसूस नही किया था और आगे मेरे बच्चे बहुत अच्छा करेगें यह मेरा विश्वास है।

अध्ययन को चुनौती से जोड़ें : बच्चों के दैनिक अध्ययन को चुनौतियों के साथ–साथ विभिन्न गतिविधियों, परियोजनाओं, शौक, जुनून को जोड़ा और उनसे मिलने वाले बड़े आनंद लेने दिया तो चुनौतियों का परिणाम दुगुना हो जाता है।

आनंददायी वातावरण और बच्चों की सुरक्षा : चुनौतियां देते समय आनंददायी वातावरण और बच्चों की सुरक्षा को ध्यान में रखना चाहिए। वास्तव में, ऐसी चुनौतियों का एक बार माहौल बन जाने के बाद बच्चे स्वयं इसकी मांग करेंगे।

बच्चों की मांगों पर ध्यान दें : अधिकांश समय, हम बच्चों की मांगों पर ध्यान नहीं देते हैं और उन्हें वे चुनौतियाँ देते हैं जो हम चाहते हैं। हालाँकि, बच्चों को क्या चाहिए? इसे देखते हुए, कोई भी चुनौती दिए तो उसके पूरा होने या उसके पीछे की सफलता के प्रति 100 प्रतिशत आश्वस्त हो सकते हैं। इसलिए अगर बच्चों की मांगों के अनुसार चुनौती दी जाती है, तो परिणाम अधिक मिलेगा।

विभिन्न चुनौतियों की सूची बनाना : शिक्षक और पालक भी, बच्चों या विद्यार्थियों को कौनसी चुनौतियां देना उचित रहेगा, उसको क्या चाहिए इत्यादि को सोच समझकर पहले सरल, फिर मध्यम और अंत में कठिन चुनौतियां देते गये तो बच्चों की चुनौतियों को सामना करने की क्षमता बढती है और सीखने की गति भी तेज हो जाती है।

इक्कीसवीं सदी के कौशल : इक्कीसवीं सदी के कौशल विकास के लिए चुनौतियां दी जानी चाहिए जैसे रचनात्मक सोच (Creative Thinking), तार्किक सोच (Critical Thinking), संवाद कौशल (Communication Skills), सहयोगात्मक सोच (Collaborative Thinking), संवेदनशीलता, (Compassion), विश्वास (Confidence) आदि।

एक अनुभव : यह भी

विषय मित्र केवल सीखता ही नही है, कमजोरियों को भी बताता है : गंगाधर साहू

यह बात जून 2019 की है। उस समय सक्रिय शिक्षको के एक व्हॉटसएप ग्रुप से मुझे जुड़ने का अवसर मिला। उस ग्रुप में नीचे लिखी 6 बातों पर खूब चर्चा चल रही थी :–

1. बच्चों के सीखने पर विश्वास करना।
2. चुनौती देकर असर स्तर को खत्म करना।
3. जो सीखने में अपेक्षाकृत धीमे है, उनके लिये विषय मित्र बनाना।
4. बच्चों की जिज्ञासाओं का सामना करना।
5. मोबाईल का प्रयोग करके सीखने की गति को तेज करना।
6. उपरोक्त बातों के पूरा होने पर बच्चों द्वारा सिलेबस को एक तिहाई समय में पूरा कर लेना।

इन सभी बातों में जुलाई का माह व्यतीत हो गया। पर मुझे अभी भी उनकी बातों पर श्कीन नही हो पा रहा था। मैने सोचा कि इसे स्कूल में करके देखा जाना चाहिये। मैं एक स्कूल अवलोकन में गया वहां कक्षा 5 वीं में एक शिक्षक हिंदी पढ़ा रहे थे। पाठ का नाम था– मस्जिद का फुल। शिक्षक उस पाठ का एक वाक्य पढ़ाते थे तथा उस वाक्य से प्रश्न बनाकर बच्चों से पूछते थ तथा उस एक वाक्य से प्रश्न बनाकर बच्चों से पूछते थे। बच्चे उनका जवाब भी देते जा रहे थे। पाठ के अंत में मैने शिक्षक से पूछा कि आपको इस पाठ को पढ़ाकर कैसा महसूस हुआ ? शिक्षक ने उत्साह से उत्तर दिया मुझे बतुह खुशी है कि मैने बहुत अच्छा पढ़ाया।

मैने यही बात ग्रुप के एक सर को चर्चा के दौरान उसी समय बताई। सर ने तुरंत मुझसे कहा कि अब उन बच्चों से उससे आगे का पाठ स्वयं से पढ़कर आने की चुनौती देकर वापस आ जाओ। मैने ऐसा ही किया और वापस आ गया।

अगले दिन मै पुनः वही गया और बच्चो से चमत्कार पाठ से सवाल पूछे। मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब मैने देखा कि बच्चे बिना किसी के पढ़ाये उस पाठ को स्वयं पढ़कर सभी सवालों के जवाब दे रहे थे।

परंतु मेरे मन में अभी भी एक संशय बना हुआ था कि हिंदी मे तो बच्चे कर सकते है पर गणित जैसे विषय में यह कैसे संभव है ?

यदि आप छात्रों की उम्र, विषय, चाहत और वर्ग के आधार पर चुनौतियों की सूची बनाते हैं, तो उन्हें अलग– अलग चुनौतियाँ दी जा सकती हैं। वास्तव में, जब चुनौती देना ही अब एक बड़ी चुनौती है। इसलिए चुनौतियाँ देते समय सभी को सतर्क रहना चाहिए। इसके लिए हमें भी चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होने की जरूरत है।

चुनौतियों को स्वीकार करें, ताकि आप जीत के आनंद को महसूस कर सकें।

मेरी इसे गणित की कक्षा में देखने की चाह अब बढ़ने लगी। इसे देखने के लिये मैने एक गांव के एक मुहल्ले के कक्षा 5 के 15 बच्चों को बुलाया और उनसे बातचीत की। इस दौरान मैने उनसे पूछा कि गणित विषय में उनका कोर्स कहॉ तक हुआ है ? उन्होने जवाब दिया – हम भिन्न पढ़ रहे है। मैने पहले दिन उनसे भिन्न पर कुछ बातचीत की और कल पुनः आने का वादा देकर मैं लौट गया।

अगले दिन जब मैं वहॉ पुनः गया तब मैने उनसे कहा कि क्या तुम भिन्न से आगे वाले अध्याय साधारण बयाज के सवालो को हल कर सकते हो ? सभी बच्चे मुझे देखकर हंसने लगे। उन्होने मुझसे कहा – कइसे बात करथस सर ? बिन पढाये पाठ के प्रश्न कईसे बनही ? मैने उन्हे साधारण ब्याज के प्रस्तावना पढ़ने के लिये कहा ? सबने उसे पढने की कोशिश की परंतु कोई भी उस दिन सवाल का हल नही बना पाया।?

अगले दिन मैं फिर से उनके पास पहुंचा। आज मैने देखा कि 4 बच्चे घर से पढ़कर साधारण ब्याज के सवाल बनाकर लाये थे।

अब मुझे थोड़ा–थोड़ा विश्वास होने लगा कि वे 6 बिदू वास्तव में कक्षा में कारगर है। इस तरह अगले दो दिनों में 15 में से 13 बच्चे साधारण ब्याज के सवाल हल करना सीख गये। पर अब भी 2 बच्चे सीख नही पा रहे थे। मैने उनके लिये विषय मित्र बना दिया।

आने वाले लगभग 4 दिन के ाद भी विषय मित्र उन दो बच्चों को सिखा नही पा रहे थे। मैने विषय मित्रों से इस पर बात की। उनके जो जवाब थे उसने मुझे झकझोर कर रख दिया। उनका जवाब था – सर वोला तो जोड़ना–घटाना तक घलो नही आय, त ब्याज के सवाल ल काला बनाही ? विषय मित्रों से एक बात साफ झलक रही थी कि वे न केवल उन बच्चों को सिखाने का काम कर रहे थे, बल्कि उनकी कमजोरियों को बखूबी पकड़ रहे थे। जिसे पकड़ने में एक शिक्षक को सालो लग जाते है। इन दोनो अनुभवो ने मेरे दिमाग के अविश्वास को भरोसे में बदलने का काम किया और अब मैं अपनी कक्षा में इन 6 बिंदूओं पर काम कर रहा हॅ।

'' शांत समुद्र एक कुशल नाविक नहीं बना सकता ''

कक्षा में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में बदलाव के लिये

नुस्खा नं. 3 पीयर लर्निंग, ग्रुप लर्निंग, विषय–मित्र

सक्रिय अधिगम के विषय में प्राचीन काल में भी बहुत चिंतन हुये है। भारतीय परंपरा में उपनिषद काल में ऐसे बहुत से कथानक मिलते है जिनमे यह दर्शाया गया है कि सीखने की पहल और उसके द्वारा किये गये प्रयासों के बाद हीं उसे ज्ञान की प्राप्ति होती है। छांदोग्य उपनिषद में वर्णित उद्दालक – श्वेतकेतु का आख्यान, कठोपनिषद में वर्णित यम–नचिकेता का आख्यान इनमे से मुख्य है।

भारतीय परंपरा का निम्नलिखित सुभाषित भी इसकी पुष्टि करता है :–

आचार्यात पादमादत्ते
पादं शिष्य स्वमेधया।
सब्रहमंचारिभ्यः पादं
पादं कालक्रमेण च।।

अर्थात सीखने का कार्य एक चौथाई आचार्य से एक चौथाई अपनी मेधा और प्रयासों से एक चौथाई सहपाठियों के सहयोग से तथा एक चौथाई परिस्थिति आने पर समय के साथ होता है।

उपर्युक्त सुभाषित सीखने वाले के द्वारा अपनी मेधा और अपने प्रयासों से सक्रिय अधिगम की ओर हीं संकेत कर रहा है।

आइए, देखते हैं कि यह कक्षा में कैसे संभव है :–

पीयर लर्निंग – बच्चे एक–दूसरे की मदद से बहुत अच्छे से सीखते हैं। स्वाभाविक रूप से सोचें तो बच्चों को यह आसान लगता है। पीयर लर्निंग से बच्चों को अपनी गति से और अपने वांछित समय पर सीखने के अवसर प्राप्त होते हैं। पियर लर्निंग में अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप जोड़ियाँ बनाया जा सकता है। उदाहरण के लिएय कक्षा में बच्चों की जोड़ी, स्कूल के बच्चों की जोड़ी, आवश्यकतानुसार जोड़ी आदि।

विषय–मित्र से मिली सफलता : मीनाक्षी राव

मैंने और सत्या सर ने मिलकर सिलतरा में कक्षा 5 में एक माह पूर्व विषय मित्र का निर्माण किया। मेरी कक्षा में कुल 91बच्चे हैं। जिनमें से 4 बच्चे लंबे समय से अनुपस्थित हैं।

विषय मित्र के निर्माण से पूर्व मेरी कक्षा में 62 बच्चों को पुस्तक पढ़ना आता था। 25 बच्चों को पुस्तक पढ़ना नहीं आता था। इन 25 बच्चों में कुछ ऐसे बच्चे भी थे, जिनको वर्ण और मात्रा की सही पहचान नहीं थी। विषय मित्र बनाने के सिर्फ 20 दिनों में मैंने उन बच्चों में बदलाव देखा। वे बच्चे अब वर्ण और मात्रा पहचान कर पढ़ने लगे थे।

जो बच्चे अटक– अटककर पढ़ते थे, वे सही पढ़ने लगे। अब एक माह हो गया चुका है, मेरी कक्षा में उन 25 बच्चों में से 24 बच्चे पहले की तुलना में बहुत अच्छे से पढ़ लेते हैं, कुछ बच्चे धाराप्रवाह भी पढ़ लेते हैं।

मैं कुछ बच्चों का अनुभव बताना चाहती हूँ। जास्मिन नाम की एक बच्ची है जो एक माह पूर्व अटक–अटककर पढ़ती थी। आज वह धाराप्रवाह पुस्तक पढ़ लेती है, और तो और कठिन शब्द भी पढ़ लेती है। पढ़ना सीखने तक वह बच्ची स्कूल की छुट्टी के बाद रोज शाम को 6 बजे उसकी विषय मित्र काजल के घर जाती थी और 8 बजे तक पढ़ाई करती थी। दशहरे के अवकाश में भी वह उसके घर सुबह और शाम को जाकर पढ़ाई करती थी। इस तरह वह सिर्फ 20 दिनों में ही धाराप्रवाह पुस्तक पढ़ना सीख गई। बाकी बच्चों में भी इस प्रकार के बदलाव देखने को मिले हैं। मैंने उन दोनों बच्चों को प्रार्थना के समय उनके द्वारा की गई मेहनत और सफलता को सभी शिक्षक और बच्चों को बताया। सभी ने उनकी मेहनत को प्रोत्साहित करने के लिए तालियाँ बजाईं। वे दोनों बच्चे अन्य बच्चों के लिए मिसाल बन गए। इस प्रकार मेरी क्लास में अब 86 बच्चों को पढ़ना आ जाता है।

एक बच्ची है जिसकी याद रखने की क्षमता बहुत कम है। आज पढ़ी गई बातों को कल भूल जाती है। बाकी के 4 बच्चे लंबी अनुपस्थिति वाले हैं। उनको स्कूल लाने के लिए मैं और मेरी क्लास के बच्चे सब मिल कर SLA (State Level Assesment) की परीक्षा के बाद उनके घर गए और उनसे कहा कि सिर्फ दीवाली छुट्टी के पहले तक दस दिन स्कूल आकर देखो। इन दस दिनों में यदि आपको अच्छा नहीं लगता तो फिर मत आना। चूँकि वे लगातार 3 साल से अनुपस्थित थे और स्कूल सिर्फ परीक्षा देने आते थे। इसका परिणाम उनकी एकाग्रता पर हुआ है।

पियर का अर्थ है कि सीखने की प्रक्रिया में दोनों की समान हिस्सेदारी होनी चाहिए। अर्थात कभी पहला जोड़ीदार दूसरे को सिखा रहा है तो कभी दूसरा जोड़ीदार पहले को सिखा रहा है।

कक्षा के बच्चों की जोड़ी – इसमें एक ही कक्षा के दो लड़के लड़कियों के जोड़ी की अपेक्षा की जाती है। कक्षा में बच्चों को विभिन्न स्तरों में विभाजित किया गया है। उनकी अलग–अलग आकलन की क्षमताएं एक–दूसरे के अध्ययन के लिए पूरक होती हैं। जिन बच्चों की कक्षा में अच्छी अध्ययन गति है, उनका उपयोग उनकी तुलना में पिछड़ने वाले बच्चों के लिए किया जा सकता है। कक्षा में होने वाली दैनिक अभ्यास में इन बच्चों का हमेशा एक–दूसरे को मदद होती है। विभिन्न पहलुओं में आने वाली कठिनाइयाँ और स्वयं अध्ययन में एक–दूसरे की होती है।

स्कूली बच्चों की जोड़ी – बड़ी कक्षा वाले के साथ छोटी कक्षा वाले छात्र की जोड़ी। बहु कक्षा शिक्षण वाले स्कलों में इसका उपयोग अधिक व्यापक रूप से किया जा सकता है। जब छात्र घर पर होते हैं तो कक्षा का सहपाठी पड़ोसी भी हो ऐसा जरूरी नहीं है। इसलिए स्कूल की जोड़ी बनाते समय पड़ोसियों की जोड़ी बनाना अच्छा हो सकता है। पड़ोसियों की जड़ी गली मित्र के रूप में भी काम करता है। जब कक्षा के बच्चों में उच्च–वर्ग की क्षमताओं या बड़े बच्चों की आदतों और रीति–रिवाजों को विकसित करना चाहते हैं तो इस तरह की जोड़ी मदद करती है।

सफलता को सभी शिक्षक और बच्चों को बताया। सभी ने उनकी मेहनत को प्रोत्साहित करने के लिए तालियाँ बजाईं। वे दोनों बच्चे अन्य बच्चों के लिए मिसाल बन गए। इस प्रकार मेरी क्लास में अब 86 बच्चों को पढ़ना आ जाता है।

उनके चलायमान विचारों को स्थिर करना भी एक काम है। उन्हें स्कूल में रोकने के लिए उनसे मैंने पहले बात करनी शुरु की। उन्हें स्कूल में पहले पूरे समय के लिए रोकने का प्रयास है। इस काम में मैं बहुत हद तक सफल भी हो गई हूँ। दिवाली तक वे रोज स्कूल आते रहे हैं। अब मैं उन 5 बच्चों को सिखाने के लिय योजना तैयार कर रही हूँ। इन 5 बच्चों में भूनी नाम की एक बच्ची है जिसको पेन भी पकड़ना नहीं आता। इस बच्चे को सिखाना मेरे लिए बहुत बड़ा चौलेंज है।

दशहरा के पहले मैंने कक्षा 4 में और दीवाली के पहले कक्षा 3 में भी विषय मित्र बनाया है। कक्षा 1 में भी 12 बच्चों का विषय मित्र बनाया है। कक्षा 4 और 3 के बच्चों ने 10 दिनों में ही पढ़ना सीख लेने का वादा किया है। अब दीवाली की छुट्टी खत्म होने के बाद उनका रिपोर्ट देखना है।

इस प्रकार विषय मित्र की मदद से बच्चों ने स्वयं पढ़ना शुरु किया। बस मुझे उन्हें प्रोत्साहित करना पड़ा। परिणाम आने में सिर्फ 20 दिन लगे। विषय मित्र बहुत ही अच्छी संकल्पना है क्योंकि इसमें हमें पढ़ाना नहीं पड़ता, बच्चे स्वयं सीखते हैं। हमें तो सिर्फ उन्हें प्रोत्साहित करना, उनके प्रगति की योजना बनाना तथा दिशा और दृष्टि स्पष्ट करना पड़ता है ।

आवश्यकता अनुसार जोड़ी – आपसी चर्चा, दो लोग मिलकर की जाने वाली परियोजना, या कोई लक्ष्य बातें पूरी करनी हो तो ऐसी जोड़ी बनाई जा सकती है।

ऐसे विभिन्न प्रकार के जोड़ियों का उपयोग करने से, बच्चों का अन्य बच्चों के साथ अधिकतम संपर्क आता है। साथ ही एक ही जोड़ी के भरोसे रहे बिना विविधता समझ में आती है। उसी प्रकार, किसी बच्चे को एक साथी से सीखने में कठिनाई हो रही हो तो अन्य संभावनाएं तलाश सकते हैं। इससे सीखने के अवसर बढ़ाते हैं।

पीयर लर्निंग योजना लागू करते समय आने वाली चुनौतियां –

बच्चा सहयोग नहीं करता, समझाने पर भी उसे नहीं समझता है। (छात्र एक–दूसरे की शिकायत करते हैं)

बच्चों का विचलन, ज्यादा समय तक उनका ध्यान केंद्रित नही रहना।

दो साथियों में से एक साथी की अनुपस्थिति आदि।

पीयर लर्निंग की चुनौतियों को दूर करना –

पीयर लर्निंग की आदत नहीं है इसलिए चुनौतियां हैं। एक बार आदत बन जाने के बाद सभी चुनौतियां दूर हो जाएंगी।

धैर्य और निरन्तरता बनाये रखें

आवश्यकतानुसार विभिन्न जोड़ियाँ बनाना। (कभी–कभी जोड़ी में परिवर्तन करने से अध्ययन की गति बढ़ सकती है।)

बच्चे के रूचि की चुनौती के साथ काम करना शुरू करें। (पाठ्यपुस्तकों के अलावा कार्य देना।)

जोड़ी के रूप में काम की शुरुआत के समय ध्यान केंद्रित करें। लगातार प्रेरित करते रहना।

बच्चों को पियर में उनकी भूमिका व जिम्मेदारी समझने में मदद करना।

पियर लर्निंग से मिलने वाली खुशी का अनुभव करने दें। मिलने वाली सफलता दिखाकर और आनंद लेना सिखाएं।

जोड़ी में हमेशा सीखने की ही भूमिका न होकर, सिखाने की भी भूमिका हो ऐसी व्यवस्था करना।

ग्रुप लर्निंग – अध्ययन अध्यापन की जरूरतों के अनुसार एक ही कक्षा के या विभिन्न कक्षाओं के छात्रों का समूह बनाना। समूह में तीन से चार छात्र होते हैं। मिश्रित अध्ययन गति वाले बच्चों का समूह होने से छात्रों को एक दूसरे का लाभ होता है। छात्रों को शिक्षक की मदद के बिना अंतहीन सीखने का अवसर प्राप्त होता है।

(यहां भी पियर लर्निंग की तरह समूह बनाए जा सकते हैं। चुनौतियां भी पियर लर्निंग की तरह ही आ सकतीं हैं और उन्हें उसी प्रकार सुलझाया भी जा सकता है।)

विषय मित्र योजना – एक छात्र की दूसरे छात्र से सीखने की गति व पद्धति अध्यापक से सीखने की तुलना में बेहतर होती है। पढाई करते समय आनेवाली शंका एवं समस्याओं का हल छात्र अध्यापक से डर या अपमानित होने की भावना से नही पूछते । फिर मन में शंकाएं लेकर अध्ययन का सफर शुरू होता है जिस रास्ते में एक पड़ाव आता है जिसका नाम है पिछडने की स्थिति। आवश्यकता होना या रुची होना इन दो स्थितियों में ही शिक्षा प्राप्त की जा सकती है। तनावमुक्त मानसिक स्थिति शिक्षा के लिये मूल आवश्यकता होती है। सभी बच्चों के सीखने की गति एक

जैसी कभी भी नही हो सकती कुछ छात्रों को एक बार कह दो तो वे समझ जाते है कुछ को वही बात दो बार, तीन बार, लगातार समझाना पड़ता है, हर बच्चे की अपनी प्राकृतिक गति होती है। अधिक दर्ज संख्या या अध्यापक की संख्या कम होने की स्थिती में अध्यापक छात्रों के साथ न्याय नही कर सकता। बहु या द्विअध्यापकीय स्कूलों को देखा जाये तो साधारणतया 80 प्रतिशत सरकारी स्कूलों में यही स्थिति है। ऐसे स्कूलों में विषय मित्र की अवधारणा एक वरदान साबित हो सकती है।

इसके लिये बड़ी कक्षाओं के होशियार और उत्साही छात्रों से मदद लेनी पड़ती है। साधारण तौर पर 6 से 12 छात्रो का चुनाव करके उनके पसंद के विषय की जिम्मेदारी उस छात्र या समूह को दी जाती है। दर्ज संख्या के अनुसार एक,दो,या फिर तीन छात्रो को जिम्मेदारी दी जाये तो वे अपनी पढाई के साथ साथ जिस विषय की जिम्मेदारी दी गयी है उसकी भी पढाई पूरी कर लेते हैं और अपने सहकारी विद्यार्थियों की शंकाओं का समाधान आवश्यकतानुसार कहीं भी और कभी भी करते हैं। किसी भी कक्षा के छात्र को किसी भी विषय में प्रश्न उपस्थित होता है तो वे संबंधित विषय मित्र से पूछकर शंका का समाधान कर लेते है। छात्र बिना किसी डर या हिचकिचाहट के पूछते हैं। विषय मित्रों को भी सिखाने में बहुत खुशी होती है। छात्र शंका का समाधान होने तक बारबार सवाल पूछ सकते हैं। यह बात अध्यापक के साथ बच्चे नही कर सकते।

अध्यापक की अनुपस्थिति या जब वे किसी अन्य कार्य मे व्यस्त हों या फिर ऐसा कुछ न भी हो तब भी केवल अलग अनुभव के लिए विषय मित्र छात्रो को आधारभूत संकल्पनाएँ भी सखा सकते हैं। इस तरीके से अगर छात्रों को अवसर दिये जाएं तो अच्छे परिणाम आते हैं। अध्यापन का अनुभव छात्रों को शिक्षा के साथ साथ आत्मविश्वास प्रदान करता है तथा छात्र सहजता से सीख भी जाते है।

विषय मित्र योजना से स्कूल में एक समांतर व्यवस्था तैयार होती है, जिससे अध्यापक के बिना पढना–पढाना, शंका निरसन, सृजनशीलता आदि सहज ही शुरू रहता है। सुबह एक घंटा या स्कूल के बाद एक घंटा समूह में बैठकर बच्चे कार्य करते हैं , इसमे हिंदी इंग्लिश या गणित की तैयारी आदि के बहुत अच्छे परिणाम आ सकते है। स्कूल के अलावा गृहअभ्यास करते समय यदि कोई शंका उत्पन्न हो जाये तो छात्रो के अधिकार की एक समांतर व्यवस्था गाँव में उपलब्ध रहती है इससे शिक्षा के बारे में डर का वातावरण निश्चित रूप से कम होता है और एक बाल केन्द्रीत वातावरण का निर्माण होता है।

विषय मित्रों के चुनाव करने के बाद छात्रो को उनसे विषयानुसार अवगत कराना पडता है, स्कूल के समय सारणी मे हर कक्षा मे कम से कम एक पीरियड विषय मित्र के लिये उपलब्ध कराना पडता है। केवल बौद्धिक और शैक्षिक ही नही अपितु सामाजिक, मानसिक भावनिक स्तर पर भी विषय मित्र योजना लाभदायी होता है। विषय मित्र योजना हमें जनतान्त्रिक मूल्य सिखाता है और ये मूल्य छात्रों के नस नस में भर जाता है जिसके भरोसे उन्हें जीवन जीना होता है।

प्रमुख विषयों के साथ साथ उपविषय के लिये भी विषय मित्र की नियुक्ती की जा सकती है। स्कूल में बच्चो के भावविश्व से जुडने वाली ऐसी समांतर व्यवस्था निर्माण करने से स्कूल का अपना उद्देश्य पूर्ण करने में मदद होता ही है साथ ही हम छात्रों को आनंद भी दे सकते हैं।

विषय मित्र योजना लागू करते समय चुनौतियाँ –

विषय मित्र तैयार करने के लिए समय आवश्यक है।
छात्रों को शिक्षकों से ही सीखने की आदत में कमी लानी होगी।
प्रारंभ में, विषय मित्र द्वारा पारंपरिक तरीके से विषय को पढ़ाना।

विषय मित्र के बारे में दूसरे छात्रों से आने वाली शिकायतें। (अधिकारी जैसा व्यवहार, दण्डित करने की आदत)।
विषय मित्र द्वारा दूसरे छात्रों के विरुद्ध की जाने वाली शिकायतें। (मेरी बात नहीं सुनता, प्रश्नों का जवाब नहीं देता, बार–बार सिखाने पर भी नही सीखता, आदि)

चुनौतियों का सामना ऐसे करें –

कुछ भी नया और सकारात्मक करने में समय लगता है, लेकिन अपने कौशल का उपयोग करके लगने वाली अवधि को छोटा किया जा सकता है।
छात्र शिक्षक से ही सीखते हैं इस सोच को बदलना। तभी बचच्चों की शिक्षक पर निर्भरता कम होगी और यही स्वअध्ययन की शुरुआत होगी।

विषय मित्र शिक्षकों की मदद के लिए नही बल्कि बच्चों को सहज सीखने के लिए, बच्चों को सीखने में मदद हो इस उद्देश्य से यह योजना लागू किया गया है। जब अन्य बच्चों को पता चलता है कि विषय मित्र उनके मदद के लिए हैं, तो एक–दूसरे के बारे में आने वाली शिकायतें बंद हो जाती हैं।

विषय–मित्र शुरु में उनके शिक्षक ने उन्हें जैसे पढ़ाया वैसा ही पढ़ाता है। क्योंकि शिक्षक के रूप में या उनकी अध्यापन की समझ शिक्षक के अनुकरण से ही बनी है। विषय मित्र की भूमिका, जिम्मेदारी और अन्य विद्यार्थियों की उनसे अपेक्षाएं समझने में मदद की, कि ये शिकायतें कम हो जाएंगी।

विषय मित्र योजना लागू करने में शिक्षक की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका है।

धैर्य रखें। (यह समझना कि चर्चा, साझेदारी, धींगा–मस्ती, खेलना एक सीखने की प्रक्रिया है।)

निरंतरता बनाए रखना।

शुरुआत में बच्चों के साथ ज्यादा समय बिताएं। उन्हें आदत पड़ गई तो अपनी भागीदारी कम करते जाना।

विषय मित्रों और छात्रों को प्रोत्साहित करें।

प्रत्येक चरण में सूक्ष्म रूप से निरीक्षण करें।

उपरोक्त चुनौतियाँ आपकी और छात्र की इस प्रकार की आदत नहीं होने के कारण है। जैसे–जैसे काम आगे बढ़ता है, ये चुनौतियां गायब हो जाती हैं और खुशी, संतुष्टि मिलना शुरू हो जाता है। पीयर लर्निंग, ग्रुप स्टडीज और विषय मित्र इन तीनों के उपयोग से छात्रों के स्वयं अध्ययन की गति को तेज किया जा सकता है।

उदाहरण के लिए अगला पाठ बच्चों को घर से पढ़ कर आने के लिए कहना। जब बच्चे सुबह स्कूल पहुंचते हैं, तो अपने पियर के साथ पाठ पर चर्चा करें। कक्षा शुरू होने के बाद, समूह में बैठें और पाठ के अज्ञात भागों को समझें। वास्तविक कक्षा शुरू हो जाने के बाद, पूरी कक्षा एक बड़ा समूह के रूप में कार्य करेगा, उसमें शेष प्रश्नों और अनसुलझे क्षेत्रों पर चर्चा करें। इस स्तर पर शिक्षक भी सहभागी हों।

इन तीनों स्तरों की चर्चाओं के बाद बचे हुए प्रश्न और समझ में न आए क्षेत्रों पर विषय मित्र की मदद लें। इस प्रकार एक पाठ हो जाने पर पाठ्यपुस्तक में आगे के पाठों के अध्ययन के लिए अवसर प्रदान करें। इसका मतलब है कि छात्रों को स्वयं अध्ययन, पियर लर्निंग, ग्रुप लर्निंग और विषय मित्र इस क्रम में सीखना अपेक्षित है

विषय मित्र योजना के परिणाम (एक उदाहरण)

रविनारायण त्रिपाठी, शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला महली, कबीरधाम

स्वयं अध्ययन संकल्पना, चुनौती देना और विषय मित्र योजना के कक्षा में क्रियान्वयन करने से सामने आए हुए परिणाम निम्न हैं –

इस संकल्पना से पहले अध्यापकों द्वारा पढाए जाने के बाद ही छात्र शेष पाठों का अध्ययन करते थे. लेकिन अब वे खूब गती से अपने कक्षा का शेष पाठ्यांश पूरा करते हैं. विषय मित्रों से परस्पर सीखकर जितना गती से हो सके अध्ययन कर रहे हैं. इसमें मेरा एक निरीक्षण रहा है कि बच्चों ६ छात्रों की अपनी एक अलग भाषा होती है उस भाषा का योगदान इस स्वं अध्ययन प्रक्रिया में महत्वपूर्ण होता है. मेरे कक्षा में दो साल पहले नम्रता नाम की एक छात्रा थी उसे पठन में कठिनाई थी. मैने भरपूर प्रयास किया लेकिन जब जब मैं उसे पढाना चाहता था तब वो रो पडती थी. अतः मैने हताश होकर कक्षा के विषय मित्र, विकास नामक छात्र, जिसे मै दलनायक कहता हूँ, से कहा कि अब तुम ही उसे पढाओं. तब आश्चर्य की बात है कि वह केवल एक महीने में ही गती पूर्ण पठन करने लगी. इससे एक बात ध्यान में आती है की जब हम किसी बच्चे की ओर विशेष ध्यान देना शुरू करते हैं तो उनमें हीन भावना आने लगती है. विषय मित्र संकल्पना में इस बात की कोई जगह नहीं रह जाती।

अध्यापन के बाद अगर छात्रों को यदि अध्यापक ने पूछा आपको समझ में आया गया क्या तब छात्र अध्यापक के डर से बोलते थे कि आ गया. लेकिन टेस्ट या परीक्षा के समय परिणाम बहुत कम दिखाई देते थे. अब परिणाम दुगुनी दिखाई दे रही है. इससे यह समज में आया कि छात्र पढाने से ही सीखते हैं यह सोच गलत है. वे अपने आप भी गति से सीख सकते हैं।

कक्षा में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में बदलाव के लिये
नुस्खा नं. 4
छात्रों की जिज्ञासा का सम्मान करें

वास्तव में, प्रत्येक बच्चे में एक जन्मजात जिज्ञासा होती है। हर बच्चा जन्म के साथ ही जिज्ञासा लाता है। उन्हें जानना होता है कि दुनिया कैसे चलती है, दुनिया कैसे काम करती है। लेकिन इस प्राकृतिक जिज्ञासा को अक्सर हम नजरअंदाज कर देते हैं। पालक, शिक्षक, मित्र और परिवार बच्चों में जिज्ञासा पैदा करने के लिए संघर्षरत रहते हैं। हालांकि, बाहरी प्रेरणा से भी जिज्ञासु रवैया बनाता है लेकिन वह ज्यादा टिकता नही है। इसके विपरीत, बच्चे की आंतरिक इच्छा ही जिज्ञासा का सही रूप है। इसी के चलते हर बच्चा दुनिया में और उसके आसपास होने के विभिन्न अनुभवों को ग्रहण करने के लिए संघर्ष करता है।

उदाहरण के लिए, प्रत्येक बच्चा अपनी पंचेंद्रियों से विभिन्न ध्वनियों, आकृतियों, रुचि की वस्तुओं को देखता सुनता स्पर्श करता है और अपनी जिज्ञासा को संतुष्ट करता है। इन विभिन्न अनुभवों के माध्यम से छात्रों का आत्मविश्वास मजबूत होता है। तो हम सभी को समझना होगा, 'Every Child is Curious'। हर बच्चे में जिज्ञासु रवैया होता ही है, केवल उसे जागृत करने के लिए अलग–अलग अनुभव और वातावरण देना पड़ता है।

जिज्ञासा एक विशेष दृष्टिकोण है बच्चे को कोई भी नयी बात को ढूँढने में सहायता करता है। जिससे विभिन्न नवाचारों की खोज, उत्सुकता निर्माण करने तथा आश्चर्यचकित करने वाली बातों की खोज हमेशा करते रहता है।

हालांकि, यह जिज्ञासा उम्र और स्तर के अनुसार अलग होती है और पूरी तरह से इच्छा पर आधारित होती है ।

इच्छा जैसे भिन्न होतीं हैं वैसे ही जिज्ञासा भी भिन्न होती है। इसलिए अगर हर बच्चे के बारे में सोचें तो पहले पता लगाना होगा कि उनकी दिलचस्पी किसमें है। इससे जिज्ञासा जगाने की ओर आगे बढ़ सकते हैं। शिक्षण प्रक्रिया में जिज्ञासा एक महत्वपूर्ण कारक है। इस जिज्ञासा को क्रियाकलाप में लाने के लिए, शिक्षा क्षेत्र में कई तरह के प्रयोग, और चिंता मुक्त भय मुक्त वातावरण बनाने की आवश्यकता है।

इस जिज्ञासु रवैये को जगाने के लिए, निम्मलिखित बातों पर ध्यान देना होगा।

रूचि पैदा करनाः– रुचि जिज्ञासा की कुंजी है। इसलिए छात्र अपनी इच्छा और Hobby का पीछा करें। इसलिए, प्रत्येक छात्र की पसंद, उत्सुकता को जानते हुए, बच्चे को स्कूल में सभी प्रकार के काम करने की स्वतंत्रता दी जानी जरूरी है। रूचि निर्माण करना और मूल रूप से रूचि होना ये दो अलग–अलग बातें हैं। बच्चे की प्राकृतिक रुचि उसे तेजी से आगे बढ़ाता है। निर्माण की गई रूचि भी सही वातावरण देने पर उतना ही प्रभावी हो सकता है। इसलिए, प्राकृतिक रुचि को बरकरार रखते हुए विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से पैदा की गई रुचि को क्रियान्वित करना होता है।

हर बच्चे के पृष्ठभूमि का विचार करेंः बच्चों की पृष्ठभूमि ज्ञात होने से, बच्चा किन परिस्थितियों से आया है, उनकी पृष्ठभूमि क्या है, इससे बच्चे की रुचि और जिज्ञासा का अनुमान लगाया जा सकता है.

मुक्त (खुले) प्रश्नों का उपयोगः गीत, कहानी, कथा, संवाद, पाठ, कविता, खेल इत्यादि पर खुले प्रश्न पूछना, प्रश्न बनाना और उत्तर देना, उत्तर खोजना आदि गतिविधि क्रियान्वित कर सकते हैं।

दिनचर्या बदलेंः छात्रों और शिक्षकों की दैनिक गतिविधियां उबाऊ हो जातीं हैं। उसमें बदलाव लाकर बच्चों की रुचि और उत्सुकता पैदा करने वाली बातें कर सकते हैं। 'कार्य में परिवर्तन ही विश्राम है' के रूप में विविधता ला सकते हैं।

स्वतंत्र रूप से सोचने के लिए पर्याप्त समय दें: छात्रों को स्वतंत्र रूप से काम करने के लिए पर्याप्त समय देना आवश्यक है

लाइब्रेरी का अधिकतम उपयोगः बिना पुस्तकालय वाले स्कूल को बिना इंजन का जहाज कहा जाता है। इसलिए, स्कूल में पुस्तकालय, पुस्तकों, पत्रिकाओं, पुरानी पुस्तकों के लगातार प्रदर्शन और पठन–लेखन से जिज्ञासा पैदा हो सकती है।

आश्चर्यचकित करने वाली बातें करनाः आश्चर्य नई चीजों में अंतर्निहित होता है यह समझकर, अभिनव प्रयोग, सृजनशीलता के साथ छात्रों को आश्चर्यचकित करने वाली बातें कक्षा, स्कूल के वातावरण में घटित होना चाहिए।

मन में आने वाले प्रश्नों के उत्तर खोजना : यहां तक कि अगर आपके पास उन सभी प्रश्नों के जवाब हैं तब भी बच्चों को अपने स्वयं के प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए प्रेरित करें। ज्यादातर प्रश्नों के जवाब बच्चों को ही खोजने के लिए कहें। ऐसा अवसर बार बार प्रदान करें

बच्चों को पूछने के लिए प्रेरित करें : छात्रों को सतर्क रहने के अलावा, उनमें चिकित्सक सोचने की क्षमता विकसित हो इसके लिए उन्हें लगातार प्रश्न पूछने के लिए उकसायें। क्यों? कैसे? किस लिए? क्या? कौन सा? समय आने पर इस तरह के सवाल आसानी से पूछना आना चाहिए।

यात्रा करने और नए स्थानों दौरे के लिए प्रोत्साहन (विजिट): बच्चों को नई जगहों पर जाना, यात्रा करना कक्षा में, स्कूल से, होते रहना चाहिए।

छात्रों के रूचि का अवलोकनः यह मामला हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है और यदि उनकी पसंद समझ में आया तो उस प्रकार की विभिन्न गतिविधियों, कार्यक्रमों, परियोजनाओं, अनुसंधान आदि को अंजाम दे सकते हैं।

''मन में नया विचार आ गया तो वह कभी भी अपने मूल आकार में नहीं लौटता है''

– अल्बर्ट आइंस्टीन

ये सभी बातें कक्षा में, स्कूल में, हर बच्चे के साथ होते रहने के लिए हममें भी उत्सुकता का निर्माण करने की आवश्यकता है। be curious about the curiosity.

कक्षा में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में बदलाव के लिये
नुस्खा नं. 5
बच्चे एक तिहाई समय में कोर्स पूरा करते हैं

बच्चों की सीखने की प्रक्रिया में उपलब्ध समय का पूरा उपयोग हो सके इसलिए यह विचार करना महत्वपूर्ण है कि बच्चे अपने निर्धारित पाठ्यक्रम को कम से कम समय में कैसे पूरा करेंगे। पाठ्यक्रम के लिए उपलब्ध समय और स्कूल के अतिरिक्त उपलब्ध समय का उपयोग करते हुए बच्चों को पाठ्यक्रम अधिक तेजी से पूरा करना आवश्यक है। इस प्रकार, शैक्षिक सत्र में उपलब्ध समय का उपयोग बच्चों को भविष्य के लिए आवश्यक अन्य शैक्षिक और पाठ्यक्रम के बाहर के पहलुओं को जानने के लिए करना चाहिए। इसके लिए अग्रलिखित बातें करना आवश्यक है :–

स्वाध्याय पर जोर

बच्चों की जिज्ञासा को गतिशील करके उनके सीखने की गति को बढ़ाना

समूह विधि का अधिकतम उपयोग

शिक्षण में प्रौद्योगिकी का उपयोग

अध्ययन परिणाम प्राप्त करने के लिए शिक्षकों द्वारा बेहतर नियोजन

पाठ्यपुस्तक की सीमा से परे जाने की क्षमता बढ़ाना

पाठ्यपुस्तक की सीमा के पार सीखने के लिए असीमित अवसरों की उपलब्धता

बच्चों को अधिक बातें सीखने के लिए प्रेरित करना।

अधिक सीखने के परिणामों से छात्रों को अवगत कराना।

बच्चों के इच्छा और कौशल के अनुसार, उनके सीखने के विभिन्न विकल्पों की उपलब्धता

कोर्स पूरा करने के बाद बचे दो–तिहाई समय में 21 वीं सदी के कौशल जैसे रचनात्मक सोच (Creative Thinking), तार्किक सोच (Critical Thinking), संवाद कौशल (Communication Skills), सहयोगात्मक सोच (Collaborative Thinking), संवेदनशीलता, (Compassion), विश्वास (Confidence) सीखने में लगाते हैं। साथ ही 21 वीं शताब्दी में जीते समय उपयोगी कौशलों को भी बच्चे सीख सकते हैं। साथ ही इसका उपयोग विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के तैयारी और अन्य शौक को पूरा करने के लिए भी किया जा सकता है। इसी के साथ के PISA संदर्भ में भी तैयारी करनी होगी।

कक्षा में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में बदलाव के लिये
नुस्खा नं. 6
सीखने की प्रक्रिया में प्रौद्योगिकी का उपयोग

शिक्षा प्रक्रिया में प्रौद्योगिकी के उपयोग के बारे में सोचते ही वाई–फाई से जुड़ी डिजिटल क्लास दिमाग में आता है। लेकिन प्रौद्योगिकी में तेजी से विकास बच्चों के सीखने में प्रौद्योगिकी के उपयोग के लिए पूरक साबित हो रहा है। उदाहरण के तौर पर मोबाइल ने सीखने को बहुत आसान बना दिया है। साथ ही, यह कहा जाता है कि पाठ्यक्रम सीमित होता है तथा वे बच्चों को भविष्य के चुनौतियों के लिए तैयार नहीं करते। भविष्य में क्या या किन बातों को करने की आवश्यकता होगी आज कोई नहीं बता सकता। ऐसी स्थिति में एक चीज अवश्य की जा सकती है और वह यह है कि बच्चों को तकनीक की मदद से कैसे सीखते हैं यह सिखाना। एक बार जब बच्चा 'सीखना कैसे है' यह सीख जाते हैं, तब बच्चे खुद से बहुत कुछ सीख सकते हैं। प्रौद्योगिकी खुद से सीखने का एक प्रभावी तरीका है।

इसका जीता जागता उदाहरण श्रीमती जी. मीनाक्षी राव जी का प्राथमिक शाला सिलतरा है। जहाँ के स्कूली बच्चों ने Google बोलो ऐप (Google Bolo) का उपयोग करना शुरू कर दिया। Google बोलो ऐप पढ़ना सीखने में मदद करता है। इस ऐप में दीया नाम की सहयोगी बच्चों को पढना सिखाती है। मोबाइल तकनीक के कारण बच्चे इसे पसंद करते हैं। कहने का मतलब यह कि बच्चों के पढने के लिए बहुत सारी किताबें उसमें उपलब्ध हैं। बाजार से खरीदकर इतनी पुस्तकें बच्चों को उपलब्ध नहीं कराना आसान नहीं है। अतः मोबाइल एक खजाना है। इसलिए बहुत सारी चीजें उपलब्ध हो सकती हैं यह हमें समझने की जरूरत है।

Google बोलो ऐप का उदाहरण लें तो उसपर बच्चे स्कोर करते हैं और वह स्कोर शिक्षक के माध्यम से पालकों के व्हाट्सएप ग्रुप पर साझा किया जाता है। परिणामस्वरूप, पूर्व में माता–पिता अपने बच्चों को मोबाइल नहीं देते थे, लेकिन जब उन्होंने आसपास के बच्चों के स्कोर देखे और समझ आया कि Google स्कोर होता है, तो पालकों ने अपने बच्चों को Google Bolo App का उपयोग करने के लिए मोबाइल देना शुरू कर दिया। नतीजतन, कुछ पालक जिनके पास एंड्रॉइड मोबाइल नहीं थे, उन्होंने एंड्रॉइड मोबाइल खरीदा और उसे अपने बच्चों को उपयोग करने के लिए दिया।

आपको समझना होगा कि एंड्रॉइड मोबाइल केवल एक मोबाइल नही है अपितु वह सीखने का एक खजाना है। कुछ ऐप को डाउनलोड करने के बाद इंटरनेट की आवश्यकता नहीं होती है. वह ऑफलाइन चलता है। ये सभी लाभ हमें मोबाइल के माध्यम से मिल रहे हैं और इसलिए हमें सीखने की प्रक्रिया में इनका उपयोग करना चाहिए। बहुत सारी अलग–अलग चीजें हैं मीडिया में उपलब्ध होती हैं इसलिए जब बच्चे मोबाइल का उपयोग करते हैं तो उन्हें चिकित्सक सोच की आदत में पड़ जाती है। साथ ही जिन चीजों के बारे में शिक्षक को पता नहीं है, जो चीजें शिक्षक नहीं कर सकते हैं वे प्रौद्योगिकी के माध्यम से की जा सकती हैं। शिक्षक को सब कुछ पता नहीं हो सकता या उसे सबकुछ आने की उम्मीद भी नहीं है, लेकिन बच्चे को भविष्य की बातें जानना है और अच्छी जिन्दगी जीना है, तो उसे वह जानना जरूरी है। YouTube] Google सर्च, या शिक्षा के लिए अलग–अलग ऐप इन सभी की मदद से बच्चों के सीखने की गति बढ़ने वाला है और हमें इसे बढ़ाने की आवश्यकता है। इसलिए शिक्षा में प्रौद्योगिकी का उपयोग आवश्यक है।

अध्याय पांच
व्हाटसअप/टेलीग्राम ग्रुप का निर्माण

एक दिवसीय प्रशिक्षण के बाद उसी दिन प्रशिक्षित शिक्षकों का व्हाटसअप/टेलीग्राम ग्रुप जरूर बनाया जाना चाहिए । क्योकि दूसरे दिन से शिक्षक अपनी कक्षा के गतिविधियों , सफलताओं को ग्रुप में शेयर कर सकें ।

व्हाटसअप/टेलीग्राम ग्रुप में क्या क्या शेयर करें ?

- अपनी सफलता को शेयर करे।
- कठिनाई और समस्याओं को शेयर करें तथा उन कठिनाईयों/समस्याओं का समाधान भी शेयर करें
- बच्चों को दी जाने वाली चुनौतियां भी शेयर करें ।
- चुनौतियों की सूची शेयर करें ।
- किसी भी पाठ को पढानें के पहले उस पाठ में दी जाने वाली चुनौतियां एवं पाठ से बाहर की चुनौतियां भी शेयर करें ।
- इन 6 बिन्दुओं पर कार्य करने के पश्चात अपने अनुभव भी लिख कर शेयर करें ।
- selfie with success शेयर करें ।
- जब आप उपरोक्त चीजें शेयर करेगें तों हम सभी शिक्षक एक दूसरे से सीखने सिखाने का काम कर अपनी कक्षा को समृद्व करेगें । और धीरे धीरे हमारा व्हाटसअप ग्रुप एक दूसरे से सीखने सिखाने वाले समाज और संस्कृति के रूप में परिवर्तित होता चला जायेगा ।

Selfie with Success

शिक्षा प्रणाली को देखते हुए एक शिक्षक के रूप में, यह महसूस किया जाता सकता है कि शिक्षा क्षेत्र या शिक्षक के बारे में नकारात्मक पहलू बहुत तेजी से फैलते रहते हैं। समाज में इसकी चर्चा होती है। लेकिन जिस हद तक नकारात्मक मामलों पर चर्चा होती है, उतनी ही शिक्षा के सकारात्मक पहलुओं पर नहीं होता है। जब इसके कारणों की तलाश करते हैं, तो पता चलता है कि शिक्षा प्रणाली एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में, मैं एक शिक्षक खुद को प्रचार से दूर रखता हूं और इसलिए मेरे द्वारा की जाने वाली सकारात्मक चीजें अन्य लोगों तक पहुंचती ही नही है। परिणामतः, अच्छी बातों का प्रचार प्रसार नही होता और बुरी बातें फैलते रहतीं हैं। सेल्फी विद सक्सेस को इन सभी चीजों के समाधान के रूप में देखा जा सकता है। सफलता आने पर सेल्फी सिर्फ एक पब्लिसिटी नहीं है, बल्कि शिक्षा प्रणाली के एक घटक के रूप में मेरा कर्तव्य है। मैं अच्छा करूं और उसमें सफलता आए तो वह मुझे दूसरों तक पहुंचानी चाहिए। इससे अन्य लोगों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरणा मिलती है। Selfie with Success के शानदार परिणाम आ रहे हैं। इसका उपयोग आपके सहयोगियों के सीखने के लिए हो रहा है।

शिक्षा प्रणाली में कितना भी प्रशिक्षण दें और कितने ही समय के लिए दें, इसकी सीमा अवश्य है. फिर भी प्रशिक्षण की आवश्यकता समाप्त नही होगी। उस आवश्यकता रोज पूरा करने काम Selfie with Success करता है। आप व्हाट्सएप के माध्यम से सेल्फी लेकर अपनी कक्षा की सफलता, अपनी कक्षा में आने वाले अनुभव Selfie with Success से साझा करते हैं। अन्य दोस्त आपकी सफलता और प्रक्रिया को समझते हैं और वे उसे अपनी कक्षा में भी क्रियान्वित करते हैं। अपनी कक्षा में क्या किया जाना चाहिए? आपको कौनसी गतिविधि करनी चाहिए? और क्या करने से सफलता प्राप्त होती है? ये सभी बातें को सेल्फी विद सक्सेस से पता चलते रहता है। इस लिहाज से Selfie with Success एक मजेदार गतिविधि है।

एक स्कूल की एक और मैडम का एक और उदाहरण है। कक्षा पहली की एक लड़की। सबकी सेल्फी ली गई। जब उसकी सेल्फी नहीं ली जा रही थी, तो लड़की ने कहा, मेरी सेल्फी लो। उसे बताया गया कि यदि वह अध्ययन करती है, तो उसकी भी सेल्फी ली जाएगी। वह उस रात दस बजे तक पढ़ती रही। अगली सुबह, वह आई और बोली , ''आपने जो कुछ भी कहा वह मैंने पूरा किया है। अब अपने साथ मेरी सेल्फी लीजिये। खास बात है कि, यह लड़की पहली कक्षा की छात्रा थी। बच्चों को शिक्षकों के साथ सेल्फी लेना अच्छा लगता है। शिक्षकों को यह समझने की आवश्यकता है कि नकारात्मक चीजों का प्रचार करने की आवश्यकता नहीं पडती। लेकिन सकारात्मक चीजों का जानबूझकर प्रचार किया जाना चाहिए। इसके लिए व्हाट्स ऐप ग्रुप एक प्रभावी साधन है। शिक्षकों को शैक्षणिक उपलब्धि पर समूहों में सेल्फी साझा करना चाहिए। इससे अन्य शिक्षकों को काम करने दिशा मिलती है। कक्षा के बच्चों को प्रेरणा मिलेगी और साथ ही साथ शिक्षा में हो रही अच्छी चीजों का समाज में प्रचार–प्रसार होगा। सब मिलाकर, सकारात्मक माहौल बनाने के लिए Selfie with Success बहुत उपयोगी हो सकता है।

एक रोचक उदाहरण। दैनिक अभ्यास के बाद रोज बच्चों की सेल्फी लेते हुए देखकर पहली कक्षा की एक छात्रा पायल ने एक पेज भर लिखा और मुझे दिखाया। मैंने कहा कि ठीक है। और वह बैठ गई। एक बार फिर उसने मुझे एक से सौ तक की संख्याएँ लिखकर दिखाईं। मैंने उसे बहुत अच्छा कहा। वह मुस्कुराई और बैठ गई। थोड़ी देर बाद उसने एक अच्छा पट्टी पर फूल बनाया और मुझे दिखाया। मैंने उससे कहा, ओह, आज, पायल बहुत अध्ययन कर रही है। वह मुस्कुराई और फिर से बैठ गई। बाद में बीच की छुट्टी हुई। उस छुट्टी में भी उसने बाहर बोर्ड पर नंबर लिखकर दिखाया। मैंने उसे बहुत बढिया very good कहा। वह हंसी और अपने जगह पर जाकर बैठ गई। 4 बजे वह मेरे पास आई और कहा, 'शिक्षक, मैंने आज खूब पढ़ाई की है। मेरे साथ सेल्फी कब लेंगीं। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। फिर मैंने उसके साथ सेल्फी ली। वह बहुत खुश हुई। मुझे भी खुशी हुई।

व्हाट्स ऐप ग्रुप में शिक्षक की भूमिका –

शिक्षकों का watsup/telegram group ग्रुप बनाना।

ग्रुप की हर पोस्ट को ध्यान से पढें। व्हाट्स ऐप ग्रुप के लिए कम से कम एक से डेढ़ घंटा समय रोज दें।

अपनी उपलब्धियों को समूह में साझा करना।

कक्षा की दैनिक अध्यापन या कक्षा के क्रियाकलाप समूह में साझा करना।

watsup/telegram group में होने वाली चर्चा में भाग लें।

पोस्ट लिखना कभी कभी बड़ा कम लगता है। इस कम को सरल करने के लिए Speech Note जैसे ऐप का उपयोग करें।

Selfie with Success का उपयोग करके बच्चों को प्रेरित करें

अध्याय 6

चुनौती निर्माण में रूब्रिक्स

सामान्यतः रूब्रिक्स की अवधारणा को मूल्याकंन कार्य से जोडकर देखा जाता है । इसका कारण यह है कि रूब्रिक्स का उपयोग मूल्याकंन को वैध ,विश्वसनीय एवं वस्तुपरक बनाता है । रूब्रिक्स कार्य प्रदर्शन के विभिन्न स्तरों का वर्णन करता है । और उन्हें छात्र तथा शिक्षक के लिए स्पष्ट करता है । इसमें सबसे पहले आपको ज्ञान के स्तरों एवं उसकी समझ की पहचान करनी होती है । जिन्हें प्रदर्शित करने की छात्र को जरूरत है । इसका अर्थ यह है कि जो प्रमाण है कि छात्र निर्धारित कौशल , सीखने के प्रतिफल सीख चुकें हैं इससे सफलता के मापदण्ड बनायें जातें है। रूब्रिक्स इन्हीं मापदण्डों का विभिन्न स्तरों पर संकलन होता है ।

चुनौतियों के निर्माण के दौरान यदि ज्ञान एवं समझ की पहचान कर मापदण्ड बनाया जाए तथा इन मापदण्डों के आधार पर चुनौती को डिजाइन किया जाए तो संभवतः चुनौतियों की वैधता ,विश्वसनीयता एवं वस्तुपरकता बढ सकती है। इसका एक फायदा यह भी हो सकता है कि व्यापक क्षेत्र में चुनौतियों की एकरूपता भी स्थापित होगी । यद्वपि यह एकरूपता ज्ञान एवं कौशल स्तर पर चुनौतियों की दिशा तय करने में ही होगी । यदि चुनौति शिक्षक स्वयं निर्मित करेगें तो परिवेशिय भिन्नता रहेगी । यदि हम एक उदाहरण लेकर इसको समझें तो किसी भी मूल्याकंन कार्य को डिजाइन करने से पहले हम उन मापदण्डों का चयन करतें है जो मूल्याकंन के आधार होतें है। प्रत्येक मापदण्ड में उपलब्धि के विभिन्न स्तरों को बाटना होता है ताकि शिक्षक छात्र के कार्य प्रदर्शन का इन स्तरों के आधार पर मूल्याकंन कर सकें ।

उदाहरण के लिए यदि मूल्याकंन के लिए प्रश्न पत्र लेखन है तो इसका रूब्रिक्स निम्नानुसार हो सकता है ।

उपलब्धि स्तर → मूल्यांकन के मापदण्ड ↓	A	B	C	D
प्रारूप	निर्धारित पत्र का प्रारूप सटीक है।	निर्धारित पत्र प्रारूप के बहुत करीब है।	निर्धारित पत्र प्रारूप जैसा कुछ कुछ है।	निर्धारित पत्र प्रारूप में नहीं है।
पत्र की विषय वस्तु	पत्र की विषय वस्तु सटीक एवं उपयुक्त है ।	पत्र की विषय वस्तु उपयुक्त के करीब है ।	पत्र की विषय वस्तु कुछ कुछ उपयुक्त है।	पत्र की विषय वस्तु उपयुक्त नहीं है ।
भाषा	पत्र में प्रयुक्त भाषा सटीक एवं त्रुटि रहित है ।	पत्र में प्रयुक्त भाषा लगभग सटीक एवं त्रुटि रहित है।	पत्र में प्रयुक्त भाषा में त्रुटि है एवं औसत है।	पत्र में प्रयुक्त भाषा औसत से नीचे है एवं त्रुटियां काफी मात्रा है ।

इसी प्रकार चुनौती निर्माण के दौरान यदि शिक्षकों के पास पूर्व निर्धारित मापदण्ड हो तो प्रत्येक चुनौती अधिक वैध एवं प्रामाणिक हो जाती है । चूंकि मूल्याकंन एवं चुनौती निर्माण अलग अलग प्रकृति के कार्य है अतः उपलब्धि के स्तरों को चुनौती निर्माण की प्रकिया में मुक्त रख सकतें है । इस प्रकार चुनौती निर्माण के रूब्रिक्स में मूलभूत मापदण्डों की हम एक चेकलिस्ट बना सकतें है।

चुनौती निर्माण का रूब्रिक्स

कक्षा ..... विषय..... स्तर.....

चुनौती के मापदण्ड	है/नहीं है
1. विषय वस्तु की अवधारणा 2. व्यावहारिक जीवन से संबद्वता 3. बच्चों के स्तर से एक स्तर आगे 4. सीखने के प्रतिफल हेतु अभ्यास 5. पाठ्यवस्तु का विस्तार 6. याद करने/रटने के स्थान पर बनाने पर जोर 7. उपलब्ध संसाधनों के उपयोग की संभावना 8. 6 सी के कौशलों में से किसी एक का समावेश	

यदि उपरोक्त 8 में से 6 मापदण्डों पर नही है उत्तर हो तो उस चुनौती को खारिज कर नई चुनौती डिजाइन करें । अथवा चुनौती में आवश्यक परिवर्तन करें । इस प्रकार चुनौती निर्माण हेतु मार्गदर्शक मापदण्ड तो निर्धारित रहेगें । किन्तु चुनौती की भाषा, प्रकृति ,स्वरूप एवं परिवेशिय इनपुट के लिए शिक्षक स्वतंत्र होगें । इस तरह उपरोक्त रूब्रिक्स का प्रयोग कर कोई भी चुनौती का निर्माण कर सकता है ।

चुनौतियों के मापदण्ड को विषयवार एवं कक्षावार अलग अलग बनाने के स्थान पर विषयों को समेकित कर एवं शिक्षण व्यवस्था को स्तरों में बाटकर मापदण्ड बनाये जा सकतें है । जैसे प्राथमिक स्तर ,उच्च प्राथमिक स्तर एवं माध्यमिक स्तर । जैसे जैसे चुनौतियां आगे बढती जायेंगी मापदण्ड असर केन्द्रित से दें केन्द्रित एवं दें केन्द्रित से चपें केन्द्रित होती जायेगीं ।

चुनौतियों को प्रयोग में लाने वाले शिक्षको के लिए यह भी सुझाव है कि अगले स्तर पर यह रूब्रिक्स दो हिस्सों में बनाया जा सकता है । पहले मुख्य भाग में रूब्रिक्स के ऐसे मापदण्ड होगें ,जो चुनौती पूर्ण होने पर छात्र के प्रदर्शन के आकलन के दौरान प्रयुक्त होगें । इस प्रयोजन हेतु सतत् एवं व्यापक मूल्याकंन में प्रस्तावित रूब्रिक्स में आंशिक परिवर्तन कर उनका उपयोग किया जा सकता है ।

इस प्रकार इन रूब्रिक्स का प्रयोग कर हम चुनौतियों के माध्यम से बच्चों के द्वारा सीखने को एवं सीखने के पश्चात उनके सीखने के मूल्याकंन को अधिक प्रमाणिक कर सकतें है ।

अध्याय सात

प्रशिक्षण की कार्य योजना

कोई भी जिला, विकासखंड अथवा संकुल इस प्रशिक्षण को आयोजित कर सकता है। यह प्रशिक्षण एक दिवसीय होगा। प्रशिक्षण में महत्वपूर्ण 17 बिंदूओं को भलीभांति समझाने पर जोर होगा तथा 6 बिंदूओं से विद्यालयों में कार्य प्रारंभ होगा। ध्यान देने की बात है कि इसमें कोई भी बुनियादी ढांचा में बदलाव का जिक्र नही है। सिर्फ कक्षा–कक्ष के भीतर बदलाव के 6 नुस्खों को अपनी कक्षाओं में प्रयोग करना है तथा टेक्नालीजी का उपयोग किया जाना है।

प्रशिक्षण के बाद निम्न प्रक्रिया के अनुसार फॉलोॲप होगा :–

1) शिक्षकों के एक दिवसीय प्रशिक्षण उपरांत व्हाटसएप एवं टेलीग्राम ग्रुप बनाना, ये बनाते समय निम्न बातों पर चर्चा जरुरी है :–
   - अ) इस ग्रुप में क्या–क्या भेजें, कैसे भेजें और क्या नही भेजें की स्पष्ट जानकारी देवें।
   - ब) इस ग्रुप से शिक्षा की प्रक्रिया को कैसे आगे बढ़ायें, जरुर चर्चा करें।
   - स) यदि एक बच्चा भी सीखता है तो उसको भी शेयर करें।
   - द) सेल्फी विथ सक्सेस का महत्व जरुर बतायें।
   - य) उपलब्धि एवं सफलता के साथ–साथ कठिनाईयों और समस्याओं को भी शेयर करने के महत्व से अवगत करायें।
   - र) सफलता/अनुभव को कैसे लिखें ? अनुभव को लिखना क्यों जरुरी है इस पर भी चर्चा करें।
2) ग्रुप में शेयरिंग शुरु होने के बाद जो शिक्षक अच्छा कर रहे हैं, उनके विद्यालय का दूसरे शिक्षकों द्वारा दौरा किया जाना।
3) अच्छे काम करने वाले शिक्षकों द्वारा अन्य शिक्षकों से विडीयों अथवा आडियों कांफ्रेसिंग अथवा जूम एप से बात कराना, उन्होने ये कैसे किया और कितना आसान है इत्यादि पर।
4) अच्छे शिक्षकों के अनुभवों को लिखने हेतु प्रेरित करना और प्रस्तावित करना।
5) प्रत्येक 15 दिवस में एक बैठक आयोजित करना। बैठक के विभिन्न तरीके हो सकते हैं :–
   - अ) संकुलवार बैठक।
   - ब) तेजी से आगे बढ़ रहे शिक्षकों की बैठक।
   - स) मध्यम गति से आगे बढ़ रहे शिक्षकों की बैठक।
   - द) कहीं भी कभी भी बैठक, जिसे कार्नर सभा कहेंगें।
   - य) चर्चा का विषय हमेशा सफलता, समस्या, चुनौती और नया कुछ करनें पर केन्द्रित हो ।

प्रशिक्षण सत्र निम्नवत होगें :–

प्रथम सत्र	:–	मूल्यांकन के 3 स्तर पर चर्चा।
द्वितीय सत्र	:–	शैक्षिक समस्या हल करने के 4 स्तर।
तृतीय सत्र	:–	पढ़ाई के तरीकों में बदलाव के 6 नुस्खे।
चतुर्थ सत्र	:–	शिक्षकों को मिली सफलताओं को साझा करना।
पंचम सत्र	:–	सफल क्रियान्यवन की योजना और व्हॉटसएप ग्रुप का निर्माण।
षष्ठम सत्र	:–	समूह चर्चा । समूह चर्चा के बिंदू निम्नानुसार होगें :–

समूह चर्चा के बिंदु निम्नानुसार होगें :–

1) बच्चों को स्वयं सीखने के लिये प्रेरित करना क्यों जरुरी है ?
2) चुनौतियां कैसे दे और चुनौतियों की सूची तैयार करना क्यों जरुरी है ?
3) विषय मित्र कैसे बनाये और विषय मित्र तैयार करने के लिये शिक्षक को क्या–क्या करने पड़ेगें ?
4) व्हॉटसएप/टेलीग्राम ग्रुप में शिक्षकों को निरंतर सक्रिय करने के क्या–क्या तरीके होगें ?
5) बच्चों को मोबाईल से सीखने सिखाने के लिये कौन–कौन से ऐप की जानकारी आपको है ?
6) एक तिहाई समय में सिलेबस पूरा होने के बाद बच्चों के समक्ष और क्या–क्या चुनौती रखेंगे ?
7) सेल्फी विथ सक्सेस रोज डालना क्यों जरुरी है, और इसके क्या–क्या फायदे हैं ?

इस प्रशिक्षण से संबंधित अकादमिक सहायता हेतु निम्नांकित स्त्रोत व्यक्तियों से संपर्क किया जा सकता है :–

1)	सुनील मिश्रा	–	9302838549
2)	द्रोण साहू	–	8770580115
3)	शेषशुभ वैष्णव	–	7049634150
4)	रवि नारायण त्रिपाठी	–	9752991011
5)	मीनाक्षी राव	–	9039437277
6)	मनीष मिश्रा	–	9926182707
7)	आर.के.जलतारे	–	9770401368

परिशिष्ट
चुनौतियों की सूची

कक्षा :– दूसरी
विषय :– हिन्दी
पाठ :– आई एक खबर

पाठय पुस्तक से दी जाने वाली चुनौती	पाठय पुस्तक से बाहर की चुनौती
1. 'दिल्ली'से मिलते–जुलते शब्दों की सूची कौन–कौन बना सकते हैं? जैसे– बिल्ली,खिल्ली।	1. टिड्डे ने हाथी को क्यों मारा होगा? क्या ऐसा सम्भव है?अपने समूह में चर्चा करके अपनी बात सबको कौन कौन बता सकते हैं?
2. दिए गए शब्दों के अर्थ अपनी भाषा में कौन –कौन बता सकते हैं? बताओ। शब्द–समंदर, खारा,लात ।	2. हाथी अपनी सूँड़ का उपयोग किन– किन कामों में कर सकता है? कौन कितने काम पता करके आ सकता है?
3. दिए गए अक्षर ग्रिड से कौन कितने नए शब्द बना सकता है?	3. खबर पहुँचाने के लिए आजकल कौन–कौन सी टेक्नोलॉजी या एप्स का उपयोग किया जाता है और कैसे?कक्षा में सबको कौन कौन बता सकते हैं?बताओ।
4. पाठ को हाव –भाव के साथ पढ़कर कक्षा में कितने लोग सुना सकते हैं?	4. तुम्हारे अनुमान से सबसे छोटा और सबसे बड़ा जीव क्या हो सकता है? कौन सबसे छोटे और सबसे बड़े जीव के बारे में बता सकता है?सोचकर उसके बारे में बताओ।
5. पूरी पुस्तक में आए संयुक्त अक्षरों वाले सबसे अधिक शब्दों को कौन छाँट सकता है? जैसे–मक्खी ।	5. इस कविता को कहानी बनाकर कक्षा में कौन सुना सकता है?
6. शब्दों की रेल बनाओ। कौन कितने डिब्बे बना सकता है?जैसे–मटका–कागज–जग	6. इस कविता को नाटक के रूप में बदल कर अपनी कक्षा में कौन कौन खेल सकते हैं?
7. बंदरों को मटके के अंदर देखकर हाथी क्यों रोया होगा,अपने समूह में चर्चा करो।	7. इस कविता में हाथी को रोना आया था।तुम्हें कब–कब रोना आया है? कक्षा में अपनी बात कौन शेयर कर सकता है?
8. बिंदी वाले शब्दों(जैसे– अंदर) के रूप बदलकर अन्दर(इस तरह) लिखो।कौन कितने शब्दों को बदल सकता है?	8. इस पाठ में कई जानवरों के नाम आए हैं। तुमने कौन–कौन से जानवर देखे हैं (वास्तव में या टीवी में भी), तुम्हें अगर लगता है कि इनमें से किसी जानवर को तुम्हारे साथियो को बताना चाहिए तो उसके बारे में पूरी कक्षा को बताने वाला कौन है?
	9. इस पाठ में तुम्हें कौन–कौन से शब्द नए लगे,जिनके अर्थ तुम्हें नहीं मालूम,उनकी सूची बनाकर उनके अर्थ अपने शिक्षक से पूछो।सबसे अधिक नए शब्द कौन पूछता है?देखते हैं।
	10. इस पाठ को अपने हिसाब से किसी अलग लय–ताल में स्वतंत्र मनमर्जी धुन में पढ़कर कितने लोग सुना सकते हैं?

कक्षा :– तीसरी
विषय :– हिन्दी पाठ :– जंगल में स्कूल

पाठय पुस्तक से दी जाने वाली चुनौती	पाठय पुस्तक से बाहर की चुनौती
1) कौन–कौन जानवरों के नाम बताकर उनकी आवाजें निकाल सकता है ?	1) जंगल में स्कूल हो सकता है ? यदि हॉ तो किसे टीचर रखते और क्यो ?
2) खुशी–खुशी, गाते–गाते, इधर–उधर जैसे मिलते जुलते शब्द बनाकर उनके वाक्यों में प्रयोग कौन–कौन कर सकता है ?	2) बब्बन स्कूल से न भागे, इसके लिये आप क्या करते ?
3) कौन, क्यों, कैसे, कब वाले सबसे अधिक प्रश्न कौन बना सकता है ?	3) जब आपको शाबासी मिलती है, तब आप सबसे पहले किसे बताते हैं और कैसे बताते हैं ?
4) बब्बन स्कूल क्यों नही जाना चाहता था ?	
5) ''दार'' प्रत्यय लगाकर सबसे अधिक शब्द कौन बना सकता है ?	
6) इस पाठ के पात्रों का अभिनय कौन–कौन कर सकता है ?	

कक्षा :– तीसरी
विषय :– पर्यावरण पाठ :– आओ नक्शा बनायें

पाठय पुस्तक से दी जाने वाली चुनौती	पाठय पुस्तक से बाहर की चुनौती
1) इस पाठ को स्वयं से पढ़कर कौन समझ सकता है ?	1) इस नक्शे में कौन–कौन अपना जिला, ब्लॉक और गांव खोजकर दिखा सकता है ?
2) पाठ के दिये प्रश्नों के अलावा और सबसे अधिक प्रश्न कौन बना कर ला सकता है ?	2) घर से स्कूल तक आने में रास्ते में आने वाले भवनों को कौन सबसे पहले लिखकर दिखा सकता है ?
3) नक्शा क्या होता है, यह कौन बता सकता है ?	3) नक्शे में नदी, नहर, अस्पताल, मंदिर, ग्राम पंचायत, विद्यालय के संकेत चिन्ह कौन–कौन दर्शा सकता है ?
4) पाठ में दिये संकेत चिन्हों के जैसे हीं आप अपने आस–पास के चीजों के लिये कौन–कौन से संकेत चिन्ह बनाकर दिखा सकते हैं ?	4) किसी राहगीर द्वारा पता पूछने पर उसे मौखिक रुप से कौन रास्ता बता सकता है ?
5) कौन–कौन अपने गांव का नक्शा बना सकते हैं ?	

कक्षा :– तीसरी
विषय :– गणित पाठ :– मुद्रा

पाठय पुस्तक से दी जाने वाली चुनौती	पाठय पुस्तक से बाहर की चुनौती
1) कौन इस सिक्के या नोट को पहचान कर बता सकता है ?	1) नोटों और सिक्कों में क्या–क्या अंकित है, इसे कौन–कौन बता सकता है ?
2) सिक्कों और नोटों के प्रकारों की सूची कौन–कौन बना कर ला सकता है ?	2) 200 रु. में 1रु., 2, 5रु.,10रु. के कितने सिक्के प्राप्त होगें, कौन–कौन बता सकते हैं ?
3) पैसे किस–किस काम आता है, इसे कौन–कौन बता सकता है ?	3) 10 रु. के 5 नोट व 5 रु. के 10 नोट मिलकर कितने रु. प्राप्त होगें? कौन–कौन बनता सकते हैं ?
4) कौन–कौन नोटो का आकार बना कर लायेंगें ?	

कक्षा :– चौंथी
विषय :– गणित पाठ :– भिन्न

पाठय पुस्तक से दी जाने वाली चुनौती	पाठय पुस्तक से बाहर की चुनौती
1) इस पाठ को कौन–कौन स्वयं से पढ़कर समझ सकता है ?	1) 100 पन्ने की किताब का तीन चौथाई पन्ना कौन गिनकर बता सकता है ?
2) इसे दो बराबर, तीन बराबर और चार बराबर भागों में कौन–कौन बांट सकता है ?	2) इस बाल्टी में आधा, एक तिहाई, एक चौथाई हिस्से में पानी भरकर कितने बच्चे बता सकते हैं ?
3) छायांकित भाग का हिस्सा कितना है, कौन–कौन बता सकता है ?	
4) एक छोटा भिन्न एवं एक बड़ा भिन्न चित्र रुप में कौन–कौन बनाकर दिखा सकता है ?	

कक्षा :– पांचवी
विषय :– हिन्दी पाठ :– राष्ट्र प्रहरी

पाठय पुस्तक से दी जाने वाली चुनौती	पाठय पुस्तक से बाहर की चुनौती
1) 26 जनवरी क्यों मनाते हैं ? कौन–कौन बता सकता है ?	1) हमारे देश में और कौन–कौन से राष्ट्रीय पर्व मनाये जाते हैं ? लिखकर लाईये।
2) भारत के पड़ोसी देशों के नाम कौन–कौन बता सकता है ?	2) थल सेना के जवान मटमैला हरा रंग की वर्दी हीं क्यों पहनते हैं ? कौन बता सकता है ?
3) प्रत्येक मौसम की विशेषता कौन–कौन बता सकता है ?	3) सेना देश की सामीओं की सुरक्षा करती है, तो राज्यों की सुरक्षा कौन करता है ? कौन बता सकता है ?
4) '' ' '' एवं '' ^ '' चिन्हों से युक्त शब्दों का निर्माण कौन–कौन कर सकता है ?	4) क्या आपके गॉव में यो आसपास सेना में कोई नौकरी करता है ? यदि हां तो उसका विवरण कौन बता सकता है ?
5) सबसे अधिक वैकल्पिक प्रश्न कौन बना सकता है ?	5) क्या सेना के जवान देश की सुरक्षा के अतिरिक्त प्राकृतिक आपदाओं में भी मदद करते हैं ? यदि हां तो वर्ष 2019 में कौन–कौन सी प्राकृतिक आपदाओं में सेना ने मदद की ? इसे लिखकर कौन–कौन ला सकता है ?

कक्षा :– पांचवी
विषय :– अंग्रेजी
पाठ :– Haldi's Adventure

पाठय पुस्तक से दी जाने वाली चुनौती	पाठय पुस्तक से बाहर की चुनौती
1) कठिन शब्दों के अर्थ कौन–कौन लिख सकते है ?	1) जिराफ कहॉ रहता है ? वहॉ और कौन–कौन से जानवर पाये जाते हैं ? उनका नाम लिखकर कौन–कौन दिखा सकते है ?
2) Past Action Words को Present Action Words में बदलकर कौन–कौन लिख सकते है ?	2) कौन–कौन सबसे अधिक विशेषण बना सकते हैं ?
3) आप सब घर से विद्यालय आते समय जो वस्तुयें देखतें हैं, उनके नाम अंग्रेजी में लिखकर कौन–कौन दिखा सकते हैं ?	3) जानवरों पर सबसे अच्छी कविता कौन–कौन कक्षा में सुना सकते है ?
4) इस पाठ में जिराफ के बारे में कौन–कौन सी बातें बताई गई हैं ? उन्हें लिखकर कौन दिखा सकता है ?	4) I must eat food, इस प्रकार के वाक्य कौन सबसे अधिक बना कर ला सकते है ?
5) इस पाठ को सबसे पहले कौन पढ़ सकता है ?	5) I would like to talk you. I would like to read story book. इस प्रकार के वाक्य कौन सबसे अधिक बना कर ला सकते है ?
6) पाठ को पढ़ने के बाद प्रश्नोत्तर कौन–कौन ढूंढकर लिख सकते हैं ?	

कक्षा :– छठवीं
विषय :– गणित
पाठ :– वृत्त

पाठय पुस्तक से दी जाने वाली चुनौती	पाठय पुस्तक से बाहर की चुनौती
1) कक्षा–कक्ष में वृत्त के आकार की कितनी वस्तुयें दिखाई दे रही हैं ? कौन–कौन बता सकते हैं ?	1) अपने आसपास के वृत्ताकार वस्तुओं की सर्वाधिक सूची कौन–कौन लिखकर ला सकता है ?
2) प्रकार की सहायता से अलग–अलग माप की सबसे ज्यादा वृत्त कौन–कौन बना सकता है ?	2) कितने लोग सायकल के पहिये की लंबाई, परिमाप माप कर ला सकते है ?
3) वृत्ताकार कागज की आकृति के माध्यम से कौन–कौन त्रिज्या और व्यास निकाल सकते हैं ?	
4) अलग–अलग माप के सर्वाधिक वृत्त कौन–कौन बना सकते हैं ?	
5) कौन–कौन परिमाप और व्यास का अनुपात निकाल सकते हैं ?	

कक्षा :– सातवीं
विषय :– गणित पाठ :– बीजीय व्यंजक पर संक्रियायें

पाठय पुस्तक से दी जाने वाली चुनौती	पाठय पुस्तक से बाहर की चुनौती
1) प्रस्तावना को पढ़कर व समझकर स्वयं से उसी प्रकार के उदाहरण सबसे अधिक कौन–कौन बनाकर बतायेंगें ?	1) स्वयं के द्वारा उपयोग की जाने वाली वस्तुओं को बीजीय व्यंजकों के रुप में लिखकर कौन–कौन ला सकते हैं ? जैसे– पेंट–शर्ट, पुस्तक–कापी आदि
2) प्रस्तावना को पढ़कर कौन सबसे अधिक बीजीय व्यंजक के उदाहण बना सकता है ?	2) आपके घर के कुल बैल एवं भैंस की संख्या को बीजीय व्यंजक के रुप में कौन–कौन बता सकते हैं ?
3) सजातीय व्यंजको के योग कौन–कौन करके बता सकता है ?	3) घर की महिलायें एवं पुरुषों की संख्या को बीजीय व्यंजक के रुप में कौन–कौन दर्शा सकते हैं ?
	4) कितने लोग दो परिवार के महिला एवं पुरुषों की संख्या बीजीय व्यंजक के माध्यम से कुल महिला एवं पुरुषों की संख्या निकाल कर दिखा सकते हैं ?

कक्षा :– आठवीं
विषय :– गणित पाठ :– समीकरण

पाठय पुस्तक से दी जाने वाली चुनौती	पाठय पुस्तक से बाहर की चुनौती
1) कौन सबसे ज्यादा समीकरण के प्रयन बना कर दिखा सकते हैं ?	1) आपके जन्मदिन की पार्टी में सम्मिलित लोगों के सिर एवं पैरों की कुल संख्या 300 थी तो कुल कितने लोग पार्टी में थे ? कौन–कौन बता सकता है ?
2) सबसे अधिक इबारती समस्या कथनों का उपयोग करके कौन–कौन प्रश्न बना सकते हैं ?	2) आपके मोहल्ले में खरगोश और मुर्गियों के पैरों की संख्या 120 है और सिर की संख्या 48 है, तो बतलाईये कितने खरगोश और कितनी मुर्गियां हैं ?
3) इबारती समस्या के कथनों को गणितीय कथन में रुपांतरित कर सकते है ?	

कक्षा :– आठवीं
विषय :– गणित पाठ :– सांख्यिकी (समांतर माध्य)

पाठय पुस्तक से दी जाने वाली चुनौती	पाठय पुस्तक से बाहर की चुनौती
1) प्रस्तावना को पढ़कर कितने लोग बतायेंगे कि समांतर माध्य क्या हैं ?	1) पाठ में दिये गये उदाहरण के अतिरिक्त औसत संबंधी सबसे अधिक अन्य उदाहरण कौन–कौन लिखकर ला सकता है ?
2) अर्धवार्षिक परीक्षा में सभी विषयों के प्राप्तांको का औसत कौन–कौन निकाल कर दिखा सकते हैं ?	2) क्रियाकलाप एक के अनुसार अपने परिवार के सदस्यों के औसत आयु कौन–कौन बनाकर ला सकता है ?
3) आपकी कक्षा में पढ़ने वाले बच्चों की औसत आयु कौन–कौन बता सकते है ?	3) माह जुलाई से नवंबर तक अपनी स्वयं की औसत मासिक उपस्थिति कौन–कौन निकाल सकता है ?
	4) इस सप्ताह में रात में सोने का औसत समय निकाल कर कौन–कौन बता सकता हैं ?

अनुभवों की श्रृंखला

मैं एलन साहू सहायक शिक्षक, शासकीय आदर्श प्राथमिक शाला बघिमा में पदस्थ हूं। हमारा स्कूल उन चुनिंदा शासकीय स्कूलों में से एक है जिसे गत वर्ष कक्षा 1 में अंग्रेजी माध्यम सीबीएसई बोर्ड में अध्यापन की शुरुआत की गई। इस वर्ष कक्षा 1 और 2 में अंग्रेजी माध्यम सीबीएसई बोर्ड का कोर्स संचालित है। मेरी कक्षा में एक समस्या थी कि सभी बच्चे होमवर्क करके नहीं लाते थे, इस कारण उनका घर में पढ़ाई का अभ्यास कम होता था और भी स्कूल में भी दूसरे बच्चे होमवर्क नही करने वाले बच्चे पिछड़ जाते थे।

अंतरराष्ट्रीय शिक्षा पर संगोष्ठी के पश्चात मैं बच्चों को यह चुनौती देना शुरू किया कि कौन बच्चा सबसे अधिक पेज लिख कर घर से बतौर होमवर्क लाएगा? और सबसे अधिक पेज लिख कर जाने वाले 3 बच्चों के लिए तालियां बजाई जाएंगी। जो बच्चे 3– 4 पेज लिख कर लाते थे वह धीरे–धीरे 9 – 10 पेज और उसके बाद 16 से 20 पेज प्रतिदिन इंग्लिश का होमवर्क कर लाने लगे। जो बच्चे कभी होमवर्क कर नहीं लाते थे वह भी अब प्रतिदिन कम से कम चार से पांच पेज होमवर्क करने लगे। यह मेरे लिए आश्चर्य का विषय था क्योंकि यह बड़ी कक्षाओं के नहीं बल्कि कक्षा 1 और 2 के बच्चे थे। कक्षा 1 की एक बच्ची एक दिन 21 पेज होमवर्क लिख कर लाई और उसने बताया कि चूंकि उसका कापी खत्म हो गई है इसलिये वह और नहीं लिख पाई। यह मेरे लिए सुखद आश्चर्य रहा।

इसके पश्चात में कक्षा 2 के बच्चों को कक्षा में ही स्पीकिंग एबिलिटी डिवेलप करने के लिए अंग्रेजी के छोटे वाक्य बनाकर बोलने का चुनौती दिया। मसलन एक चित्र दिखाकर बच्चों को यह पूछना What can you see?

इसके बाद बच्चे There is a--- There are--- से वाक्य बना बना कर मुझे उत्तर देने लगे। इस प्रकार की गतिविधि से न केवल बच्चे नए–नए वाक्य आसानी से बनाने लगे बल्कि वे हिंदी और अंग्रेजी मिक्स करके भी वाक्य बनाने लगे। क्योंकि चुनौती देने से वे एक–दूसरे से आगे बढ़ने का हमेशा प्रयास करते हैं। पुस्तक में उपस्थित कोई भी चित्र दिखाकर बच्चों को इंग्लिश सेंटेंस बोलने की चुनौती देने से बच्चे कई बार ऐसे वाक्य भी बनाते थे जिसके प्रति मैं स्वयं भी अनभिज्ञ था।

ठीक इसी प्रकार क्लास के अंदर की वस्तुओं को दिखाकर This is a--- से वाक्य बनाने एवं उसे बोलने की चुनौती दी। जिसमें एक एक बच्चा 50– 60 वाक्य न केवल बोल रहा था बल्कि दूसरे दिन गृह कार्य में भी लिखकर ला रहा था।

This is a--- से प्रैक्टिस होने के बाद मैंने बच्चों को कक्षा से बाहर लाकर दूर की वस्तुओं को दिखाकर That is a--- से वाक्य बनाना बताया और उन्हें अधिक से अधिक वाक्य बनाने की चुनौती दिया। इस पर भी बच्चों ने आसानी से 40– 50 सेंटेंस बना लिये।

इसके बाद मैंने कक्षा 2 के बच्चों को पहले 1 से 10 तक फिर 11 से 20 तक, one, two, three , four की स्पेलिंग याद करने की चुनौती दिया। बच्चों ने इस चुनौती को भी स्वीकार किया और बिना किसी दबाव

के वे स्वयं स्पेलिंग याद कर आने लगे। एक बच्चे ने मुझे बताया कि वह स्कूल आते और जाते समय स्पेलिंग बोल–बोल कर आता था और इस प्रकार उसने स्पेलिंग याद कर लिया।

इसके बाद मेरा ध्यान साइट वर्ड चार्ट पर गया।

sight वर्ड चार्ट में This , that, we , she , it, are जैसे वर्ड्स होते हैं जिनका अधिकतर उपयोग किताबों और बोलचाल में होता है। ऐसे 40 – 50 साइट वर्ड्स को बच्चे 2 दिन में ही पढ़कर रिकॉग्नाइज करने में सफल रहे।

मेरा अनुभव यह रहा है कि बच्चों को चुनौती देने पर उनके सीखने की गति में तीव्र विकास हुआ है।

कमजोर बच्चों पर क्या प्रभाव हुआ ?

कमजोर बच्चों को सिखाने हेतु मैंने उनके लिए 1–1 सब्जेक्ट फ्रेंड नियुक्त कर दिया और उन सब्जेक्ट फ्रेंड को भी यह चुनौती दिया कि कौन अपने स्टूडेंट को सबसे पहले सिखा सकता है। ऐसा चुनौती देने से subject friend बना बालक उस कमजोर छात्र को सिखाने का पुरजोर कोशिश करता है। यह एक्टिविटी करने से कमजोर बच्चों को फायदा हुआ और साथ ही साथ होशियार बच्चों का भी फायदा हुआ और सभी बच्चे तेजी से सीखने लगे। कक्षा 1 में मैंने यह अनुभव किया कि कई बच्चे चुनौती पूरा करने में इसलिए भी ज्यादा इंटरेस्टेड होते हैं क्योंकि जल्दी चुनौती पूरा करने पर उन्हें अन्य बच्चों को बताने का मौका मिलेगा।

डेवलपिंग क्रिटिकल थिंकिंग

अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा पद्धति संगोष्ठी में यह बताया गया कि बच्चों में क्रिटिकल थिंकिंग डिवेलप कराना है न कि उन्हें सिर्फ नॉलेज को रटवाना है। इस हेतु कक्षा 5 के बच्चों पर मैंने दो प्रयोग किया।

1) अगर मैं प्रधान पाठक होता तो क्या करता

यह प्रश्न लिखा कर मैं बच्चों को 40 मिनट का समय दिया। मैंने बच्चों को कहा कि वह कुछ मिनट के लिए यह मानकर चलें कि वे स्कूल के प्रधान पाठक हैं अब वे अपने स्कूल के क्या करेंगे उसे अपने शब्दों में लिखें।

बच्चों ने अपने टूटी–फूटी भाषा में डेढ़ से दो पेज लिखे।

सालों साल गाय पर निबंध लिखने की तुलना में उनका यह लेख काफी परिष्कृत नजर आया। और मैंने यह पाया कि जो बच्चे स्वयं उद्दंड किस्म के हैं वे प्रधान पाठक बनने पर बच्चों को दंड द्वारा अनुशासित करने की इच्छा रखते हैं वहीं दूसरी ओर जो बच्चे शांत स्वभाव के हैं वे स्वयं प्रधान पाठक बनने पर बच्चों को दंड नहीं देना चाहते हैं।

2) शैक्षिक भ्रमण के पश्चात बच्चों को अनुभव लिखने को कहना

पांचवी के दो बच्चों को साइंस प्रोजेक्ट बनाने के कारण अन्य विद्यालय के बच्चों के साथ शैक्षिक भ्रमण का मौका मिला। हालांकि भ्रमण सिर्फ एक दिवसीय ही था तथापि शाम को भ्रमण से वापस लौटने पर मैंने दोनों बच्चों को यह चुनौती दिया कि वे अपने भ्रमण का अनुभव कल लिखकर लाएं है।

बच्चों के यात्रा संस्मरण में व्याकरण भले ही शुद्ध ना हो लेकिन उनमें क्रिटिकल थिंकिंग डिवेलप हुआ होगा ऐसा उनके संस्करण को पढ़कर जरूर प्रतीत हुआ।

इस संगोष्ठी के पहले मुझे कई बार यह चिंता होती थी कि समय पर कोर्स कैसे कंप्लीट हो? परंतु चुँकि अब बच्चों के सीखने की गति बढ़ गई है इसलिए कोर्स कैसे कंप्लीट हो इसकी मुझे तनिक भी चिंता नहीं।

इससे पूर्व के कई प्रशिक्षण में शिक्षा में गुणवत्ता हेतु विभिन्न प्रकार के TLM बनाने और कई उपकरणों का प्रयोग करने हेतु सुझाव दिया गया था। परंतु इस संगोष्ठी में बताई गई विधियां पूर्णता शून्य निवेश पर आधारित है और इसका एप्लीकेशन भी काफी आसान है इसलिए मेरे विचार से सभी शिक्षकों को कम से कम एक बार अपने बच्चों पर अंतरराष्ट्रीय शिक्षा पद्धति में बताए गए विधियों का उपयोग जरूर करना चाहिए। इससे न केवल बच्चों की गुणवत्ता में सुधार होगा बल्कि शिक्षक को स्वयं पढ़ाना और भी रुचिकर लगेगा ऐसा मेरा विश्वास है।

एलन साहू,
सहायक शिक्षक
शासकीय प्रा शा बघिमा
जशपुर, छत्तीसगढ़

बच्चों को मिली चुनौती, एक दिन में पढ़ गए पूरी किताब : रविनारायण

शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला महली में छठी कक्षा में कुल 11 बच्चे उस दिन उपस्थित थे। कक्षा में कुल 19 बच्चे दर्ज हैं। यह स्कूल छत्तीसगढ़ के कबीरधाम जिले के विकासखंड मुख्यालय बोड़ला से 26 किलोमीटर दूरी पर स्थित है। उस दिन मैं कक्षा 6 में संस्कृत पढ़ाने गया। बच्चे संस्कृत के 5 पाठ तक पढ़ चुके थे। आज पाठ 6 को पढ़ाना था,इसमें कुल 21 पाठ हैं।

इससे कुछ दिन पहले 4 अक्टूबर को मुझे अर्न्तराष्ट्रीय शिक्षा को लेकर आयोजित संगोष्ठी में सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। जिसमें बच्चों को 'विषय मित्र' के माध्यम से पढ़ना सिखाने, बच्चों को खुद सीखने के लिए प्रेरित करने, बच्चों को चुनौती देने, बच्चों की क्षमताओं पर विश्वास करने जैसे महत्वपूर्ण बातों पर जानकारी दी गई थी। जिस पर कार्य करने के लिए मुझे भी उत्सुकता थी। इसलिए मैंने बच्चों से कहा कि इस पुस्तक को मैं एक दिन में ही पूरा पढ़ सकता हूँ। सिर्फ 21पाठ ही तो हैं, मैं तो इससे ज्यादा पाठों को एक दिन में पढ़ सकता हूँ। फिर मैंने बच्चों से पूछा,''क्या इस पुस्तक को एक दिन में आपमें से कोई पढ़ सकता है?'' इस पर कक्षा की छात्रा नम्रता ने कहा मैं भी पूरा पुस्तक पढ़ सकती हूँ। फिर पुष्पा भी पढ़ने को तैयार हो गई। धीरे–धीरे निहारिका और विकास भी तैयार हुए। फिर मुझे लगा कि यह अच्छा अवसर है बच्चों को चौलेंज देने का और मैंने भी उस अवसर से चूकना उचित न समझा। मैंने सभी बच्चों को तुरंत चौलेंज दिया कि चलो फिर आज देखते हैं कि इस पुस्तक को सबसे पहले कौन पूरा पढ़ता है। इस पुस्तक को पाठ 6 से प्रारंभ कर 21 तक पढ़ना है। बच्चों ने पढ़ना प्रारंभ किया। उस समय लगभग 2:00 बजे थे। 4:00 बजे नम्रता पूरी पुस्तक पढ़कर पहले स्थान पर रही। फिर क्रमशः पुष्पा, विकास देवराज और 4:24 बजे तक सभी 11बच्चों ने सारे पाठ पढ़ डाले। मुझे बहुत खुशी हुई। फिर मैंने बच्चों को प्रोत्साहित किया कि देखो, पूरी पुस्तक को भी एक दिन में पढ़ा जा सकता है। बच्चे भी बहुत खुश हुए।

फिर मुझे याद आया कि संगोष्ठी में कहा गया था कि सफलता मिलने पर सेल्फी विद सक्सेस जरूर भेजना है, सो मैंने वैसा ही किया। सभी बच्चों के साथ फोटो लेकर वेध छत्तीसगढ़ ग्रुप में पोस्ट किया, साथ ही उस पिक को मैंने अपना स्टेटस बनाया जिसे स्कूल के अन्य बच्चों ने जिनके पालक जो मोबाइल से मुझसे जुड़े हैं, उसमें अपने बच्चों को देखा।दूसरे दिन कक्षा सातवीं व आठवीं के बच्चों ने मुझसे कहा कि हमारी कक्षा में भी पढ़ने का काम करवाइए सर। हम लोग भी पूरी पुस्तक एक दिन में पढ़ सकते हैं। यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई और मेरा उत्साह बढ़ा, साथ ही हमारे स्टाफ के शिक्षक साथियों को लगा कि यह प्रक्रिया अच्छी है, जिसमें बच्चे स्वयं से पढ़ने के लिए इतने उत्साहित हो रहे हैं ।

फिर मैंने कक्षा आठवीं के बच्चों को लंच के बाद पढ़ने के लिए कहा। उस दिन कक्षा में 26 बच्चे उपस्थित थे। लंच के तुरंत बाद सभी बच्चे स्वयं कक्षा में व्यवस्थित होकर बैठ गए और हमें बुलाकर ले गए। सभी शिक्षक कक्षा में गए और पूछा कि किस विषय को पढ़ना चाहते हो। इस पर कुछ बच्चे सामाजिक विज्ञान बोले, कुछ संस्कृत,कुछ ने हिंदी कहा। अंततः हिंदी विषय तय किया गया।उस दिन 1:22 बजे बच्चों ने पुस्तक पढ़ना प्रारंभ किया तथा 4:00 बजे तक 12 बच्चों के द्वारा पूरी हिंदी पुस्तक पढ़ ली गई। बाकी 14 बच्चों ने घर से पुस्तक पूरी करके आने का वादा किया। मैंने इन बच्चों के साथ पुनः सेल्फी विद सक्सेस ली और स्टेटस में लगाया।इस प्रक्रिया को देखकर कक्षा सातवीं के बच्चों के द्वारा भी स्वयं से प्रेरित होकर दो विषयों सामाजिक विज्ञान व संस्कृत को दो दिनों में पूरा कर मुझे बताया कि सारे बच्चों ने

स्वयं से दोनों पुस्तक पर डाले।मैं बच्चों के इस कार्य से हतप्रभ रह गया। मैंने उन बच्चों के साथ भी सेल्फी विद सक्सेस का पिक लेकर स्टेटस में लगाया।

बच्चों के इस कार्य को देखकर मुझे लगा कि जिस कार्य को पूरा साल लगता है,बच्चों ने उसे महज कुछ ही घंटों में खेल–खेल में पूरा कर दिया। वर्तमान में दीपावली के अवकाश में कक्षा आठवीं के बच्चों ने सामाजिक विज्ञान व संस्कृत, सातवीं के बच्चों ने हिंदी व कक्षा छठी के बच्चों ने सामाजिक विज्ञान को पूरा पढ़ कर आने का चौलेंज लिया है। इनका परिणाम अपेक्षित है।

इस प्रक्रिया को देखकर हमारे गणित विषय के शिक्षक द्वारा प्रश्न किया गया कि गणित का शिक्षण कैसे रुचिपूर्ण बनाया जाए? इस पर मुझे याद आया कि गणित विषय पर श्री नंदकुमार जी ने कहा था कि गणित का चौलेंज देने के लिए गणित की संक्रियाओं जैसे– जोड़ना, घटाना, गुणा और भाग आदि को बच्चों को स्वयं प्रश्न बनाकर स्वयं उत्तर निकालने का कार्य दिया जाए तो बेहतर परिणाम आते हैं। मैं उस प्रक्रिया से अपने गणित शिक्षक को अवगत कराया। उन्होंने छठी कक्षा के बच्चों के साथ कार्य प्रारंभ किया और 3 अंकों के हासिल वाले जोड़ व तीन अंकों के घटाव का कार्य बच्चों को दिया। बच्चे स्वयं प्रश्न बनाकर हल करने लगे और चेक कराने के लिए शिक्षक के पास आने लगे।शिक्षक ने देखा कि सभी बच्चों के अलग–अलग सवाल व जवाब थे। उन्होंने अपनी मदद के लिए मुझे बुलाया। हम दोनों ने मिलकर प्रश्नों को देखा, हमने पाया कि बच्चे पुस्तक में दिए गए अभ्यास से कहीं ज्यादा प्रश्नों पर अभ्यास कर रहे थे, साथ ही प्रश्न भी समझ के साथ बनाना सीख रहे थे। निश्चित रूप से यह परिणाम मजेदार और चौकाने वाला रहा।

इन कुछ दिनों से स्कूल का माहौल बदला–बदला–सा नजर आ रहा है। बच्चे शिक्षकों के इंतजार में रहते हैं। पढ़ने के लिए बच्चों का उत्साह देखते ही बन रहा है। उनकी आँखों में पूरी पुस्तक को चट कर जाने की भूख स्पष्ट दिखाई देती है। हमें आश्चर्य होता है कि बच्चों में ऐसा परिवर्तन कभी देखने को नहीं मिला था। साथ ही बच्चे भी इस प्रक्रिया का समर्थन करते नजर आ रहे हैं। मुझे ऐसा लगता है कि सबसे पहले शिक्षकों को ''बच्चे ऐसा नहीं कर सकते'' नामक भ्रांति को स्वयं से दूर करना होगा और बच्चों की क्षमताओं पर विश्वास करना होगा। तभी शिक्षक बच्चों की क्षमताओं का सदुपयोग सही तरीके से कर पाएँगे और मुझे पूरा विश्वास है कि इसके परिणाम आश्चर्यजनक होंगे।

धन्यवाद।

रवि नारायण त्रिपाठी
शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला महाली
विकासखंड बोड़ला
जिला कबीरधाम(छत्तीसगढ़)

3. 'विषय मित्र' मेरी कक्षा के सफलता के आधार : मनीष मिश्रा

छत्तीसगढ़ में शासन द्वारा सभी विकासखंड मुख्यालयों में एक प्राथमिक शाला में कक्षा पहली एवं माध्यमिक शाला में कक्षा छठी में सीबीएसई इंग्लिश मीडियम स्कूल प्रारंभ किया गया है। यह 2018 से संचालित है एवं प्रति वर्ष 1–1 कक्षा बढ़ते जाता है। वर्तमान में यह माध्यमिक शाला में कक्षा 6 एवं 7 में संचालित है। इसे प्रत्येक विकासखंड में मॉडल स्कूल के रूप में देखा जाता है।

प्रेरणा के स्रोत– मुझे शासन द्वारा शासकीय कन्या पूर्व माध्यमिक शाला नवागढ़ विकासखंड नवागढ़, जिला जांजगीर चांपा (छत्तीसगढ़) में शासकीय सीबीएसई इंग्लिश मीडियम स्कूल कक्षा 6 और 7 को पढ़ाने के लिए संलग्न किया गया है। अर्न्तराष्ट्रीय शिक्षा को लेकर आयोजित संगोष्ठी में हमने यह सीखा था कि बच्चों की क्षमताओं पर विश्वास करना है, उन्हें चुनौती देना है और सतत मॉनिटरिंग करते रहना है। विषय–मित्र की सहायता से सभी बच्चे समय से पूर्व ही पाठ्यक्रम को पूरा कर सकते हैं। इसके अलावा जिन मुख्य बातों से मैं प्रेरित हुआ मैं उन्हें यहाँ जरूर बताना चाहूँगा।

अंतरराष्ट्रीय स्कूल की तुलना में अंतरराष्ट्रीय स्तर की शिक्षा देना आसान है? चलो, करते हैं। इसमें 16 काम करने होते हैं पर काम की शुरुआत सबसे सरल शुरू के छः बिंदुओं से होने वाली है।

1. बच्चों को स्वयं सीखने के लिए प्रेरित करें।

2. बच्चों को स्वयं अधिक सीखने के लिए चुनौती दें।

3. कुछ बच्चे आगे निकल जाएँगे और कुछ पीछे रह जाएँगे। विषय–मित्र (सहकर्मी सीखना) बनाकर सभी को आगे बढ़ाएँ।

4. उपरोक्त प्रक्रिया से सीखने की गति बढ़ जाती है, इसलिए सिलेबस एक तिहाई समय में पूरा करने की योजना बनाएँ।

5. बच्चों के जिज्ञासु रवैये का सम्मान करें। उन्हे प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करें तथा उनका उत्तर भी खोजने के लिए प्रेरित करें।

6. अभिभावक के मोबाइल के उपयोग से टेक्नोलॉजी द्वारा सीखने की गति बढ़ाएँ।

ध्यान देने की बात है कि इसमें किसी बुनियादी ढाँचे का जिक्र नहीं है। केवल शिक्षा की प्रक्रिया में बदलाव और टेक्नोलॉजी का उपयोग काफी है। एकल शिक्षकीय स्कूल में काम– उपरोक्त बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए मैंने उसी दिन से इसी तरीके से कक्षा में काम करने का निश्चय किया। मेरे यहाँ कक्षा 7 में 10 छात्र एवं कक्षा 6 में 5 छात्र अध्ययनरत हैं। 24 सितंबर 2019 तक मैं यहाँ सिंगल टीचर था। यहाँ हिंदी माध्यम की छठीं से आठवीं तक की कक्षाएँ भी संचालित हैं, जिनमें 122 छात्राएँ अध्ययनरत हैं। उसमें भी 2 शिक्षक हैं। मैं एक ही कमरे में कक्षा 6 और 7 को पढ़ाता हूँ। दोनों कक्षा के बच्चे समूह में बैठते हैं। एक कक्षा को पढ़ाते समय दूसरी कक्षा के बच्चों को कोई कार्य दे देता हूँ। मैंने बच्चों से बातचीत की और उन्हें कहा कि मैं केवल पढ़ाने का कार्य करुँगा और तुमको स्वयं से लिखना है। मैं केवल हिंदी, अंग्रेजी और संस्कृत के ग्रामर को बोर्ड पर लिखवाकर समझाने का कार्य करुँगा। मैंने दोनों कक्षाओं के लिए सभी विषयों की गाइड खरीदी और अंग्रेजी की डिक्शनरी खरीदी। सभी बच्चों को डिक्शनरी देखना सिखाया और मैंने

बच्चों से यह भी कहा कि पुस्तक में प्रश्नों के उत्तरों में पेंसिल से कोष्टक बनाना है एवं संबंधित प्रश्न का भी उल्लेख करना है। सबसे पहले पूरे पाठ को पढ़ना है। उसके पश्चात पाठ में दिए हुए प्रश्नों के उत्तर पुस्तक में ही ढूंढना है जिसकी मैं जाँच लगातार करता रहूँगा।

विषय मित्र का चयन– 4 अक्टूबर 2019 को अर्न्तराष्ट्रीय शिक्षा को लेकर आयोजित संगोष्ठी में चर्चा की गई सभी बातों को मैंने अपने सभी शिक्षक साथियों से एवं बच्चों से शेयर भी किया। मैंने उन्हें बताया कि मैंने चुनौती स्वीकार की है कि हमारे स्कूल के सभी बच्चों को अच्छी तरह से पढ़ना लिखना आएगा। मैंने बच्चों से कहा कि तुम्हें चयन करना है कि तुम अपने किन–किन साथियों को पढ़ने–लिखने में सहयोग करोगे। तब ज्योति ने किरण और भारती को विशेष रूप से सभी विषयों में सहयोग करने की बात की तथा आवश्यकतानुसार सभी साथियों को सहयोग करने के लिए कहा। किंतु वह विनीता को सहयोग करने से मना कर रही थी, उसका कहना था कि यह इसकी बात नहीं सुनती। परंतु समझाने पर वह तैयार हो गई। विनीता को सहयोग करने के लिए ज्योति के साथ–साथ नगमा और शिवानी भी तैयार हो गईं।

बच्चों को चुनौती देना– अब मेरे सभी बच्चे चुनौती लेने के लिए तैयार और उत्साहित थे। मैंने छवि एवं उसके ग्रुप को 10 चैप्टर तक सभी विषयों में लिखने हेतु चुनौती दी और पूछा की वे यह कार्य कब तक कर सकते हैं? सभी छात्रों ने अलग–अलग समय बताया किसी ने 7 दिन, किसी ने 10 दिन, किसी ने 25 दिन कहा। बच्चे तेजी से लिख रहे थे। मैंने बच्चों से कहा कि जो लंबे उत्तर है उन्हें ही कॉपी में लिखना है, Fill in the blanks, Match the column और छोटे–छोटे प्रश्नों के उत्तरों को पुस्तक में ही पेंसिल से लिखना है। मैंने पाया कि सभी बच्चों ने दिए गए समय से पूर्व ही लेखन का कार्य पूर्ण कर लिया।

टेक्नोलॉजी का उपयोग– मैंने बच्चों से चर्चा की कि जिनके घर में पालक एंड्राइड मोबाइल यूज करते हैं, हम उनमें लर्निंग ऐप डाउनलोड कर देंगे और उसे कैसे प्रयोग करना है सीखा देंगे। इससे पढ़ने–लिखने में सहयोग मिलेगा।

एक शिक्षक साथी ने प्रश्न किया कि गणित के विषय को बच्चे कैसे स्वयं से पढ़ लेंगे तो मैंने सुझाव दिया कि जो एक्सरसाइज दिया रहता है उसको समझ कर एवं यूट्यूब में प्रश्नों के उत्तर हल करके बताया जाता है,उसके सहयोग से आगे की पढ़ाई करने का प्रयास करें।

इस तरह की मैंने बच्चों को चुनौती दी। उनकी क्षमताओं पर विश्वास किया। उनके विचारों का सम्मान किया और मुझे अब बेहतर परिणाम मिलने लगे हैं जिससे मैं बहुत उत्साहित हूँ। यह सब विषय–मित्र के बिना संभव नहीं था। मुझे अपने विषय मित्रों और पूरे बच्चों पर गर्व है। अब मैं इन विषय–मित्रों के माध्यम से कक्षा में SPOKEN ENGLISH पर भी काम करुँगा, यह मेरी आगामी योजना है।

मनीष मिश्रा
(शिक्षक)
शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला नवागढ़

'विषय मित्र और झोला लाइब्रेरी (बाल साहित्य) की पुस्तकों से मिली सफलता : दीपमाला

साथियों!

आज मै आपके सामने अपने कक्षा–कक्ष की कुछ महत्वपूर्ण अनुभवों को साझा करने जा रही हूँ। मैंने और सत्य नारायण सर (अजीम प्रेमजी फाउंडेशन) ने साथ मिलकर नवीन प्राथमिक शाला सिलतरा के कक्षा 5वीं मे अध्ययनरत विद्यार्थियों के बीच 9 सितम्बर 2019 को विषय– मित्र बनाये थे। उस समय 5 वीं कक्षा के 10 छात्र–छात्राएँ ऐसे थे जो हिन्दी की पाठ्यपुस्तक पढ़ नहीं पाते थे, परंतु 1 अक्टूबर को अर्थात लगभग 22–23 दिनों के अंदर 10 मे से 8 बच्चे हिन्दी की पाठ्यपुस्तक तथा अन्य बाल साहित्य जैसे पुस्तके पढ़ने मे लगभग सक्षम हो गए है। शेष बचे 2 विद्यार्थी दीपावली छुट्टी के बाद अर्थात 5 नवंबर तक पूरा कर लेने की चुनौती स्वयं स्वीकार किए है। मुझे पूरा विश्वास है कि आने वाले कुछ ही सप्ताह के अंदर मेरे क्लास के 100 प्रतिशत बच्चे पढ़ने–लिखने मे सक्षम हो जाएंगे। जो काम लगभग साढ़े चार साल मे नहीं हो पाया ओ काम 22–23 दिनों मे विषय मित्र बनाने एवं उसका उचित फॉलो–अप करने से हो गया। इन सफलताओं के पीछे की प्रक्रिया कुछ इस तरह से था– सबसे पहले हमने श्यामपट्ट पर कुछ अलग– अलग तरह के शब्द एवं वाक्य लिखकर पढ़ सकने वाले बच्चे और नहीं पढ़ सकने वाले बच्चों का पहचान किया। पहचान हो जाने के बाद हमने नहीं पढ़ सकने वाले बच्चों को अपने लिए विषय–मित्र चुनने की स्वतंत्रता दी। इसमे हमने ये भी प्रयास किया कि विषय मित्र पड़ोसी हो, जिससे स्कूल के बाद भी एक दूसरे के घर जाकर साथ मिलकर पढ़ा जा सके। विषय मित्र बन जाने के बाद प्रत्येक विषय मित्रों को ये चुनौती दिया गया कि वे कब तक पढ़ना सीख जाएंगे एवं पढ़ना सीखा देंगे।

विषय मित्रों ने चुनौती स्वीकार करते हुये अलग–अलग टाइम दिये जैसे दृ 15 दिन मे, 20 दिन मे,1 महीने मे डेढ़ महीने मे आदि। इन समयावधि को एक कॉपी मे कुछ इस तरह के कॉलम बनाकर लिखे गए–

क्र०	पढ़ना / लिखना सीखने वाले छात्र / छात्रा	पढ़ना / लिखना सिखाने वाले छात्र / छात्रा	दिनाँक	चुनौती को पूर्ण करने का समय	विषय मित्र का हस्ताक्षर
1	ज्योति	लक्ष्मी	9 सितम्बर	1 महिना	
2					

अन्य स्रातों से बच्चों को बाल साहित्य की पुस्तकें (झोला लाइब्रेरी) उपलब्ध कराई गई, इसके अतिरिक्त स्कूल के लाइब्रेरी को बच्चों के लिए खोल दिया गया। साथ ही बाल साहित्य की पुस्तकों को घर ले जा कर पढ़ने के लिए भी प्रेरित किया गया। मैं कक्षा–कक्ष मे प्रवेश करते ही सबसे पहले विषय–मित्रों द्वारा की जाने वाले कार्यों पर संक्षिप्त चर्चा करती हूँ। जिसमे बच्चे प्रतिदिन अपने विषय–मित्र के साथ की जाने वाले कार्य एवं प्रगति को साझा करते है। श्री सत्यनारायण सर लगभग प्रति सप्ताह बच्चों को मोटीवेट करने एवं विषय–मित्रों से चर्चा करने आते है एवं इन सारी प्रक्रियाओं में प्रधान–पाठक जी का भी भरपूर सहयोग मिला।

आगे की योजनाएँ– एक स्तर तक काम हो जाने के बाद अब हम बच्चों को इसी तरह अन्य विषयों जैसे–अँग्रेजी, गणित, पर्यावरण साथ ही हिन्दी की सिलेबस को कंप्लीट करने की चुनौतियाँ देंगे और उचित फॉलो–अप करेंगे।

दीपमाला
नवीन प्राथमिक शाला सिलतरा,
विकास खंड– धरसीवा
जिला – रायपुर

अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा के लिए आवश्यक 17 बिंदुओं में से 6 महत्वपूर्ण बिंदुओं पर कार्य करने पर मुझे जो परिणाम मिला, वह किसी आश्चर्य से कम नहीं है। इसका पहला बिंदु ''बच्चों को स्वयं सीखने के लिए प्रेरित करना''। इस पर जब मैंने काम करना शुरू किया तो पहले थोड़ी कठिनाई आई क्योंकि अब तक बच्चे सिर्फ शिक्षकों पर निर्भर रहते थे, जितना पढ़ाया जाता था, उससे आगे सोचने की कोशिश ही नहीं करते थे, परंतु धीरे–धीरे वे स्वयं पढ़ने लगे। तब मैंने देखा कि वे बच्चे जो सबसे पीछे रहते थे वह भी आगे आने लगे और रटने की परंपरा से बाहर आने लगे। अब उनके ऊपर रटने का बोझ नहीं था। वह स्वयं पढ़ते और स्वयं प्रश्नों के उत्तर भी ढूंढने लगे। फिर मैंने उनको चुनौतियां देना आरंभ किया। इसका परिणाम और बेहतर देखने को मिला। अब बच्चों में प्रतिस्पर्धा की भावना जागृत होने लगी और ज्यादा से ज्यादा चुनौतियों को पूरा करने की होड़ लगने लगी। मैंने पाया कि बच्चे स्वयं पढ़कर सीख रहे हैं और चुनौतियों को पूरा करके खुश भी हो रहे हैं। उनके आत्मविश्वास में निरंतर वृद्धि दिखाई दे रही है। हर दिन कुछ ना कुछ नई चुनौतियों भरा दिन, नई–नई गतिविधियां और क्रियाकलापों के कारण वे अब पढ़ने से ऊबते नहीं हैं।

अभी कुछ दिन पहले मैंने एक पाठ पढ़ाया और उसी पाठ को दूसरे दिन बच्चों को पढ़ने की चुनौती दी। मैंने चुनौती में कहा कि आपको मुझसे ज्यादा अच्छा पढ़ाना है अर्थात इस पाठ में से आप क्या–क्या बातें बता सकते हैं, आप बताएं ? दूसरे दिन मैंने कुछ बच्चों को पढ़ने के लिए बुलाया। मेरे आश्चर्य की सीमा नहीं थी। बच्चों ने पाठ से संबंधित ऐसी–ऐसी बातें बताई जो मैंने सोची भी नहीं थी। मुझे स्वयं उनसे बड़ी सीख मिली। मेरी यह धारणा कि बच्चे सिर्फ शिक्षकों से ही सीखते हैं, बदल गई है। अब पहले की तुलना में बच्चे ज्यादा सीख रहे हैं। कुछ दिन पहले मैंने 2 दिन की छुट्टी ली थी। मैंने बच्चों को चुनौती दी कि मेरी अनुपस्थिति में आपको यह अध्याय पढ़ना भी है और पढ़ाना भी है। मैंने वापस आकर उनका टेस्ट लिया। परिणाम आशा से कहीं बढ़कर था। सभी बच्चों ने अभ्यास सहित पाठ को समझ लिया है।

अब मैंने बच्चों को मोबाइल देना शुरू कर दिया है। वे मोबाइल से अपनी शंका का समाधान कर लेते हैं और जरूरत की सारी चीजें स्वयं ढूंढ लेते हैं। अब वे मुझसे भी ज्यादा अच्छी तरह से मोबाइल चला लेते हैं और बहुत सी बातें मुझे भी बताते हैं। अब बच्चे अपने मन के विचारों और अभिव्यक्तियों को कहानी और कविता का रूप देने लगे हैं। वास्तव में अब पढ़ाने का आनंद भी दोगुना हो गया है। अब वे पाठ को अपने जीवन से जोड़ने लगे हैं। अभी कल ही मैंने देखा एक बच्चा दीवार पर लिखे हुए कोटेशन में से संधि और समास के शब्द ढूंढ रहा था। मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि बच्चे फिल्मी गानों में निहित रस छंद अलंकार पहचानने लगे हैं। अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा के सभी बिंदु वास्तव में किसी चमत्कार से कम नहीं हैं। वास्तव में आज के इस प्रतिस्पर्धात्मक युग में बच्चों को ऐसी ही शिक्षा की आवश्यकता है। जब तक बच्चों में स्वयं से करके सीखने की क्षमता विकसित नहीं होगी, वे आगे नहीं बढ़ पाएंगे, उनका चहुंमुखी विकास नहीं होगा। अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतिस्पर्धा हेतु पढ़ाई अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर करना जरूरी है और हम इस दिशा में पहला कदम उठा चुके हैं बस आगे बढ़ते जाना है.....

श्रीमती ज्योति श्रीवास्तव
व्याख्याता
संकल्प शिक्षण संस्थान
जशपुर छत्तीसगढ़

मैं आलोक कुमार पांडेय, सहायक शिक्षक, प्राथमिक शाला नीमगांव में पदस्थ हूँ। मैं अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा पर पिछले एक महीने से कार्य कर रहा हूँ तथा अपना अनुभव बताना चाहता हूँ। प्राथमिक शाला नीमगांव के बच्चे जिनको पढ़ाई में कई तरह की समस्या का सामना करना पड़ता था। ऐसे बच्चे जिन्हें हम कमजोर समझते थे, ऐसे बच्चे जो प्रतिदिन शाला आना नहीं चाहते थे, लगातार अनुपस्थित रहते थे। बहुत से बच्चे ऐसे भी थे, जो किसी भी विषय वस्तु को तुरंत समझ जाते थे, पर दक्ष नहीं हो पाते थे। कई बच्चों को पढ़ाई से भय लगता था और पढ़ाई उनके लिए बोझ हो जाता था। किसी भी विषय वस्तु को समझने के बाद बच्चे दो–तीन दिन में ही उसे भूल जाते थे। हम शिक्षकों को लगता है कि हम बहुत मेहनत करते हैं पर बच्चों को सिखाने में असफल रहते हैं। कई वर्षों से हमारे सामने बहुत मुश्किलें आई। हमने कई प्रशिक्षण प्राप्त किए। हर बार यही लगा कि शायद इस प्रशिक्षण के बाद हम अपने बच्चों को किसी भी क्षेत्र में दक्ष कर लेंगे। पर कभी भी ऐसा नहीं हुआ, हम प्रत्येक बार असफल रहे। दिनांक14.11.2019 को अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा में कार्यशाला आयोजित हुई, जिसमें मुझे भी शामिल होने का मौका मिला। इस कार्यशाला के बाद हमें पता चला कि हम जिस विधि से अपनी कक्षा में अध्यापन कार्य करते हैं, उसमें सिर्फ पाठ्यक्रम पूरा किया जा सकता है, वह भी शिक्षकों द्वारा ना कि बच्चों के द्वारा। इस कार्यशाला में हमने सीखा कि बच्चों को सिखाने के लिए सबसे पहले उन्हें प्रेरित करना होगा। इसके बाद उन्हें सीखने के लिए चुनौती देनी होगी। इस कार्यशाला के बाद हमने अपने बच्चों को सीखने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्हें उकसाने के बाद उन्हें चुनौती देना शुरू किया। चुनौती मिलते ही बच्चे स्वयं पढ़ने लगे। किसी भी विषय का कक्षा कार्य हो या गृह कार्य हो, बच्चे उसमें बढ़–चढ़कर भाग लेने लगे। पहले बच्चे पुस्तक में दिए गए 5 से 6 सवालों को 1 घंटे तक हल करते थे, अब आधे घंटे में 20 से 25 तक प्रश्न स्वयं तैयार करते हैं और उनका हल भी स्वयं तैयार करते हैं। गृहकार्य में बच्चे गणित के 50 से 100 तक सवाल बनाकर हल करके लाते हैं। 3 दिनों में अपनी कक्षा का पर्यावरण विषय की किताब पढ़ कर पूर्ण कर लेते हैं। किसी भी विषय वस्तु में बच्चे पहले से बेहतर नजर आते हैं। जो बच्चे कक्षाकार्य या गृहकार्य नहीं कर पाते थे, शाला आने से डरते थे अब वे बच्चे प्रतिदिन शाला भी आते हैं और चुनौती में प्रथम भी आते हैं। कम उपस्थिति रहने की समस्या समाप्त हो रही है। अब बच्चे सामने आकर बातचीत करने में संकोच नहीं करते। नेतृत्व क्षमता का विकास हो रहा है। समुदाय शाला की ओर आकर्षित हो रहा है। यदि शिक्षक किसी कारण से शाला नहीं आ पा रहे हैं तो उस दिन बच्चे विषय मित्र बनकर एक दूसरे को सिखाते हैं। अभी एक ही महीना हुआ है और काफी कुछ बदल गया है। आने वाले कुछ ही महीने में हम सफल हो जाएंगे, ऐसा हमें पूरा विश्वास है।

मैं परमानन्द साहू, सहायक शिक्षक, शासकीय प्राथमिक शाला पाहंदा, विकासखंड–बेरला, जिला–बेमेतरा में पदस्त हूँ। मैं अंतरास्ट्रीय शिक्षा पर दिनांक 25.11.2019 को बी.आर.सी बेरला में कार्यशाला में शामिल हुआ। कार्यशाला में सीखने को बहुत कुछ मिला व उनके अनुसार बच्चो को चुनौती दिया जिससे बच्चो में असीमित कार्य करने की क्षमता देखने को मिली। जैसे– दो अंको का जोड़ सवाल बनाकर हल करके अधिक से अधिक बनाना, अंग्रेजी में वाक्य बनाना Ex. This is a book. एक बच्चे ने 100 वाक्य बनाया। बच्चों के लिए कोई भी विषय हो इस प्रकार कार्य करने से कोर्स एक तिहाई समय में पूरा हो जायेगा व बचे समय में हम आगे की कक्षा के कार्य को व पुस्तक से बाहरी कार्य को दे सकते है, जिससे बच्चे अवश्य ही 'पीसा' स्तर के बच्चे बन जायेंगे। मैं कक्षा–दूसरी को पढ़ाता हूँ, जिसमें 51 बच्चे हैं। हमारे संकुल समन्वयक द्वारा चलाई जा रही बुनियाद नवाचार से 100 प्रतिशत बच्चों को पुस्तक पढ़ना आ जाता है। कोई भी अनियमित नहीं रहता। मेरा अगला लक्ष्य एक सप्ताह में कोर्स पूरा कर कक्षा तीसरी के पाठ्यक्रम पर कार्य करना है, जो इस 'पीसा' से संभव हो जाएगा क्योंकि अब बच्चे स्वयं गृह एवं कक्षाकार्य जांचते है, जिससे मेरा काम आसान हो गया है। मेरा काम सिर्फ ये सोचना रहता है कि आज क्या विशेष चुनौती देना है ?

मैं सुरेंद्र कुमार पटेल, संकुल समन्वयक, बारगांव विकासखंड–बेरला, जिला–बेमेतरा संकुल केंद्र–बारगांव में कार्यरत हूं। अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा पर कार्य करते हुए मुझे सिर्फ एक माह हुआ है। जशपुर की कार्यशाला में सम्मिलित होकर मैंने यह जाना कि 'असर' और सीखने के प्रतिफल से बच्चों में वह स्किल पैदा नहीं किया जा सकता जो 21वीं सदी के लिए आवश्यक है। कुल मिलाकर हमारी शिक्षा अनुपयोगी है। हमारी शिक्षा कहने मात्र का बाल केंद्रित है, यह पूर्ण रूप से शिक्षक केंद्रित शिक्षा है जिसमें शिक्षक की इच्छा थोपी जाती है।

100 प्रतिशत शिक्षा पर आधारित 'पीसा' मेरे सभी स्कूल में संचालित है। इसके लागू होने के बाद मैंने पाया कि यदि शिक्षक बच्चों की सीखने की गति को समझ लेता है तो कार्य करने की क्षमता को असीमित बढ़ाया जा सकता है। शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला बारगांव में दर्ज संख्या 338 है, शिक्षक कम है, इस कारण से सभी बच्चों तक शिक्षक का पहुंच पाना और उसका मूल्यांकन कर पाना असंभव है। बच्चों में जिज्ञासा को बढ़ाकर प्रेरित करने के बाद चुनौती देकर जब काम प्रारंभ किया गया तब प्रत्येक बच्चे का मूल्यांकन भी आसान हो गया और कार्य करने की गति भी बढ़ गई। अब बच्चे स्वयं पाठ पढ़कर प्रश्न बना रहे हैं। किसी भी टॉपिक पर स्वतंत्र लेख लिख रहे हैं। अपने साथियों का मदद भी कर रहे हैं। सातवीं कक्षा का एक छात्र विज्ञान के 1 पाठ को पढ़कर 500 प्रश्न बना लिया। प्राथमिक शाला पाहन्दा के दूसरी कक्षा की एक छात्रा ने दो अंको के जोड़ वाली 1031 सवाल 1 दिन में हल कर लिया। इसी कक्षा की एक छात्रा ने अंग्रेजी में this और that के 100 वाक्य बना लिए। स्तरानुरूप प्रोत्साहन के साथ चुनौती देने से मैंने महसूस किया है कि उपस्थिति कम न होकर बढ़ने लगी है।

अवलोकन के दौरान शिक्षकों ने अपने अनुभव में बताया कि समूह में कार्य करने से और विषय मित्र की मदद से हर वह काम जो शिक्षक के बगैर संभव नहीं था अब आसान हो गया है। विषयों को समझाने में शिक्षक को कई शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग करना पड़ता था, जिसे बच्चे स्वयं कर रहे हैं। यह शिक्षक में CRITICAL सोच और बच्चों में CREATIVITY बढ़ाएगी।

सुरेन्द्र पटेल
संकुल समन्वयक, बारगांव
बेरला जिला बेमेतरा

पढ़ने की जाँच **(Sampal – 1)**

कहानी

सावन का महीना था। आसमान में बहुत काले–काले बादल छाए थे। ठंडी–ठंडी हवा चल रही थी। मुझे झूला झूलने का मन किया। बड़े भैया एक मोटी सी रस्सी लेकर बाहर आए। भैया ने रस्सी को पेड़ से लटकाकर झूला बनाया। सब ने मिलकर खूब झूला झूला। बाकी बच्चे भी आकर मजे से झूलने लगे। झूलते–झूलते रात हो गई।

अनुच्छेद

बगीचे में एक पेड़ है।

पेड़ पर एक तोता रहता है।

तोते का रंग हरा है।

वह लाल टमाटर खाता है।

अनुच्छेद

नीतू के घर में गाय है।
उसका रंग सफेद है।

गाय हरी घास खाती है।
वह बहुत दूध देती है।

अक्षर

ल प स

क ग

ड ब म

ट झ

शब्द

लाल दूध

पैर

तेल किला

मोर जूता

कुल

बच्चे से कोई भी 5 अक्षर पढ़ने को कहें। कम से कम 4 सही होने चाहिए।

पढ़ने की जाँच **(Sampal – 2)**

कहानी

नगमा समझदार लड़की थी। मगर उसका छोटा भाई अमन बहुत नटखट था। एक दिन दोनों बाज़ार में घूम रहे थे। अमन ने रास्ते में पकौड़े देखे। उसे पकौड़े बहुत पसंद थे। माँ उसके लिए पकौड़े बनाती थी। नगमा ने कहा यह पकौड़े तीखे होंगे। मगर अमन नहीं माना। अमन ने पकौड़े खाए और उसकी आँखों से आँसू निकलने लगे।

अनुच्छेद

रात हो गई हैं।

चाँद दिख रहा है।

तारे भी चमक रहे है।

सब लोग सो गए है।

अनुच्छेद

काले बादल छाए है।

तेज बारिश हो रही है।

मोर भी नाच रहा है।

अक्षर

न प म

च स

थ ग द

र ल

शब्द

आग सोच

ताला

गिर पानी

मौका धुन

देश

बच्चे से कोई भी 5 अक्षर पढ़ने को कहें। कम से कम 4 सही होने चाहिए।

पढ़ने की जाँच **(Sampal – 3)**

कहानी

रामपुर में एक मैदान था। वहाँ कोई खेलने नहीं जाता था। एक दिन कुछ लोग आए। उन्होंने गाँव के लोगों को बुलाया सबने मिलकर तय किया कि यहाँ बगीचा बनाया जाए। खाद मंगाकर हर तरह से पौधे लगाए गए। सही समय पर पानी दिया गया। आज वहाँ एक सुंदर बगीचा है। इसलिए वहाँ सभी खेलने जाते हैं।

अनुच्छेद

रूपा बाहर खेल रही थी।

खेलते–खेलते रात हो गई।

रूपा अपने घर चली गई।

वह खाना खाकर सो गई।

अनुच्छेद

आज मामा आए हैं।

मिठाई साथ लाए हैं।

हम सब मिठाई खाएंगे। फिर मामा से कहानी सुनेंगे।

मात्रा

दे का चौ

लू पः बं

हु थी तै

मि खो

शब्द

नाक तोता

कूड़ा

खुश मैन मौका

सेब

पीला

बच्चे से कोई भी 5 अक्षर पढ़ने को कहें। कम से कम 4 सही होने चाहिए।

पढ़ने की जाँच **(Sampal – 4)**

कहानी

राजू नाम का एक लड़का था। उसकी एक बड़ी बहन व एक छोटा भाई था। उसका भाई गाँव के पास के विद्यालय में पढ़ने जाता था। वह खूब मेहनत करता था। उसकी बहन बहुत अच्छी खिलाड़ी थी। उसे लंबी दौड़ लगाना अच्छा लगता था। वे तीनों रोज साथ–साथ मौज–मस्ती करते थे।

अनुच्छेद

मेरे चाचा की शादी है।

सबके नए कपड़े बने है।

बहुत मेहमान आ रहे है।

घर में धूम–धाम हैं।

शब्द

कुल बड़ा

रोज़

पानी चूना

चलो नहीं

पैर

अक्षर

ह च ट

ल न

फ म र

स त

मात्रा

लो पी सा

कू नं गे

डि बौ मः

टु झै

बच्चे से कोई भी 5 अक्षर पढ़ने को कहें। कम से कम 4 सही होने चाहिए।

उपचारात्मक शिक्षण की गतिविधियाँ
पासा खेल के माध्यम से शिक्षण

गतिविधि (1) :– पासा खेल से वर्ण पहचान
निर्देश :–

1) सिखाये जाने वाले वर्णों को पासा के छ. फलकों पर लिखें।
2) फर्श/कापी पर पासा खेल संबंधित वर्ण को लिख दें। जैसे :–

वर्ण चार्ट
अ ड – –
– – – –
– – – –

क	ख	ग	घ
ख	ग	घ	क
ग	घ	क	ख
घ	क	ख	ग

क्रियाविधि :– सर्वप्रथम बच्चे पासा फेंकेगें। पासा फेकने उपरांत जो भी वर्ण ऊपर आयेगा, बोर्ड में उस वर्ण की पहचान कर उच्चारण करेंगें तथा चिन्हांकित करेंगें। सही वर्ण पहचानने के चिन्हांकन हेतु बटन या अन्य कोई वस्तु रखें। जिस विद्यार्थी का बटन अधिक होगा वह विजयी होगा।

इस खेल का प्रारम्भ सभी बच्चों से किया जा सकता है तथा जिन बच्चों ने वर्ण स्तर प्राप्त नही किया उनके साथ पुनरावृत्ति की जा सकती है। शिक्षक इस खेल में विद्यार्थियों को सहयोग करेंगें तथा अन्य विद्यार्थियों को स्वयं से सीखने हेतु प्रेरित करें।

गतिविधि (2) :– पासा खेल से मात्रा पहचान

निर्देश :–

1) सिखाये जाने वाले मात्राओं को पासा के छ. फलकों पर लिखें।
2) फर्श/कापी पर पासा खेल संबंधित मात्रायें को लिख दें। जैसे :–

ा	ि	ी
ि	ी	ा
ी	ा	ि

क्रियाविधि :– सर्वप्रथम बच्चे पासा फेंकेगें। पासा फेकने उपरांत जो भी मात्रा ऊपर आयेगा, बोर्ड में उस मात्रा की पहचान कर उच्चारण करेंगें तथा चिन्हांकित करेंगें। सही मात्रा की पहचान का चिन्हांकन के लिये बटन या अन्य कोई वस्तु बोर्ड पर रखेंगें।

यह खेल दो से चार बच्चों के खेलने हेतु उपयुक्त है। शिक्षक इस खेल में विद्यार्थियों को सहयोग करेंगें तथा अन्य विद्यार्थियों को स्वयं से सीखने हेतु प्रेरित करें।
इसी क्रम में पासे के माध्यम से अन्य निम्न खेल संपादित कर सकते हैं :–

गतिविधि (3) :– मात्रा सहित वर्ण की पहचान – गतिविधि 1 एवं 2 में उपयोग किए गए पासों की मदद से यह खेल आयोजित करवाया जाएगा। बच्चे दो पासें एक साथ फेकेंगे एवं पासों के ऊपर आए वर्ण तथा मात्रा को जोड़कर चार्ट में पहचानेंगे एवं उच्चारण करेंगे।

का	खा	गा	घा
खा	गा	घा	का
गा	घा	का	खा
घा	का	खा	गा

क	ख	ग	घ
ख	ग	घ	क
ग	घ	क	ख
घ	क	ख	ग

कि	खि	गि	घि
खि	गि	घि	कि
गि	घि	कि	खि
घि	कि	खि	गि

की	खी	गी	घी
खी	गी	घी	की
गी	घी	की	खी
घी	की	खी	गी

गतिविधि (4) :– पासा खेल से शब्द निर्माण का अभ्यास

	ख		घ
	ग		क
	घ		ख
	क		ग

नियम :– वर्ण वाले दो पासा फेंककर जो दो वर्ण ऊपर आया है उसे कोई भी रिक्त खाने में रखकर दोनो वर्णों को जोड़कर उच्चारण करें।

इसी प्रकार पासे की सहायता से अन्य मात्रा वाले शब्दों का अभ्यास शिक्षक कराऍगे।

गतिविधि (5) :– अंक/बिंदी पासा से वर्ण पहचान

निर्देश :– 1) सर्वप्रथम जिन वर्णों को सीखाना है उसे कागज या फर्श पर इस प्रकार चार्ट बना लेवें :–

2) पासे के छ. फलक पर केवल 1 व 2 अंक को तीन–तीन बार लिख दें।

क्रियाविधि :– 2 से 4 बच्चे इस खेले को खेलेंगें। कोई एक बच्चा पासा उछालेगा। यदि पासे पर अंक 1 आया तो एक चाल चलकर वर्ण को बोलेगा और अपना बटन रखेगा। इसी क्रम में दूसरा बच्चा पासा उछालेगा यदि 2 अंक आया तो दो चाल चलकर दोनो वर्ण जोड़कर पढ़ेगा प्रत्येक सही उत्तर के लिए अपना बटन या कोई चिन्ह रखेगा।

गतिविधि (6) :– अंक/बिंदी पासा से मात्रा लगाकर पढ़ना

निर्देश :– 1) सर्वप्रथम जिन वर्णों व मात्रा को सीखाना है उसे कागज या फर्श पर इस प्रकार चार्ट बना लेवें :–

अंत

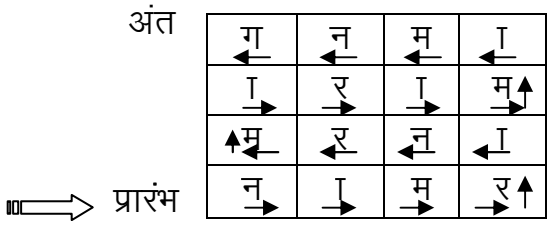

ग	न	म	ा
ा	र	ा	म
म	र	न	ा
न	ा	म	र

प्रारंभ

2) पासे के छ. फलक पर केवल 1 व 2 अंक को तीन–तीन बार लिख दें।

क्रियाविधि :– पूर्ववत।

गतिविधि (7) :– अंक/बिंदी पासा से शब्द निर्माण

निर्देश :– 1) सर्वप्रथम मात्रा वाली उन वर्णों का चयन करें जिन्हें सीखाना है, जैसे :–

अंत

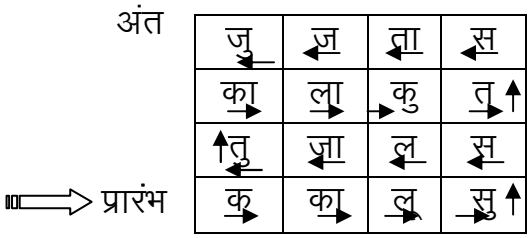

जु	ज	ता	स
का	ला	कु	तु
तु	जा	ल	स
कु	का	लु	सु

प्रारंभ

2) पासे के छ. फलक पर केवल 1 व 2 अंक को तीन–तीन बार लिख दें।

क्रियाविधि :– पूर्ववत।

गतिविधि (8) :– अंक/बिंदी पासा से वर्ण पहचान (मूल्यांकन–1)

निर्देश :– 1) सर्वप्रथम शिक्षक द्वारा वर्णों का चयन करें जिन्हें सीखाना है, जैसे :–

न 1	ह 2	ल 3	न 5	ह 6	द 4
द 2	ल 1	ह 4	ल 3	न 5	न 6
ल 6	न 2	द 1	ह 3	ल 4	ह 5
ह 4	द 5	न 1	न 2	द 3	ल 4

2) पासे के छ. फलक पर 1 से 6 अंक तक लिख दें।

क्रियाविधि :– बच्चे क्रमशः पासा उछालेगें, जो अंक आया उस अंक वाले खाने में वर्ण को ढूंढकर उच्चारण करेगा और बटन रखेगा।

गतिविधि (9) :– अंक/बिंदी पासा से मात्रा वाली वर्ण पहचान (मूल्यांकन–2)

निर्देश :– 1) सर्वप्रथम शिक्षक द्वारा मात्रा वाली वर्णों का चयन करें जिन्हें सीखाना है, जैसे :–

ना 1	हा 2	ला 3	ना 5	हा 6	दा 4
दा 2	ला 1	हा 4	ला 3	ना 5	ना 6
ला 6	ना 2	दा 1	हा 3	ला 4	हा 5
हा 4	दा 5	ना 1	ना 2	दा 3	ला 4

2) पासे के छ. फलक पर 1 से 6 अंक तक लिख दें।

क्रियाविधि :– बच्चे क्रमशः पासा उछालेगें, जो अंक आया उस अंक वाले खाने में वर्ण को ढूंढकर उच्चारण करेगा और बटन रखेगा।

गतिविधि (10) :– अंक/बिंदी पासा से बिना मात्रा वाले शब्द पहचान (मूल्यांकन–3)

निर्देश :– 1) सर्वप्रथम शिक्षक द्वारा बिना मात्रा वाली शब्दों का चयन करें जिन्हें सीखाना है, जैसे :–

हम 1	जल 2	जन 3	नल 5	गम 6	दम 4
दम 2	गम 1	नल 4	जल 3	नम 5	मन 6
जल 6	नम 2	दम 1	कम 3	लट 4	हम 5
हम 4	दम 5	मन 1	नम 2	कम 3	जल 4

2) पासे के छ. फलक पर 1 से 6 अंक तक लिख दें।

क्रियाविधि :– पूर्ववत।

गतिविधि (11) :– अंक/बिंदी पासा से दो वर्णों के साथ एक मात्रा की पहचान (मूल्यांकन–4)

निर्देश :– 1) सर्वप्रथम शिक्षक द्वारा मात्रा वाली शब्दों का चयन करें जिन्हें सीखाना है, जैसे :–

सीमा 1	मीना 2	गीता3	दीना 5	सीता 6	टीना 4
मीना 2	गीता 1	नीला4	सीता 3	सीमा 5	टीना 6
टीना 6	सीमा2	गीता1	टीना 3	रीटा 4	सीता 5
गीता 4	सीता5	मीना1	नीता 2	दीना 3	सीमा 6

2) पासे के छ. फलक पर 1 से 6 अंक तक लिख दें।

क्रियाविधि :– पूर्ववत।

पासा कैसा हो ? :– लकड़ी, मिटटी, कागज, प्लास्टिक, थर्माकोल आदि से स्वयं निर्मित करें।

बिल्लस खेल के माध्यम से शिक्षण

गतिविधि (12) :– बिल्लस खेल से वर्ण पहचान

निर्देश :– जमीन पर चित्रानुसार बिल्लस खेल हेतु आयताकार आकृति बनावें। लगभग 6 से 8 वर्णों का चयन करें। उन्हें बिल्ल्स के खाने में इस प्रकार से लिख देवें :–

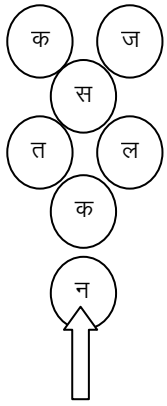

क्रियाविधि :– बच्चों से कहें कि वे एक–एक वर्ण के खाने पर कूदकर वर्ण को जोर से बोलते जायें। यदि वर्ण का उच्चारण गलत करते हैं तो साथी सहीं उच्चारण बताकर मदद करेंगें। इस प्रकार सभी बच्चे बारी–बारी से गतिविधि करेंगें।

गतिविधि (13) :– बिल्लस खेल से मात्रा वाले वर्णों की पहचान

निर्देश :– लगभग 6 से 8 मात्रा वाले वर्णों का चयन करें। उन्हें बिल्ल्स के खाने में इस प्रकार से लिख देवें तथा खपरैल या अन्य वस्तु के बिल्लस में चॉक से या कागज चिपकाकर कोई एक मात्रा लिख लें। जैसे '' ी '' ल का ली :–

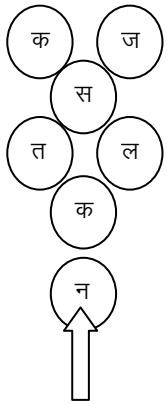

क्रियाविधि :– बच्चे मात्रा वाली बिल्लस फेकेंगें । बिल्लस जिस वर्ण पर जायेगा उस वर्ण को मात्रा लगाकर उच्चारण करेंगें। इसी प्रकार अन्य मात्राओं के बिल्लस बनाकर अन्य वर्णों के साथ सीखाया जा सकता है।

गतिविधि (14) :– बिल्लस खेल से शब्द निर्माण

निर्देश :– शिक्षक बच्चों की आवश्यकतानुसार वर्ण व मात्रा का चयन करेगें।

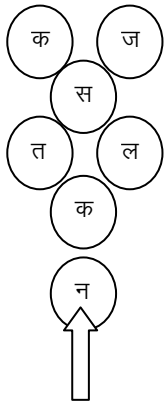

क्रियाविधि :– बच्चे एक वर्ण पर कूदकर वह वर्ण बोलेगा, फिर दूसरे वर्ण पर कूदकर दूसरा वर्ण बोलेगा। इस तरह दोनो वर्णों को फिर से बोलेगा। जैसे पहले कूद में ''क'' दूसरे कूद में ''ल'' दोनो मिलाकर 'कल' शब्द का उच्चारण करेगा। इसी तरह ''मा'' ''ला'' ''माला'' का उच्चारण करेगा। बच्चे बारी–बारी से क्रियाविधि दोहरायेंगें। अन्य साथी कार्य में सहयोग प्रदान करेंगें।

गतिविधि (15) :– बिल्लस खेल से शब्द पहचान

निर्देश :– शिक्षक बिल्लस के खंडो में छोटे वाक्यों के शब्दों को अलग–अलग लिखा जाये। जैसे मोहन खाना खा।

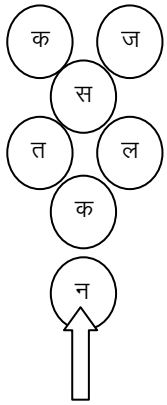

क्रियाविधि :– शिक्षक उन्हीं वाक्यों का उच्चारण करे जो बिल्लस के खाने में लिखा है। बच्चे वही शब्दों पर कूद कर बोलेगा।

ग्रामीण खेल 'भट–कउला' के माध्यम से शिक्षण

गतिविधि (16) :– वर्ण पहचान

निर्देश :– लगभग 8 से 10 गोल घेरे बना लेवें। साथ हीं अलग–अलग पर्ची में 40–50 वर्णों को लिख लेवें। प्रत्येक गोले में 5–5 वर्ण पर्ची रखें। एक समय में दो विद्यार्थी इस खेल को खेल सकते हैं।

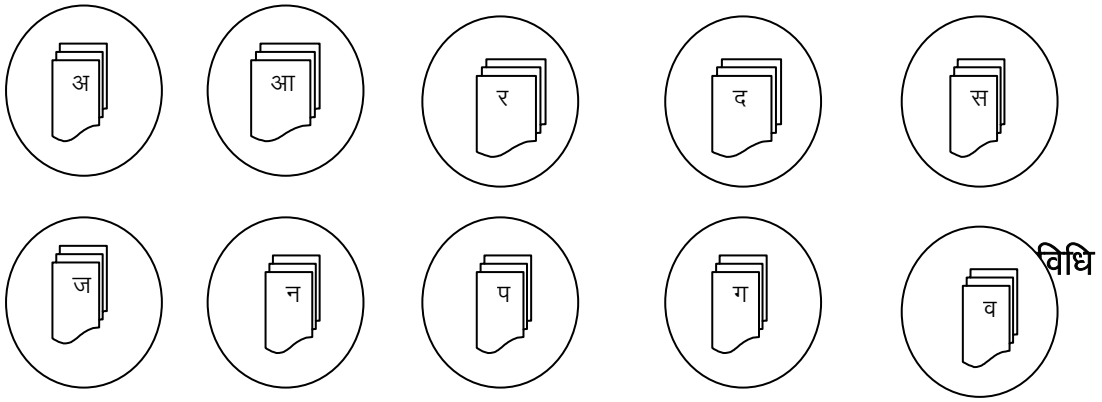

विधि

:– एक बच्चा किसी भी गोले का पर्ची उठाकर पढ़ेगा और आगे की गोले में रखता जायेगा। पर्ची खत्म होने के बाद अगले गोले से पर्ची उठाकर उसी प्रकार पढ़ते हुये आगे के गोले में रखता जायेगा। जहॉ उसे अंत में खाली गोले मिलेगा, उस समय उसकी बारी समाप्त होगी तथा दूसरे बालक को मौका मिलेगा।

गतिविधि (17) :– मात्रा पहचान (12 खड़ी)

निर्देश :– लगभग 8 से 10 गोल घेरे बना लेवें। साथ हीं अलग–अलग पर्ची में 40–50 मात्राओं को लिख लेवें। प्रत्येक गोले में 5–5 मात्रा पर्ची रखें। एक समय में दो विद्यार्थी इस खेल को खेल सकते हैं।

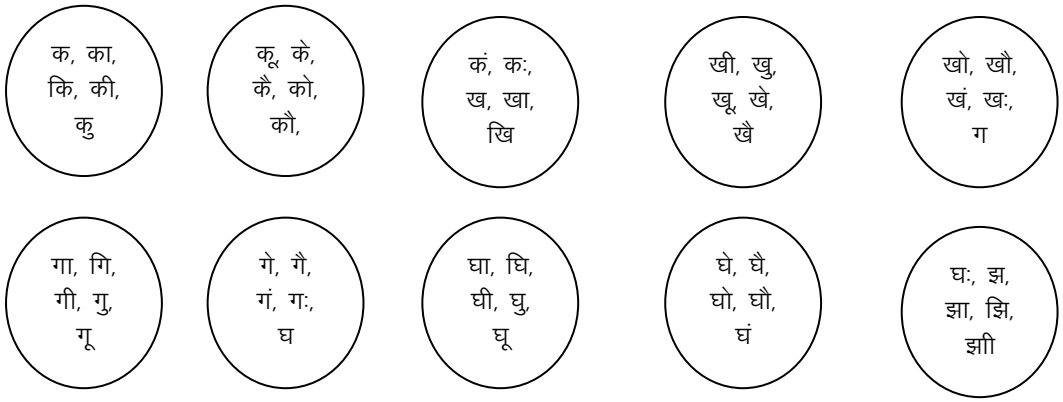

क्रियाविधि :– पूर्ववत।

टीप :– गलती होने पर बच्चे परस्पर सहयोग से सुधार करेगें।

गतिविधि (18) :– शब्द अभ्यास (बिना मात्रा वाले)

निर्देश :– लगभग 8 से 10 गोल घेरे बना लेवें। साथ हीं अलग–अलग पर्ची में 40–50 शब्दों को लिख लेवें। प्रत्येक गोले में 5–5 शब्दों की पर्ची रखें। एक समय में दो विद्यार्थी इस खेल को खेल सकते हैं।

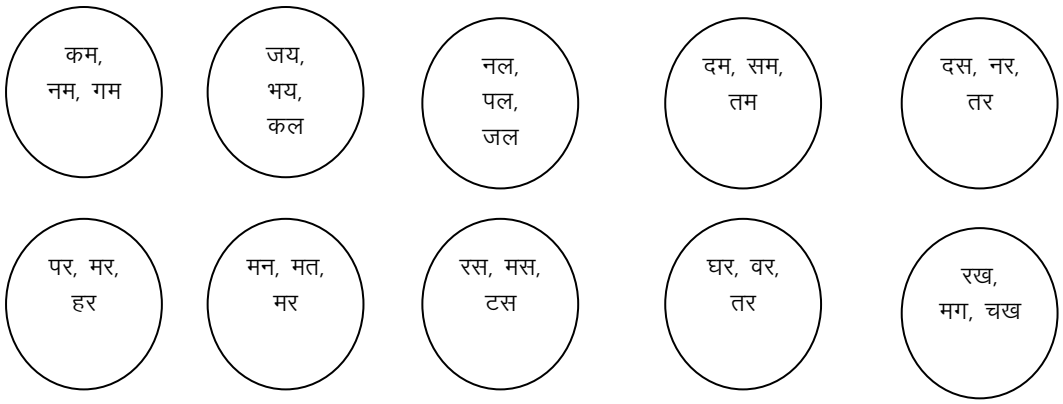

क्रियाविधि :– पूर्ववत।

गतिविधि (19) :– शब्द अभ्यास (मात्रा वाले)

निर्देश :– लगभग 8 से 10 गोल घेरे बना लेवें। साथ हीं अलग–अलग पर्ची में 40–50 शब्दों को लिख लेवें। प्रत्येक गोले में 5–5 शब्दों की पर्ची रखें। एक समय में दो विद्यार्थी इस खेल को खेल सकते हैं।

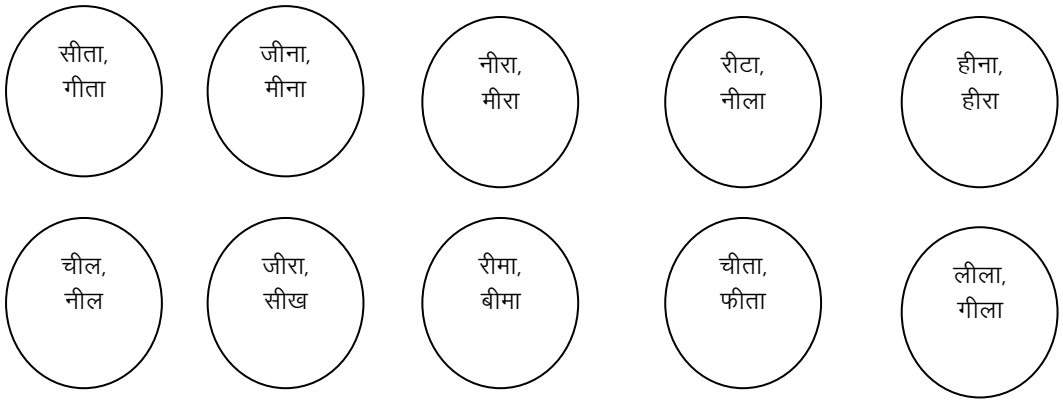

क्रियाविधि :– पूर्ववत।

ग्रामीण खेल 'नदी–पहाड़' के माध्यम से शिक्षण

गतिविधि (20) :– वर्ण पहचान

क्रियाविधि :– शिक्षक प्रतीकात्मक रुप से ऊंचे स्थान जैसे कला मंच, चबूतरा, सीढ़ी, रैम्प आदि को पहाड़ एवं नीचे स्थान या छोटे गढढ़ों को नदी की संज्ञा देवें। छोटे–छोटे पर्चियों में वर्णों को लिखकर नदी में बिखरा देवें।

एक विद्यार्थी इन पर्चियों का रक्षक होगा, बाकि बच्चें इन पर्चियों को उठाने के लिये अपने स्थान से उतरकर वापस पहाड़ क्षेत्र में जायेगें और पर्ची में लिखे वर्णों को पढ़कर सुनायेगें। इसी प्रकार गतिविधि मात्रा, शब्द निर्माण, छोटे वाक्य निर्माण में दुहरा सकते हैं।

इस स्थान पर मुद्रक नदी–पहाड़ का खेल खेलते हुये बच्चों के चित्र इंटरनेट या स्कैन कर मुद्रित करें।

कबड्डी के माध्यम से शिक्षण

गतिविधि (21) :– वर्ण कबड्डी

निर्देश :–

1) शिक्षक वर्णों की पर्चियां बनाकर दो अलग–अलग डिब्बों में रखेगा।
2) डिब्बों को कबड्डी खेल मैदान के मध्य लकीर के दोनो तरफ रखेगा।

कियाविधि :–

1) जब बच्चा रेस करने जायेगा तो एक पर्ची उठाकर लगातार पढ़ते हुये कबड्डी का खेल खेलेगा। जैसे घ, घ, घ, घ.....घ।
2) दूसरे पक्ष के बच्चे भी डिब्बे से एक पर्ची उठाकर सर्विस करते समय उस वर्ण का उच्चारण करेगा। जैसे म,म,म,म,म,म.....म।
3) बाकी प्रकिया कबड्डी के नियम के अनुरुप होगी।

गतिविधि (22) :– मात्रा कबड्डी

निर्देश :–

1) शिक्षक मात्रायुक्त वर्ण पर्चियां बनाकर दो अलग–अलग डिब्बों में रखेगा।
2) डिब्बों को कबड्डी खेल मैदान के मध्य लकीर के दोनो तरफ रखेगा।

कियाविधि :–

1) जब बच्चा रेस करने जायेगा तो एक पर्ची उठाकर लगातार पढ़ते हुये कबड्डी का खेल खेलेगा। जैसे गी, गी, गी, गी.....गी।
2) दूसरे पक्ष के बच्चे भी डिब्बे से एक पर्ची उठाकर सर्विस करते समय उस वर्ण का उच्चारण करेगा। जैसे मी,मी,मी,मी,मी.....मी।
3) बाकी प्रकिया कबड्डी के नियम के अनुरुप होगी।

गतिविधि (23) :– शब्द कबड्डी

निर्देश :–

1) शिक्षक सरल शब्दों की पर्चियां बनाकर दो अलग–अलग डिब्बों में रखेगा।
2) डिब्बों को कबड्डी खेल मैदान के मध्य लकीर के दोनो तरफ रखेगा।

कियाविधि :–

1) जब बच्चा रेस करने जायेगा तो एक पर्ची उठाकर लगातार पढ़ते हुये कबड्डी का खेल खेलेगा। जैसे कल, कल, कल, कल.....कल।
2) दूसरे पक्ष के बच्चे भी डिब्बे से एक पर्ची उठाकर सर्विस करते समय उस वर्ण का उच्चारण करेगा। जैसे जग, जग, जग, जग.....जग।
3) बाकी प्रकिया कबड्डी के नियम के अनुरुप होगी।

वर्ण चक्र के माध्यम से शिक्षण

गतिविधि (24) :– वर्ण चक्र

निर्देश :– शिक्षक श्याम पट या फर्श पर उपरोक्त चित्र अंकित करे। इस गतिविधि को बच्चे साथी या समूह के साथ कर सकते हैं।

क्रियाविधि :– एक बच्चा क्रमशः चक्र की दिशा में घूमते हुये वर्णों को पढ़ने का अभ्यास करेगें। साथी इनका सहयोग करेंगें।

गतिविधि (25) :– मात्रा चक्र

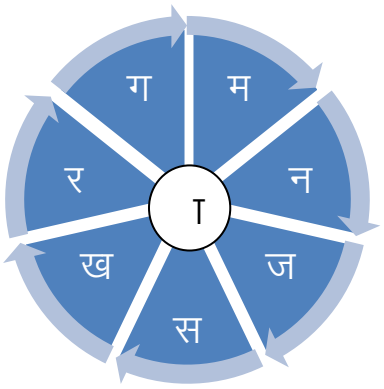

क्रियाविधि :– बच्चा क्रमशः चक्र की दिशा में घूमते हुये वर्णों के साथ ''T'' की मात्रा जोड़कर पढ़ने का अभ्यास करेगें। साथी इनका सहयोग करेंगें।

टीप :– शिक्षक इसी प्रकार अन्य मात्राओं जैसे ि ी ु ू आदि का अभ्यास करायेगें।

गतिविधि (26) :– शब्द चक्र (बिना मात्रा के)

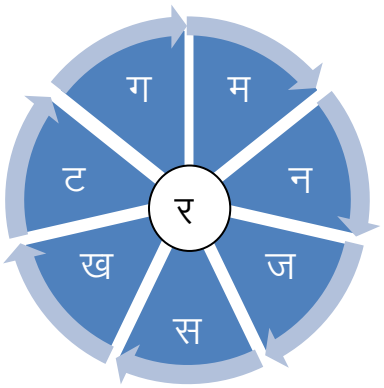

क्रियाविधि :– बच्चा क्रमशः चक्र की दिशा में घूमते हुये वर्णों के साथ ''र'' वर्ण जोड़कर पढ़ने का अभ्यास करेगें जैसे – नर। साथी इनका सहयोग करेंगें।

गतिविधि (27) :– शब्द चक्र (मात्रा युक्त)

क्रियाविधि :– बच्चे ''रा'' वर्ण के साथ अन्य चक्र में दिये गये वर्ण को जोड़कर शब्द का निर्माण करेगें। जैसे :– लारा, जारा आदि।

टीप :– शिक्षक इसी प्रकार अन्य मात्राओं जैसे ि, ी , ु, ू आदि को चक्र में लिखकर बच्चों को पठन अभ्यास संपादित करायें।

अक्षर पर कूदो के माध्यम से शिक्षण

गतिविधि (28) :– वर्ण के लिये

निर्देश :– शिक्षक जमीन पर गोला बना देगें तथा उस गोले पर अलग–अलग अक्षर लिख देगें। फिर बारी–बारी से प्रत्येक बच्चे के बीच के गोले में खड़े करके एक–एक अक्षर का नाम लेते जाएँगे और बच्चा उस अक्षर को पढ़कर गोले में कूदते जाएँगे। इस प्रकार बच्चे खेल–खेल में वर्ण पढ़ना सीख जाएँगे।

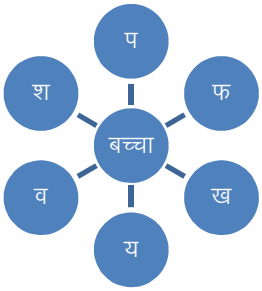

गतिविधि (29) :– मात्रा पढ़ो और कूदो

निर्देश :– पूर्ववत

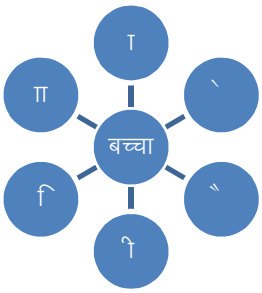

गतिविधि (30) :– शब्द के लिये

निर्देश :– पूर्ववत।

जोड़ी मिलाते हुये शिक्षण

गतिविधि (31) :– वर्णो से शब्द निर्माण

निर्देश :– शिक्षक बच्चों को दो समूह में बॉट देवें। दोनो समूह के बच्चों को अक्षर लिखा हुआ कार्ड देवें। शिक्षक दो वर्णों से मिला हुआ शब्द जैसे – मन, घर, चल, कल आदि शब्द बोलें और दोनो समूह से वह वर्ण वाला कागज की पर्ची मिलाकर बच्चा उस शब्द को पढ़े।

घ	स	प	छ

र	म	न	ट

जैसे :– घ+र – घर आदि

गतिविधि (32) :– दो शब्दों से नया शब्द का निर्माण

निर्देश :– शिक्षक बच्चों को कागज की पर्ची देवें। जिसमें अलग–अलग शब्द लिखा हों तथा दो शब्दों को मिलाने पर नया शब्द बने। उदाहरण जल+वायु, जन+हित, भेद+भाव आदि। शिक्षक जैसे हीं शब्द को बोले बच्चे अपनी पर्ची कार्ड को पढ़कर उस शब्द को पूरा करें। इससे बच्चे इसकी सहायता से नये शब्द का निर्माण करेगें।

राज	वन	खेल	माता

पिता	मैदान	वासी	महल

गतिविधि (33) :– जोड़ी मिलाओ वाक्य बनाओ

निर्देश :– शिक्षक बच्चों को कागज पर वाक्यों को तोड़कर एक–एक शब्द देगें। जैसे हीं शिक्षक उस वाक्य को बच्चों से कहे फिर बच्चे अपनी–अपनी पर्ची को पढ़कर उस वाक्य को पूरा करें। जैसे :– यह पेन है। वह घर है। आदि

गतिविधि (34) :– मैं कौन हूँ ?

निर्देश :– शिक्षक बच्चों को कागज की पर्ची पर फूलों के नाम कागज की पर्ची पर लिखकर दें और उनसे पूछें बताओ तुम कौन हो ? सभी बच्चे अपनी–अपनी पर्ची पढ़कर बताऍगें। इसी तरह शिक्षक फूल के अतिरिक्त फल, पक्षी, सब्जी, फसलें आदि पर्ची में लिख सकते हैं। उदाहरण :– गुलाब, गेंदा, चमेली आदि।

गतिविधि (35) :– खाली पैकेट से पढ़ाई

निर्देश :– शिक्षक बच्चों को बिस्किट, चाकलेट या अन्य वस्तुओं के खाली रैपर देकर बच्चों से पढ़ने कहें। फिर सभी बच्चों से उस खाली पैकेट का नाम पूछें। शिक्षक बच्चों से पैकेट पर लिखी जानकारी जैसे निर्माण तिथि, बैच नम्बर, एक्सपायरी तिथि आदि की जानकारी लेवे। इस प्रकार खाली उत्पादों के रैपर को एकत्र कराकर शून्य निवेश पर पढ़ने में किया जा सकता है।

''कौन रुठ कर चल दी– ढूँढ़कर लाओ जल्दी''

गतिविधि (36) :– वर्ण स्तर के लिये

निर्देश :–

1) शिक्षक वर्णों की पर्ची बनाकर रखेगा। जितने बच्चे खेल रहे होगें सबके पास वर्णों की पर्चियों को देने होगें या कम से कम 4 डब्बों में गोले के बीच रखकर पर्चियों को उसमें डाल देगें।
2) बच्चों को गोल घेरा बनवाकर उस घेरे में घूमने को कहा जायेगा और समझाया जायेगा कि सभी बच्चे एक साथ बोलेगें कि ''**ढूँढ़कर लाओ जल्दी।**
3) शिक्षक घेरे के बीच में या घेरे के साथ जहॉ ईच्छा हो रहकर स्वयं बोलेगा कि कौन रुढ कर चल दी, इस पर बच्चे बोलेगें, ढूँढ कर लाओ जल्दी। प्रक्रिया चलने लगेगी।
4) फिर शिक्षक पर्चियों में लिखे वर्ण को बोलेगा। इस पर बच्चे जल्दी से 'प' लिखे पर्ची को ढूंढकर दिखायेगें और जोर से पढ़कर सुनायेगें।
5) जो बच्चे जल्दी ढूंढ लेगें, उनका नम्बर जोड़ा जायेगा। अधिक नम्बर पाने वाले बच्चों को ताली बजवाकर प्रोत्साहन दिया जावेगा।
6) यह प्रक्रिया निरंतर जारी रखा जायेगा। जिससे बच्चों की रुचि निरंतर बनी रहे।

टीप :– इसी प्रकार शिक्षक अपने विवेक से मात्रा, शब्द निर्माण करवा सकते हैं।

विष–अमृत खेल से शिक्षण

गतिविधि (37) :– वर्ण स्तर के लिये

निर्देश :–

1) सभी बच्चों के पास वर्ण की पर्ची बनाकर रख दें। जिन वर्णों को सीखाना चाहते हैं उन वर्णों की पर्ची प्रत्येक बच्चे की जेब में रखें।
2) अब विष–अमृत का खेल प्रारंभ करें। जिसमें जो बच्चा दान देने वाला है, वह बच्चों को दौड़ाकर छूयेगा। जिस बच्चों को वह छू लेगा, वह वहीं पर बैठ जायेगा। फिर दाम देने वाला बच्चा अपनी जेब से एक पर्ची निकालकर उस बैठे बच्चे को देगा। बैठा हुआ बच्चा उस पर्ची पर लिखे अक्षर को पढ़कर सुनायेगा।
3) यदि बच्चा अक्षर पर्ची को पढ़ लेता है तो वह उठकर भगने लगेगा। यदि वह बच्चा नही पढ़ पाये तो अब दाम देने की उसकी बारी होगी।
4) इसी प्रकार यह खेल अनवरत चलेगा।

टीप :– इसी प्रकार शिक्षक अपने विवेक से मात्रा, शब्द, वाक्य निर्माण करवा सकते हैं।

कुर्सी–दौड़ खेल से शिक्षण

गतिविधि (38) :– वर्ण स्तर के लिये

निर्देश :–

1) शिक्षक वर्णों की पर्चियां बनाकर सभी कुर्सियों के पास रखेंगे। जैसे– क, ख, ग, घ।
2) इन पर्चियों को छोटे–छोटे डिब्बों में कुर्सियों के ऊपर रखेगें।
3) फिर बच्चों को कुर्सी दौड़ का खेल प्रारंभ करायेंगें और घंटी बजाना शुरु होगा। बच्चें कुर्सियों के घेरे में चक्कर लगाना शुरु करेंगें जैसे हीं घंटी बंद होगी बच्चे जिस कुर्सी के पास होगें उसमें रखे डब्बे से एक पर्ची उठाकर पढ़ेगा और जोर से बोलकर सभी को पर्ची दिखायेगा।
4) जो बच्चा पढ़ लेगा उसके नाम के सामने एक प्वांइट बढ़ जायेगा।
5) जो बच्चा नही पढ़ पायेगा उसे पुनः अवसर प्रदान किया जायेगा।
6) खेल समाप्त होने पर अधिक अंक अर्जित किये विद्यार्थी को सम्मानित किया जायेगा।

टीप :– इसी प्रकार शिक्षक अपने विवेक से मात्रा, शब्द, वाक्य निर्माण करवा सकते हैं।

नाम से शिक्षण

गतिविधि (39) :– नाम से वर्ण पहचाने

निर्देश :–

1) शिक्षक बच्चों के नाम लिखवाकर पढ़ने को कहें।
2) नाम में आने वाने वर्ण को पृथक करने कहें।
3) बच्चें जब अपने नाम में आने वाले वर्णों को अलग–अलग पढ़ लें तब अगला निर्देश देवें।
4) पाठयपुस्तक से उनके नाम के वर्णों से प्रारंभ होने वाले वर्णों को ढूंढकर लिखने व पढ़ने को कहें।
5) ठीक इसी तरह बच्चें के माता–पिता, भाई–बहनों आदि परिजनों के नाम से वर्ण को पृथक करने कहे।

वर्ण चार्ट से शिक्षण

गतिविधि (40) :– नाम से वर्ण पहचाने

निर्देश :–

1) शिक्षक श्यामपट पर निम्नवत चार्ट बनायेगें व अभ्यास करायें ।
2) इस चार्ट के द्वारा दो वर्णों को जोड़कर शब्द पढ़ने का भी अभ्यास कराया जा सकता है। जैसे :– ग+म – गम, न+ग – नग, न+र – नर आदि।

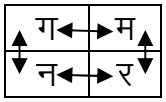

टीप (1) :– इस प्रकार शब्द चार्ट बनाकर पठन अभ्यास करायें।

घर	जल
भर	चल

टीप (2) :– चार्ट के शब्दों को जोड़कर वाक्य का अभ्यास करायें जैसे– घर चल, जल भर आदि।

चैन मैप से शिक्षण

गतिविधि (41) :– वर्ण की पहचान

निर्देश :–

1) शिक्षक श्यामपट पर निम्नवत चैन मैप बनायेगें ।

2) इस चार्ट के वर्णों को जोड़कर शब्द पढ़ने का अभ्यास करायें जैसे :– प+म – पम आदि।

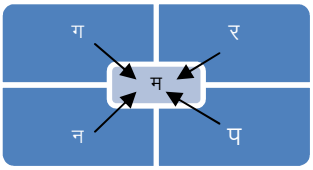

गतिविधि (42) :– तीन वर्णों से शब्द का अभ्यास

निर्देश :–

1) शिक्षक श्यामपट पर निम्नवत चैन मैप बनायेगें। जैसे– ग+र+म– गरम आदि।

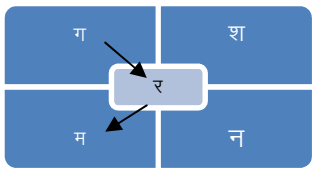

गतिविधि (43) :– शब्द जोड़कर वाक्य पठन

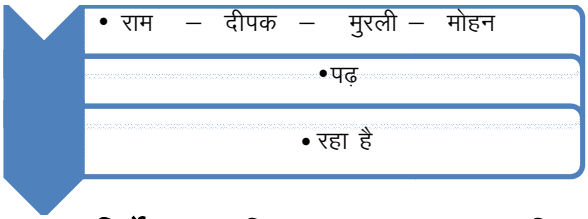

निर्देश :– शिक्षक श्यामपट पर निम्नवत चैन मैप बनायेगें। जैसे– राम+पढ़+रहा+है– राम पढ़ रहा है इसी प्रकार दीपक पढ़ रहा है आदि।

अक्षर पट्टी–शब्द पट्टी से शिक्षण

गतिविधि (44) :– वर्ण की पहचान

निर्देश :– चार गुणित पांच ईंच के कोरे कागज को क्रमशः तह में एक दूसरे के नीचे पिन लगाकर रख दें। तत्पश्चात उसमें चयनित वर्णों को लिख देवें। बच्चे उसे लघु डायरी के रुप में क्रमशः अध्ययन करें। इसी प्रकार के मात्रा वाली पर्ची, मात्रा लगे हुये वर्ण पर्ची, दो वर्णो से बने हुये शब्द पर्ची का निर्माण कर ले।

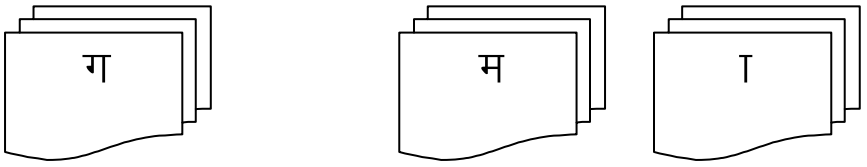

गतिविधि (45) :– मात्रा अभ्यास

निर्देश :– वर्ण वाली पर्ची के समीप मात्रा वाली पर्ची सटाकर उच्चारण करायें। एक–एक पर्ची पढ़कर खोलने से नीचे दूसरे वर्ण और मात्रा अभ्यास के लिये मिलेंगें।

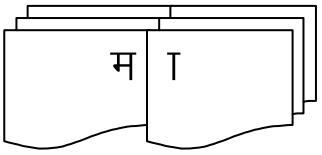

गतिविधि (46) :– शब्द पट्टी अभ्यास

निर्देश :– प्रत्येक पर्ची में मात्रा के सरल शब्द या मात्रा युक्त शब्द लिखें और अभ्यास करें। बहुत सारे शब्द बच्चों को पढ़ने को प्राप्त होगें। जैसे :–

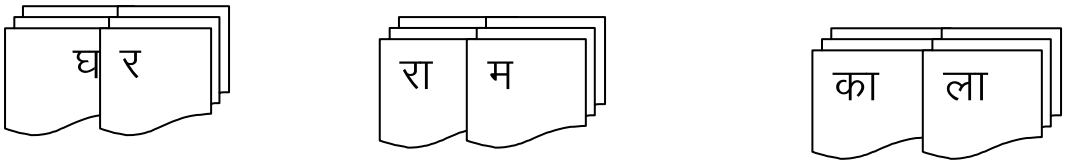

गतिविधि (47) :– वाक्य पट्टी अभ्यास

निर्देश :– प्रत्येक पर्ची में सरल शब्द लिखें और वाक्य पढ़ने का अभ्यास करें। बहुत सारे वाक्य बच्चों को पढ़ने को प्राप्त होगें।

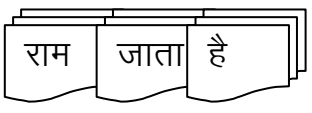

मेरे हाथ में क्या है ? खेल से शिक्षण

गतिविधि (48) :– वर्ण की पहचान

निर्देश :– बच्चे गोल घेरे में बैठे रहेंगें। बड़े गोले के बीच में एक छोटे गोले में वर्ण पर्ची रहेगी।

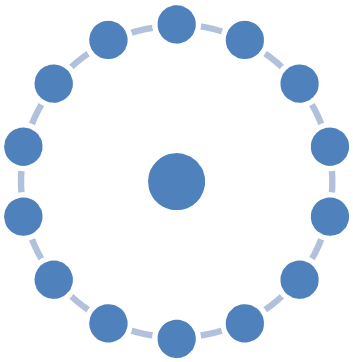

क्रियाविधि :– एक बच्चा एक पर्ची उठाकर बोलेगा और साथ हीं गोले में बैठे सभी साथी के पास जाकर पूछेगा। मेरे हाथ में क्या है , इस तरह सभी बच्चे बारी–बारी से गतिविधि करेगा।

टीप :– इसी प्रकार शिक्षक मात्रा, शब्द, वाक्य आदि का अभ्यास करा सकते हैं।

गाना बजाओ डिब्बा घुमाओ से शिक्षण

गतिविधि (49) :– वर्ण की पहचान

निर्देश :– शिक्षक बच्चों को समूह के घेरे में बैठायें। एक डिब्बा जिसमें कुछ वर्ण की पर्चियां लिखी हों उसे बच्चे एक दूसरे को पास करेंगें। शिक्षक तालियों या गाने की सहायता से बजाकर गतिविधि आरंभ करेंगें। बच्चे तालियां या गाना आरंभ के समय डिब्बा एक दूसरे को पास करेंगें। जब तालियां या गाना बंद होने पर जिस बच्चे के पास वर्ण पर्ची का डिब्बा रहेगा वह बच्चा अपने स्थान पर खड़ा होकर वर्ण को पढ़कर सुनायेगा। यह प्रक्रिया बारी–बारी से चलेगी।

(टीप :–इसी प्रकार शिक्षक मात्रा, शब्द, वाक्य आदि का अभ्यास करा सकते हैं।)

''खो–खो खेलो और बोलो''

गतिविधि (50) :– वर्ण पहचान

निर्देश :–

1. खो की जगह वर्ण बोलना है। इसके लिए बच्चों को जिन वर्णों को सिखाना है बच्चों की पीठ पर और उसके आगे वर्ण का पर्ची बनाकर पर चिपका दें।

2. दौड़ते हुए जिस बच्चे को छुएगा, उसे चिपके हुए वर्ण को उच्चारण करना है।
3. सही उच्चारण पर ही बच्चा उठेगा अन्यथा बैठा रहेगा।
4. शिक्षक खेल के लिए आवश्यकता अनुसार समय का निर्धारण करें।
5. खो–खो खेल के नियमानुसार यदि 18 बच्चों को सिखाना है तो 9 बच्चे पहले बैठेंगे। समय पूर्ण होने पश्चात् शेष 9 बच्चे बैठेंगे।

निर्देश :– मात्रा पहचान एवं शब्द पहचान के लिए मात्रा एवं छोटे–छोटे वाक्यों को बच्चों की पीठ एवं सामने चिपकाकर उपरोक्तानुसार गतिविधि करा सकते हैं।

''बैडमिंटन खेलो और बोलो''

गतिविधि (51) :– वर्ण पहचान

निर्देश :–

1. दो बच्चे बैडमिंटन या स्लेट से बैडमिंटन का खेल खेलेंगे।
2. दो ओर बॉक्स में वर्णों की पर्ची होगी।
3. जिस बच्चे की ओर शटल कॉक गिरेगा वह बॉक्स से पर्ची निकालेगा और पढ़ेगा। पढ़ लेने पर एक बच्चे के बाद पुनः खेलेगा। अन्यथा बाहर रहेगा। जिस बच्चे की ओर शटल कॉक गिरेगा वह बाहर होगा और दूसरा बच्चा जुड़ेगा। जिसकी तरफ शटल नही गिरेगा वह लगातार खेलता रहेगा। पर्ची में सिखाये जाने वाले वर्ण को रखेगें और वही बच्चे खेलेगें जिन्हें सीखाना है।

(टीप :–इसी प्रकार शिक्षक मात्रा, शब्द, वाक्य में बच्चों के स्तर अनुसार अभ्यास करा सकते हैं।)

रेलगाड़ी का खेल

गतिविधि (52) :– वर्ण स्तर के लिये

निर्देश :–

1 शिक्षक वर्णो की पर्ची बनाकर एक बच्चे की जेब में उन पर्चियों को रखेगा।

2 जिस बच्चे की जेब में वह पर्ची रखा जाएगा उसे वर्णों का ज्ञान हो तथा व रेलगाड़ी के ईंजन की जगह अर्थात सामने होगा।

3 खेल प्रारंभ होगा बच्चे इंजन के पास अर्थात पर्ची रखे बच्चे के पास जाएगा। वह बच्चा पर्ची निकाल कर देगा जब दसरा बच्चा उस पर्ची में लिखे वर्ण को पहचान लेगा तो वह इस ईंजन बने बच्चे के पीछे जुड़ते जाएगा और रेल के डिब्बे धीरे–धीरे बनते जाएंगे।

4 बच्चे रेलगाड़ी का खेल खेलते रहेगें और गाते जाएगें रेल चली भई रेल चली छुक छुक छुक छुक रेल चली।

5 तीसरा बच्चा ईंजन के पास आएगा, ईंजन बना बच्चा उसे भी ''म'' लिखा पर्ची देगा वह तीसरा बच्चा पर्ची को पढ़कर बोलेगा ''म'' और फिर तीसरा बच्चा पीछे डब्बा बन जायेगा और गीत गायेगें रेल चली भई, रेल चली म अक्षर की रेल चली।

6 यह प्रक्रिया अनवरत चलती रहेगी, बच्चे खेलते रहेगें।

टीप :– इसी प्रकार शिक्षक मात्रा, शब्द का पठन करायेगें।

अंताक्षरी का खेल

गतिविधि (53) :– शब्द स्तर के लिये

निर्देश :–

1 शिक्षक श्यामपट पर वर्गाकार खाने चाक से खींच देगा जो बच्चों की पहुॅच में हो।

2 अब शिक्षक पहले खाने में एक शब्द लिख देगा जो कि दो अक्षर का होगा, बिना मात्रा का होगा और सार्थक शब्द होगा। जैसे – मन, घर, फल आदि।

3 अब शिक्षक बच्चों को निर्देश देगा कि अंतिम वर्ग से शुरु होने वाले शब्दों को बच्चे बोले और आगे लिखते जाए। फिर बच्चे चाक उठाकर उसे आगे बढ़ायेगें और यह प्रक्रिया निरंतर चलती रहेगी।

4 इस तरह बच्चा आगे के खानो में स्वयं से लिखेगा और पढ़ कर सुनायेगा।

टीप :– इस प्रकार शिक्षक सरल से कठिन की ओर बच्चों को ले जाएगा।

अनुच्छेद पहेली का खेल

गतिविधि (54) :– शब्द स्तर के लिये

निर्देश :–

1 षिक्षक श्यामपट पर एक छोटा पैराग्राफ लिखे। जिसमें कुछ शब्दों को दोहराया जाये। जैसे :– बंदर ने बगीचें में केला देखा। बगीचे का केला बहुत सुंदर, पीले–पीले व स्वस्थ दिख रहे थे। बंदर को बगीचे के सुंदर पीले–पीले स्वस्थ केले को देखकर लालच आ गया। वह बगीचे की दीवार पर चढ़ गया। अब उसे केले को देख देखकर रहा नही जा रहा था। उस सुंदर पीले पीले स्वस्थ केले को देखकर उसके लार टपकने लगे।

2 इस तरह के अनुच्छेदों का चयन कर शिक्षक श्यामपट पर लिख दें और बच्चों को उच्च स्वर में पढ़ने के लिये कहे।

3 जब सभी बच्चे पढ़ लें तो शिक्षक बच्चों से पूछ ले कि केला शब्द कहां कहां पर है ध्यान से देखो और उस पर उंगली या डंडा रखकर बताओ।

4 जब सभी बच्चे पढ़ ले तो शिक्षक बच्चों से केला शब्द कहॉ कहॉ पर है उसे ध्यान से देखकर उस पर उंगली या डंडा रखकर बताने कहे।

5 जो बच्चा सम्मुख आये उसे अवसर प्रदान करे।

6 इस तरह अन्य शब्दों को भी दूसरे बच्चों को ढूॅढकर पढ़ने को कहे।

7 इस प्रक्रिया में पाठय पुस्तक या अन्य बाल कहानियों के पुस्तकों के अनुच्छेदों का भी उपयोग किया जा सकता है।

मेरी रचना

गतिविधि (55) :– शब्द स्तर के लिये

निर्देश :–

1 शिक्षक बच्चों को निर्देश देवें कि श्यामपट पर लिखें शब्दों को पढ़े और किसी एक शब्द पर दस वाक्य लिखें और सभी बच्चों को सुनाएँ।

2 शिक्षक श्यामपट पर बच्चों के स्तर के अनुरुप मूर्त एवं परिवेषीय शब्दों को कम से कम दस शब्दों को लिख दे। ध्यान रहे ऐसे शब्दों का चयन करे जिन्हे बच्चे जानते हैं, अपने आसपास देखते है या इस्तेमाल होते हुये देखते हैं।

3 बच्चों को दस से पंद्रह मिनट का समय प्रदान करें फिर एक एक करके उन्हे अपने लिखे शब्दों के वाक्यो पर पढ़कर सुनाने का अवसर प्रदान करे।

गतिविधि (56) :– वाक्य स्तर के लिये

निर्देश :–

1 शिक्षक बच्चों को पूर्ववत निर्देश देगें।

2 शिक्षक श्यामपट पर 8 से 10 छोटे–छोटे वाक्य लिख दें जो बच्चों की कल्पनाशीलता को बढ़ाता हो या उनके आसपास घट रहे घटनाओं, कार्यों को इंगित करता हो। यह वाक्य उनके स्तर के अनुरुप भी हो। जैसे :– बंदर पेड़ पर बैठा था। रानी तालाब के पास खड़ी थी। तालाब किनारे आम का पेड़ था आदि।

3 वाक्य लिखने के बाद बच्चों को निर्देश दें कि वाक्य को अन्य वाक्य से जोड़कर आगे बढेगें।

4 सभी बच्चों को 10 से 15 मिनट का समय देवें।

5 इसके बाद सभी बच्चों को बारी–बारी से अपनी रचना पढ़कर सुनाने कहे।

टीप :– तीन से चार बच्चों के समूह में सार्थक परिणाम प्राप्त होगे।

अलग निकालो

गतिविधि (57) :– वर्ण स्तर के लिये

निर्देश :–

1 शिक्षक निम्नवत पर्चियों का निर्माण करे :–
क,क,क,म ।प,प,प,फ। ज, न, ज, ज। म, स, म, म।

2 दिये गये उदाहरण से स्पष्ट है कि एक पर्ची में वर्ण लिखा गया है जिसमें एक वर्ण की आवृती बार बार हुई है तथा एक वर्ण जो पहले से मिलता जुलता है सिर्फ एक बार आया है।

3 इसी तरह वर्णो की पर्चीयां बनाकर बच्चों को बारी बारी बुलाकर बोले की वर्णों को पढ़े और जो अलग हो उसे बाहर निकालें।

गतिविधि (58) :– शब्द स्तर के लिये

निर्देश :–

1 शिक्षक निम्नवत एक हीं गुण वाले शब्दों की पर्चियों का निर्माण करे :–
आम, सेब, मिठाई, केला

2 बच्चों से इसे वाचन करने कहे।

3 प्रत्येक शब्द का गुण पूछे।

4 शब्दों के समूह से भिन्न शब्द ढूंढने कहे एवं शब्द के भिन्न होने का कारण पूछें।

खुल जा सिमसिम

गतिविधि (59) :– वर्ण स्तर के लिये

निर्देश :– शिक्षक कागज की पर्ची पर कोई एक अक्षर लिखकर उन्हें मोड़ दे। पर्चियों को किसी प्लेट या टोकरी में रखकर बच्चों के बीच रख दे। फिर मजेदार सी आवाज में जब भी शिक्षक बोले खुल जा सिमसिम तो एक एक करके बच्चे पर्चियां खोले। पर्ची में जो अक्षर निकले उससे एक शब्द बोलना है।
जैसे :– घ से घर आदि।

पैटर्न पढ़ो

गतिविधि (60) :– वर्ण स्तर के लिये

निर्देश :– शिक्षक अक्षरों को एक निर्धारित पैटर्न में लिख दे। जैसे –
क, ख, क, ख, क, ख, क, ख .....
ग,ग,घ,घ,ग,ग,घ,घ.....
प,फ,भ,प,फ,भ,.....
इस पैर्टन में बच्चों को दोहराने कहे।

रिंग फेंको और बोलो

गतिविधि (61) :– वर्ण स्तर के लिये

निर्देश :– फर्श में बोर्ड बनाकर सिखाये जाने वाले वर्णों की पर्ची को बॉक्स के अंदर रखें। रिंग के विकल्प में प्लास्टिक की चूड़ी का प्रयोग करें। बच्चे कुछ दूरी से बोर्ड

पर रिंग को फेकेंगे। जिस वर्ण पर रिंग गिरेगा उस वर्ण को उठाकर बच्चा पढ़ेगा।

क	न	ब	र
अ	(म)	ज	स
द	व	य	ल
घ	श	न	थ

टीप :– बोर्ड बाक्स चौड़ा रखें। शब्दों एवं सरल वाक्यों का अभ्यास इस खेल के माध्यम से करा सकते हैं।

रिंग फेंको और बोलो

गतिविधि (62) :– वर्ण स्तर के लिये

निर्देश :–

1. कैरम बोर्ड के सभी गोटियों पर सिखाये जाने वाले वर्णों को चिपका देवें।
2. अधिकतम चार बच्चे एक साथ इस खेल को खेल सकते हैं।
3. बच्चे बॉकस में रखे वर्णों की पर्ची उठायेगें।
4. पर्ची में जो वर्ण लिखा होगा, उस वर्ण वाली कोटि को निशाना लगायेंगें।
5. जो बच्चा अधिक गोटियों में निशाना लगाया वह विजेता होगा।

टीप :– शिक्षक शब्दों एवं सरल वाक्यों का अभ्यास इस खेल के माध्यम से करा सकते हैं।

वर्ण सीढ़ी

गतिविधि (63) :– वर्ण स्तर के लिये

निर्देश :– वर्ण पहचान हेतु पूरे खानों में चयनित वर्णों को लिखें। पासे खेल के हिसाब से अपना गोटी रखकर उस खाने के वर्ण को पठन करे।

ज्ञ	ब	य	ष	र	व
म	स	ज्ञ	घ	ग	न
फ	द	क्ष	त	घ	म
क	र	प	द	च	त
ख	ल	म	व	ज	द
झ	व	न	य	झ	स

टीप :– पासे में हिन्दी वर्ण लिखे हों।

दौड़ो और बोलो

गतिविधि (64) :– वर्ण पहचान

1. दौड़ लगाने वाले बच्चों के अनुरुप अंक लिखकर पर्ची बनाएँगे। जिसे बच्चे उठाएँगे।
2. बच्चे पर्ची में अंक के अनुसार क्रम में दौड़ने के लिए खड़े होंगे।
3. जहाँ तक दौड़ कर जाना है वहाँ पर बॉक्स से पर्ची उठाना है और वापस लौटकर शिक्षक के सामने वर्ण को पढ़ना है।
4. शिक्षक बच्चों के क्रम को बदल–बदल कर दौड़ कराएँ।
5. जो बच्चा पहले लौटकर वर्ण को पढ़कर बताएगा वह विजयी होगा।

मात्रा पहचान गतिविधि :–

1. उपरोक्तानुसार मात्रा पहचान की गतिविधि करें।
2. एक समय में एक ही मात्रा की पहचान करायें।

शब्द पहचान गतिविधिः– इसी तरह शब्द पहचान की गतिविधी करवाएँ।

वाक्य पहचान गतिविधिः– इसी तरह वाक्य पहचान की गतिविधी करवाएँ।

टीपः–

1. क्रम के अनुसार बॉक्स में भी अंक लिखा होगा जिसमें वर्ण की पर्ची होगी।
2. यदि 5 बच्चे दौड़ रहे हैं तो क्रमशः 1, 2, 3, 4, 5 नंबर तक बॉक्स भी होंगे।
3. 20–25 मीटर की दूरी में ही दौड़ कराएँ।

जोड़ी मिलान

गतिविधि (65) :– वर्ण पहचान

1. सिखाए जाने वाले वर्णों का जोड़ी मिलान कराएँ।
2. इसके लिए ब्लेकबोर्ड का प्रयोग/ फर्श का प्रयोग/ कॉपी का प्रयोग कर सकते हैं।
3. जाड़ी मिलान करते हुए उच्चारण भी कराएँ।

A	B
प	भ
फ	प
व	व
भ	फ

गतिविधि (66) :– मात्रा पहचान

A	B
ा	अं
ि	ऐ
ी	ओ
ु	अः
ू	ए
ं	आ
ँ	औ
ो	इ
ौ	ई
(ृ)	उ
.	ऊ
:	ऋ

B. समान मात्रा वाले अक्षरो को पहचानिएः–

A	B
क	दु
का	तो
कि	चं
की	अ
कु	पि
कू	फः
के	रौ
कै	शा
को	तृ
कौ	घी
क्र	हे
कृ	भ्र
र्क	जू
कं	र्ष
कः	जै

निर्देश :–

1. इसी प्रकार शब्द एवं वाक्य पठन की गतिविधि कराई जा सकती है।
2. जोड़ी मिलान कराते समय बच्चे को उच्चारण भी कराएँ।

रेस–टीप का खेल

गतिविधि (67) :– वर्ण पहचान

1. एक समय में पाँच बच्चे खेलें।

2. सभी बच्चे अंक लिखी हुई पर्ची उठाएँ।
3. अंतिम अंक वाला बच्चा दाम देगा।
4. दाम देने वाला बच्चा कुछ दूर जाकर विपरीत दिषा में खड़ा होकर 100 तक गिनती गिनेगा।
5. तब तक बाकी बच्चे छिप जाएँगे।
6. निर्धारित स्थान पर ही छिपना होगा।
7. छिपने वाले बच्चों के आगे व पीछे वर्ण चिपके होंगे इन वर्ण की जानकारी छिपने वाले बच्चों को होगी।
8. ताकि गलत वर्ण बोलने पर दाम देने वाले बच्चे को छूकर रेस बोल सके।
9. दाम देने वाले बच्चे को सभी अन्य बच्चों को ढूँढकर उन पर लिखे वर्ण को पढ़ना होगा। जैसे – पहला टीप– 'प', दूसरा टीप– 'ग' आदि।
10. दाम देने वाले बच्चे को यह ध्यान रखना होगा कि छिपा हुआ बच्चा उसे वर्ण बोलने के पहले रेस मत कर दे, अन्यथा उसे फिर से दाम देना होगा।
11. यदि वह सभी बच्चों को ढूँढकर सफलतापूर्वक वर्णों को पढ़ लेता है तो जिस बच्चे को पहले ढूँढकर वर्ण को बोलते हुए टीप किया है वह दाम देगा।
12. इस तरह यह खेल चलता रहेगा।

निर्देश :–

1. मात्रा, शब्द और वाक्य को पढ़ने की गतिविधि भी इसी तरह कराई जा सकती है।

आओ वर्ण लुढ़कायें का खेल

गतिविधि (68) :– वर्ण पहचानें

1. षिक्षक घनाकार गुटके के ऊपर वर्ण लिख दें।
2. बच्चे बारी–बारी से वर्ण के गुटके को फेंकें।
3. बच्चे को गुटके में आए वर्ण को पढ़कर वर्णमाला चार्ट में दिखाने को कहें।

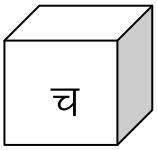

वर्णमाला चार्ट		
क	ख	ग
घ	ङ.	च
छ	ज	झ
ञ	त	थ

शब्दों का खेल :–

निर्देष :–

1. षिक्षक बच्चों के दो समूह बना लें।
2. पहला समूह अक्षरों के दो गुटके फेंके।
3. दूसरा समूह गुटके में आए उन दो अक्षरों को मिलाकर जो भी शब्द बनें उसे पढ़ें।

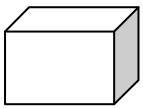

पासा क्र. 01

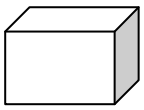

पासा क्र. 02

शब्द साथी ढूँढो

गतिविधि (60):– शब्द पहचान

निर्देशः– शिक्षक ऐसे शब्दों की पर्ची बनाएँ जो एक–दूसरे से साथी हो, जैसे– पेन–खोखा, जूता–मोजा, टेबल–कुर्सी,

कप–प्लेट, ट्यूब–टायर,

ताला–चाबी, लोटा–गिलास,

थाली–कटोरी, कड़ाही–चम्मच आदि।

क्रियाविधिः–1. इन पर्चियों को एक टोकरी में मोड़कर रख दें।

2. बच्चे को एक शब्द पर्ची निकालने के लिए कहें फिर उस शब्द के साथी पर्ची (जैसेः– मान लो बच्चे ने पेन शब्द की पर्ची निकाली। तो उसे अगली बार टोकरी में से पेन का साथी शब्द खोखा शब्द की पर्ची ढूँढकर निकालनी होगी)

यह गतिविधि सभी बच्चों के साथ दोहराएँ।

शब्द परिवार पहचान

गतिविधि (70):– शब्द पहचान

गिलास, घोड़ा, गुलाब, आम, लोटा, हाथी, मोंगरा, संतरा, थाली, शेर, गेंदा, अंगूर, कुर्सी, हिरण, चमेली, केला, पलंग, कुत्ता, आलमारी, कमल, नीबू, टेबल, भालू, बाघ, चम्मच, झाड़ू, चटाई आदि

निर्देशः— 1. शिक्षक ऐसे ही घर में मिलने वाली वस्तुओं के नाम, जानवरों के नाम, फलों व फूलों के नाम को श्यामपट्ट पर या कापी पर लिख दें।

क्रियाविधिः— दी गई सूची में से फलों के नाम को ढूँढकर, पढ़कर बच्चों से गोला लगवाएँ।

ठीक इसी तरह जानवरों के नाम पर गोला लगाने की चुनौती दें, फूलों के नाम पर गोला लगाने की चुनौती दें। तात्पर्य यह है कि बच्चों में किसी विशेष वर्ग समूह को पहचानने की क्षमता में वृद्धि हो सके।

पिट्टुल के खेल से शिक्षण

गतिविधि (71):— वर्ण स्तर के लिए

निर्देशः— 1. पाँच पिट्टुल (बिल्लस) बनाएँ जिसमें पाँच वर्णों को क्रमशः लिखें —

जैसेः—

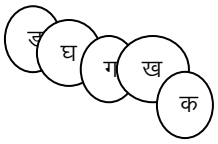

2. इसी तरह सारे वर्णों का पिट्टुल (बिल्लस) बनाकर रख लें और एक गेंद रखें।

3. खेलने के समय केवल पाँच पिट्टुल का प्रयोग करें जो कि वर्ण वर्ग समूह के क्रम में आता हो जैसे— क वर्ग समूह— क ख ग घ ड.

त वर्ग समूह — त थ द ध न

प वर्ग समूह — प फ ब भ म आदि

4. मान लीजिए हम क वर्ग के वर्णों का पिट्टूल लेते हैं और उसे खेलने के लिए क्रमशः एक के ऊपर एक जमाकर रखते हैं। क्रम कुछ भी हो सकता है।

जैसे—नीचे से ऊपर— क ख ग घ ड. या प फ ब भ म

ऊपर से नीचे— घ ग ख क मा म भ ब फ प

5. एक बच्चा गेंद से उस जमे हुए पिट्टुल को मारेगा, जिससे पिट्टुल बिखर जाएगा। दूसरे बच्चे उसे दाम देने के लिए पीछे खड़ा रहेगा।

6. पिट्टुल बिखर जाने के बाद सभी बच्चे उसे पुनः क्रमशः जमाने के लिए प्रयास करेंगे।

7. दाम देने वाला बच्चा पिट्टुल जमाने वाले बच्चों को छूने का प्रयास करेगा।

8. यदि पिट्टूल जमाने के पहले दाम देने वाला बच्चा अन्य खेलने वाले बच्चे को छू लेता है तो दाम देने की बारी उस बच्चे की होगी। तथा गेंद से मारने की बारी पहले दाम देने वाले बच्चे की होगी।

9. यदि दाम देने वाला बच्चा किसी को नहीं छू पाया और सभी बच्चों ने मिलकर पिट्टुल को क्रम से जमा लिया (क्रम का तात्पर्य– क ख ग घ ड.) तो वही बच्चा पुनः दाम देगा।

10. पिट्टुल जमा लेने पर जमाने वाला बच्चा पिट्टूल कहकर चिल्लाएगा। जिसका मतलब होगा कि पिट्टुल क्रम से जमाया जा चुका है।

11. इस खेल को कम से कम चार और अधिक से अधिक सात बच्चे खेल सकते हैं।

12. शिक्षक ध्यान रखें कि सभी वर्ण वर्ग समूह के पिट्टुल बच्चों को खेलने के लिए दिए जाएँ।

शब्द पहेली

गतिविधि (72):– शब्द स्तर

निर्देशः– 1. शिक्षक श्यामपट्ट पर चाक से वर्गाकार खंड बना लें जैसे–

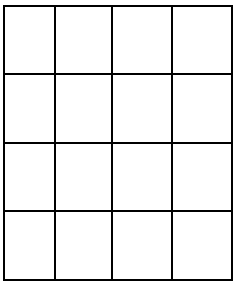

2. शिक्षक वर्णों की पर्ची बनाकर श्यामपट्ट के नीचे डिब्बे में रख दें।

क्रियाविधिः—शिक्षक बच्चों को निर्देशित करें कि बच्चे आएँ और एक—एक पर्ची उठायें।

उसे पढ़कर श्यामपट्ट पर लिखें।

अब दूसरा वर्ण बच्चा स्वयं से ढूँढकर बोले और पहले लिखे शब्द के बाजू वाले खाने में लिखे। दोनों वर्ण मिलाकर सार्थक शब्द बनने चाहिए।

इस गतिविधि को सभी बच्चों से क्रमशः कराएँ।

पट्टी खोलो और बोलो

गतिविधि (73):—वर्ण पहचान की गतिविधि—

निर्देशः— 1. शिक्षक श्यामपट्ट पर सिखाये जाने वाले वर्णों को लिख दें।

2. बच्चे की आँखों पर पट्टी बाँध दें।

3. श्यामपट्ट से कुछ दूरी पर बच्चे को खड़े कर दें और डंडा पकड़ा दें।

4. पट्टी बँधा हुआ बच्चा श्यामपट्ट की ओर बढ़े और श्यामपट्ट पर डंडा रखे।

5. अब बच्चा आँखों की पट्टी खोलकर डंडा रखे वर्ण को पढ़ेगा।

गतिविधि (74):—मात्रा पहचान की गतिविधि—

निर्देशः— 1. शिक्षक मात्रा पहचान के लिए ऐसी ही गतिविधि करवाएँ।

गतिविधि (75):—शब्द पहचान की गतिविधि—

निर्देशः— 1. शिक्षक शब्द पहचान के लिए ऐसी ही गतिविधि करवाएँ।

गतिविधि (76):—वाक्य पहचान की गतिविधि—

निर्देशः— 1. शिक्षक वाक्य पहचान के लिए ऐसी ही गतिविधि करवाएँ।

कार्ड का खेल

गतिविधि (77):–**वर्ण के लिए**

शिक्षक वर्ण कार्ड का निर्माण करें, सभी वर्णों के कम से कम दो कार्ड बनाएँ।

क्रियाविधि :–

1. पाँच बच्चों को गोल घेरे में बैठा दें।
2. पाँचों बच्चों को अलग–अलग वर्ण कार्ड दे दें।
3. अब पहला बच्चा एक वर्ण कार्ड को पढ़ कर सबके बीच में फेंके, जैसे– पहले बच्चे ने 'म' कार्ड को फेंका अब दूसरा बच्चा अपने कार्ड को देखें यदि उसके पास 'म' कार्ड है तो उसे फेंक कर वह उन जोड़ी वाले कार्ड को अपने पास रख ले और जोर से उस शब्द को पढ़े। यह उसका 1 पाइंट हुआ।
4. यदि दूसरे बच्चे के पास 'म' कार्ड नहीं है तो वह कोई दूसरा कार्ड मान लीजिए 'त' कार्ड फेंक दे।
5. अब तीसरा बच्चा देखे 'त' कार्ड है तो उसे फेंककर अपना पाइंट बनाए और कोई अन्य कार्ड फेंके।
6. इस तरह सभी बच्चे अपने–अपने कार्डों को बारी–बारी फेकेंगे और जोड़ी मिलने पर पढ़ेंगे और अपना पाइंट बनाएंगे।
7. जिस बच्चे के पास ज्यादा पाइंट होगा वह विजयी होगा।

गतिविधि (78):– **शब्द स्तर पर**

1. इस तरह शिक्षक जिन शब्दों को सिखाना चाहता है उन शब्दों के दो–दो कार्ड बना कर बच्चों को दें।
2. खेल की प्रक्रिया पूर्ववत् होगी।
3. अधिक अंक पाने वाला बच्चा जीतेगा।